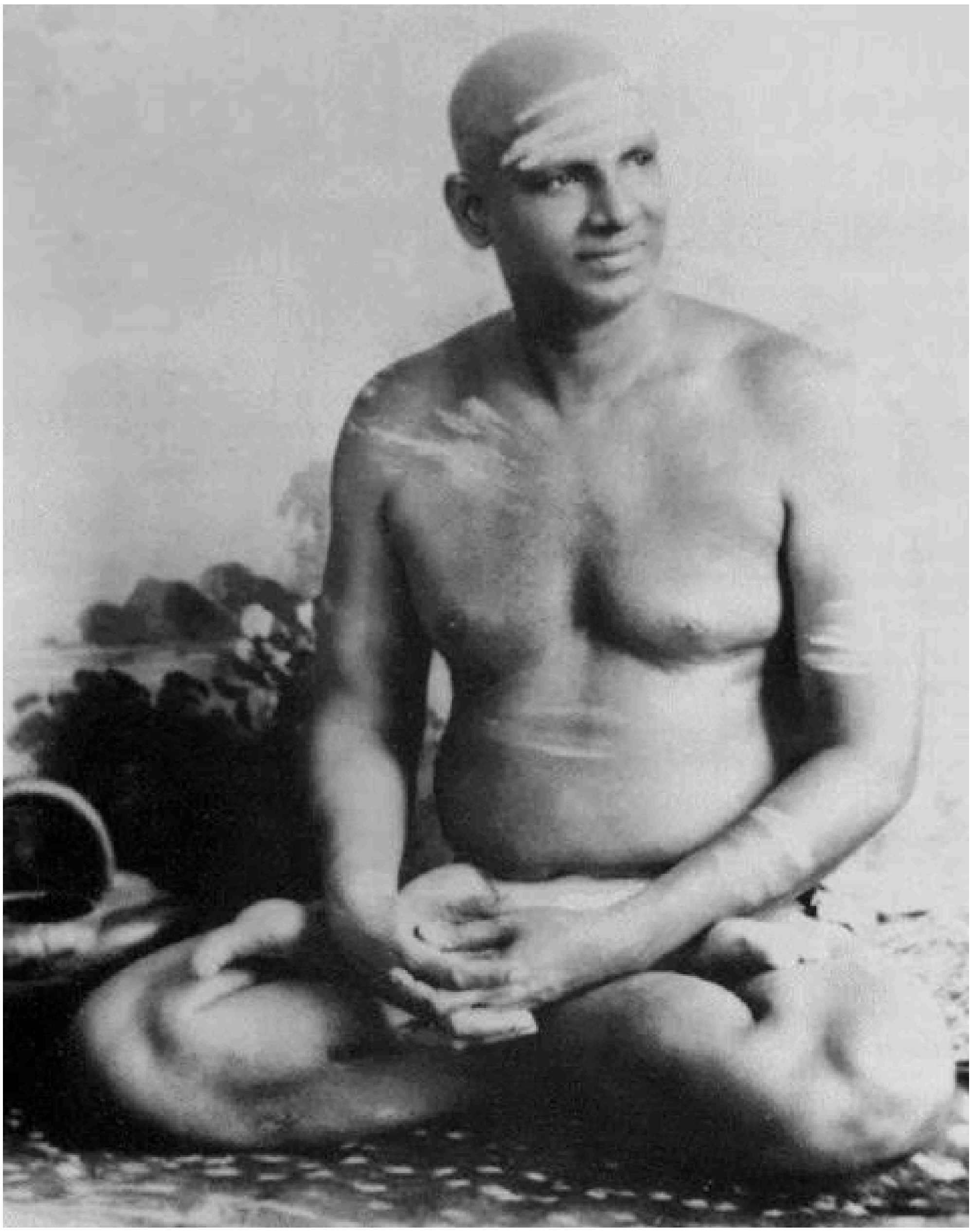
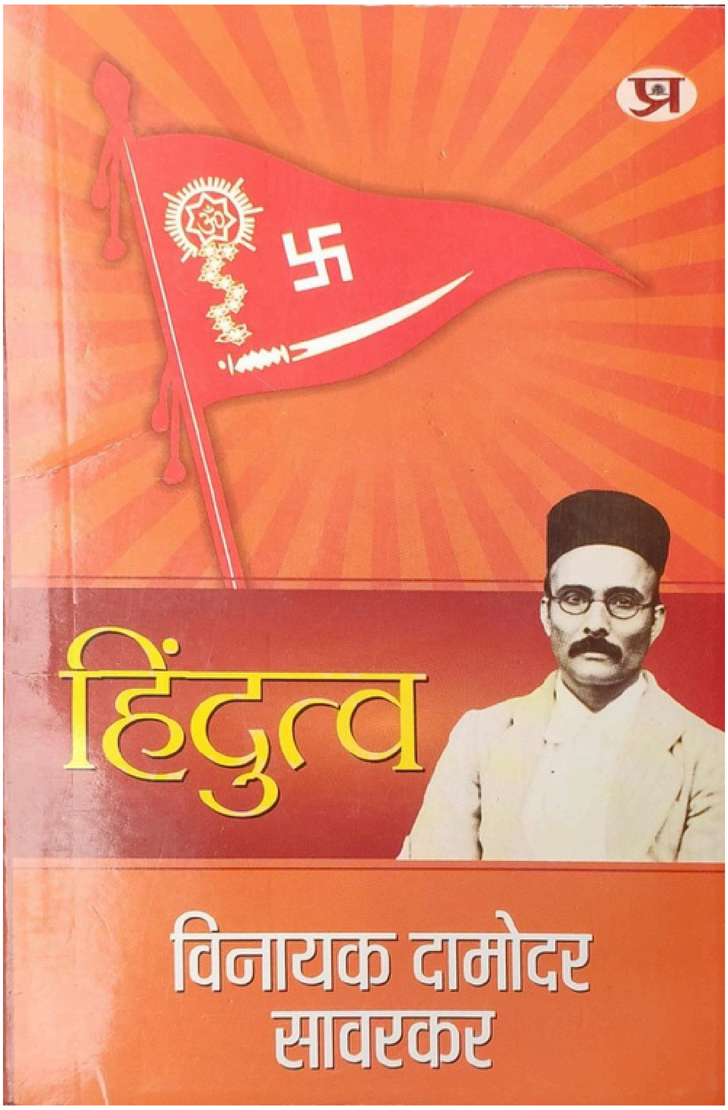



हिंदुत्व
विनायक दामोदर
सावरकर

ह दिंतुव

ववनायक दामोदर सावरकर

प्रभात

प्रकाशन

प्रकाशक

प्रभात प्रकाशन प्रा . लि.

4/19 आसफ अिौ रोड, नई हदल्ाी -110002

फोन : 011-23289777 ेल्पिाइन निं.:7827007777

इ-मेि : prabhatbooks@gmail.com वेब हिकाना :www.prabhatbooks.com

सस्किरण

2023

पेपरबैक मूल्य

तीन सौ रुपए

मुद्रक

नरुिा वप्रटिंस,स हदल्ाी

HINDUTVA

by Swatantrayaveer VinayakDamodar Savarkar

Published by PRABHAT PRAKASHAN PVT. LTD.
4/19 Asaf Ali Road, NewDelhi-110002
ISBN 978-93-89982-11-4
रु.300.00 (PB)

अनुक्रम

1.ह दिंतुव के प्रमुखुतम अलभिक्षण

नाम का क्या म त्त्व ै?

'जी ाँ, म ह दिंू ू ैं, ह दिंू ूक िानेमें में सदैव गव सका अनुभव ोता ै', य बात म सा स के साथ क ते े ैं और आशा करते े ैंकक मारे इस स्वालभमान दशकस आग्र पूण सवक्तव्य के लिए वेरोना की व वििण्यवती' में उदारतापूवकस क्षमा कर देगी। इस सुदिंरी ने 'नाम का क्या म त्त्व ै ? पाँव, मुख आहद के समान नाम मानव शरीर का कोई अगिं न िीं ै,' ऐसा क ते े ुए व्याकिु ोकर अपनेवप्रयतम से प्राथनसा की थी कक उसका नाम बदि हदया जाए। यहद म इस वप्रय मिवासी लभक्षुश्रेष्ट्ि के स्थान पर ोते ेतो म भी य ी क ते ेकक नाम का क्या म त्त्व ै। यहद गिुाब को ककसी अन्य नाम से सबिोचधत ककया जाएगा, तब भी उसकी सुगधिं पूववसत् ्बनी र ेगी। इस बात को आग्र पूवकस प्रस्तुत करनेविो रमणीय तकसशास्ि के सम्मुख नतमस्तक ोकर इस कथन को स्वीकार करने का परामश सभी म उसके वप्रयतम को देते,े क्योंकक नाम की तुिना में वस्तु का म त्त्व अचधक ोता ै। एक ी वस्तु को ववलभन्न प्रकार के अनेक नामों से सबिोचधत ककया जाता ै। शब्दों की ध्वनन में तथा उससेप्रतीत ोनेविोअथ समें एक स्वाभाववक तथा अपरर ाय सप्रकार का सबिंधिं र ता ै-ऐसा क ना स्वय िंअपना ी औचित्य खो देता ै। ककर भी उस वस्तु में तथा उसे ेहदए ुए नाम में ववद्यमान परस्पर सबिंधिं समय के साथ दृढ़ ोकर अतिंतः चिरस्थायी बन जाते े ैं तथा वस्तु का बोध करानेविाा य एक माध्यम बन जाता ै। नाम तथा वस्तु प्रायः एकरूप ो जाते े ैं। इस वस्तु के ववषय में उत्पन्न ोनेविोउपववचार तथा भावनाएँ ाँउस वस्तु का और उसके नाम का म त्त्व एक समान ो जाता ै। 'नाम का क्या म त्त्व ै' ऐसा प्रश्न व्याकिु ोकर पूछनेविाी कोमिागिंी प्रेवषता को' अपनेपूजनीय प्राणेश्वर 'रोलमयो को पेररस" नाम से सबिोचधत करना उचित

मिािींप्रतीत ोता, अथवा अपनी वप्रयतमा ज्युलिएट को अन्य ककसी नाम से सबिोचधत करना स्वीकाय सन िीं फिों से िदे वृकूष की शाखाओ िंको अपनेप्रकाश से रजतस्नान करानेविो िद्रिं' को साक्षी रखकर ज्युलिएट का वप्रयकर भी क्या शपथपूवकस क सकता कक ज्युलिएट की तर रोजलिन नाम भी उतना ी मधुर और भावपूण स गिता ै।

नाम की अद्भुत मह मा

कुछ िब्द ऐसेभी ैं, जो अत्यतिं गूढ़ कल्पना या ध्येय-सृष्ट्टि अथवा वविाल तथा अमूत त शसद् ातिं के स्पि तसे म त्त्वपूर् तबन जाते े ैं। उनका स्वततिंत्र अष्स्तत्व ोता ै और वे ककसी जीव-जतिुं के सम ान जीते े ैं। समय के साथ पुटि ोते े ैं।

कुछ शब्द ऐसेभी ैं, जो अत्यतिं गूढ़ कल्पना या ध्येय-सृकूष्ट अथवा ववशाि तथा अमूत सलसद्धातिं के स्पश से ेम त्त्वपूण सबन जाते।ैं उनका स्वतिंत्र अक्स्तत्व ोता ै और वे ककसी जीव-जतिुं के समान जीते े ैं। समय

के साथ वे पुष्ट ोते े ैं। वे पुष्ट ोते े ैं। ाथ-पाँव अथवा मनुष्य के अन्य अगिंों से ये नाम लभन्न ोते े ैं, क्योंकक वे मनुष्य की आत्मा ी बनकर र े ोते े ैं तथा मानवी पीहढ़यों से भी वे अचधक चिरिंतन बन जाते े ैं। जीजस का ननधन ो गया, परिंतु रोमन साम्राज्य की अपेक्षा अथवा ककसी भी अन्य सम्राट् की तुिना में व अचधक चिरिंतन ो गया। 'मैडोना' के ककसी चिि के नीि 'फानतमा' लिख हदया जाए तो स्पैननश व्यक्क्त इसे ेककसी अन्य किापूण स चिि की तर कौतू ि से देखता र ेगा, परिंतु चिि के नीि 'मैडोना " लिखा ोगा तो एक िमत्कार घट जाएगा। तनकर खडा व व्यक्क्त अपने घुटनों के बि झुक जाएगा। उसकी आँखों में किा ववषयक क्जज्ञासा के स्थान पर एक साक्षात्कारी भक्क्तभाव झिकनिेगेगा। उसकी दृक्ष्ट अतिंमुखसी बन जाएगी। मेरी का पववि मातृप्रेम तथा वात्सल्य मूनतमसतिं साकार करनेविी इस चिि के दशनस से उसकी सपिूंण सदे पुिककत ो उिेगी। 'नाम का क्या म त्त्व ै' ऐसा क ने में यहद कुछ तथ्य ै तो अयोध्या को ोर्निािु अथवा व ाँके अमरिरि रघुकुि नतिक को 'दगडू' या ऐसा ी कोई अन्य नाम देनेपर कोई अतिंर न ीिंआएगा। ककसी अमेररकी को उसके वॉलशगिंटन को गिंगेज खान क ने में या ककसी मुसिमान को स्वय ि को ज्यूक िानेमें जो कष्ट ोता ै, उसे ेदेखकर आप समझ जाएँगे कक 'खुि जा लसमलसम* मिंि का उच्िारण करने सेइस प्रकार के प्रश्नों का समाधान न ीिं ो सकता।

ह दिंतुव कोई सामान्य शब्द न ीिं ै

ह दिंतुव एक ऐसा िब्द ै, जो सपिूंर् तमानवजातत के शलए आज भी असामान्य स्फूतत ततथा चैतन्य का स्रोत बना ुआ ै। इसी ह दिंतुव के असहिंदग् स्वरूप तथा अिय का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास आज म करने जा र े ैं। इस िब्द सेसबिंद् ववचार, म ान् ्ध्येय, रीतत-ररवाज तथा भावनाएँ ँककतनी वववव् तथा श्रेेटठ ैं, ककतनी प्रभावी तथा सूक्ष्मतम ैं।

ह दिंतुव एक ऐसा शब्द ै, जो सपिूंण समानवजानत के लिए आज भी असामान्य स्फूनत सतथा ितन्य का स्रोत बना ुआ ै। इसी ह दिंतुव के असहिंदनध स्वरूप तथा आशय का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास आज म करने जा र े ैं। इस शब्द से सबिंद्ध वविार, म ान् ्ध्येय, रीनत- ररवाज तथा भावनाएँ ँककतनी वववववध तथा श्रेष्ि ैं, ककतनी प्रभावी तथा सूक्ष्मतम ैं। क्जतनी ानिंतकारी ैं, उतनी ी भ्ानिंतकारक भी ैं; परिंतु सुस्पष्ट ै, इस कारण 'ह दिंतुव' शब्द का ववश्िेषण कर उसका स्पष्ट अथ सज्ञात करना अत्यचधक कहिन बन जाता ै। आज ह दिंतुव की जो क्स्थनत सामने हदखाई दे र ी ै, य क्स्थनत उत्पन्न ोनेमें कम-से-कम िािीस शतकों से स्मृनतकार, वीरपुरुष और इनत ासकारों ने इस शब्द की परिंपरा को अखडिंडत रखने ेके लिए ककए ुए त्याग और बलिदान का योगदान ै। उन् ोंनेइसके लिए अपना जीवन व्यतीत ककया, प्रखर चितिंन ककया, युद्ध ककए तथा अपनेप्राणों की बाजी भी िगा दी। य सब इसलिए करना पडा कक म िोग कभी आपस में िडते ुए, कभी परस्पर स काय स करते े ुए और कभी एक-दूसूरे में पूणतसः वविीन ोकर एकरूप ो गए थे। य शब्द इस प्रकार लिये गए अनचगनत व्यावसानयक कायों की ननष्पवत्त ै। 'ह दिंतुव' कोई सामान्य शब्द न ीिं ै। य एक परिंपरा ै। एक

इनत ास ै। य इनत ास केवि धालमकस अथवा आध्याक्त्मक इनत ास न िीं ै। अनेक बार 'ह दिंतुव' शब्द को उसी के समान ककसी अन्य शब्द के समतुल्य मानकर बडी भिू की जाती ै। वैसा य इनत ास न िीं ै। व एक सवसग्रिं ी इनत ास ै।

'ह दिंतुव' तथा 'ह दिंू धम'स शब्दों का भेद

'ह दिंतुव' से ी उपजा उसी का एक रूप ै, उसी का एक अिंि ै; इसशलए यहद 'ह दिंतुव' िब्द की स्पटि कल्पना करना म लोगों के शलए सभिंव न िीं ोता तो 'ह दिंू म'्त िब्द भी म लोगों के शलए दुबो्र तथा अतनष्चचत बन जाएगा।

'ह दिंू धम'स य शब्द 'ह दिंतुव' से ी उपजा उसी का एक रूप ै, उसी का एक अिंश ै; इसलिए यहद 'ह दिंतुव' शब्द की स्पष्ट कल्पना करना म िोगों के लिए सभिंव न िीं ोता तो 'ह दिंू धम'स शब्द भी म िोगों के लिए दुबोध तथा अननक्श्ति बन जाएगा। इन दो शब्दों में ववद्यमान अन्योन्य पृथुक्ता िीक से समझ न िींपाने के कारण ी कुछ स ोदर जानतयों में, क्जन् ें ह दिंू सस्क्रिनत के अमूल्य उत्तराचधकार प्राप्त ुए ैं, अनेक लमथ्या धारणाएँ ँ उत्पन्न ुई ैं। इन शब्दों के अथ समें मूितः क्या अतिंर ै य बात आगे ेस्पष्ट ोती जाएगी। य ाँइतना बताना ी पयाप्सत ोगा कक 'ह दिंू धम'स से सामान्यतः जो बोध ोता ै, व 'ह दिंतुव' के अथ ससे लभन्न ै। ककसी आध्याक्त्मक अथवा भक्त सप्रिंदाय के मतों के अनुसार ननलमतस अथवा सीलमत आिार-वविार ववषयक नीनत-ननयमों के शास्िको ी 'ह दिंू धम'स क ा जाता ै। 'धम'स शब्द का अथ सभी य ी ै। ह दिंतुव के मिू तत्त्वों की िि ा स करते ेसमय ककसी एक धालमकस या ईश्वर-प्राक्प्त से जुडी वविारप्रणािी या पथिं का ी केवि वविार न िींककया जाता। भाषा की कहिनाई न ोती तो ह दिंतुव के अथ ससे ननकट आनेवािा 'ह दिंपुन' शब्द का मने'ह दिंधूम'स शब्द के बदिे ेप्रयोग ककया ोता। 'ह दिंतुव' शब्द में एक राष्ट्र तथा ह दिंजूानत के अक्स्तत्व का तथा परिाम के सक्म्मलित ोनेका बोध ोता ै। इसीलिए 'ह दिंतुव' शब्द का ननक्श्ति आशय ज्ञात करने के लिए प ि े म िोगों को य समझना आवश्यक ै कक 'ह दिं'ू ककसेक ते ैं। इस शब्द ने िाखों िोगों के मानस को ककस प्रकार प्रभाववत ककया ै तथा समाज के उत्तमोत्तम पुरुषों ने, शूर तथा सा सी वीरों ने इसी नाम के लिए अपनी भक्तपूण सननष्ट्िा क्यों अवपतस की, इसका र स्य ज्ञात करना भी आवश्यक ै। य ाँय बता देना भी आवश्यक ै कक जो शब्द ककसी एक पथिं की ओर ननदेश करता ै तथा ह दिंतुव की तुिना में अचधक सकिंुचित तथा असतिोषप्रद ै, उसकी िि ास न िींकरनेवािे ैं। इस प्रयास में म ककतने यशस्वी ो सकेंगे ेतथा मारा दृक्ष्टकोण ककतना योनय ै-इसका ननणयस आगामी वववेिन समझनेके पश्िात् ् ी ककया जा सकेगा।

2. सप्तलसधिुं से प्रथमतः उदय ोनेविाा आय सराष्ट्र

स सी आयों के दि ने लसधिुंतट पर आकर व ाँ र ना कब प्रारिंभ ककया तथा अपनेयज्ञ की अक्नन सबसे प िे ेकब प्रज्वलित की- य बताना आज की प्राच्य अनुसधिंान की अवस्था में सा सपूण सकाय स ोगा। लमस्र देश के वासी तथा बैत्रबिोनवालसयों द्वारा अपनी भव्य सभ्यता की ननलमनसत ककए जाने से प िे ेभी लसधिुं ुनदी के पावन तीरों पर ननत्य ी यज्ञ के सुगचिंधत धुएँ के आकाशगामी विय उिते े ी र तेथे। आत्मा की अद्वैत अनुभूनत से प्रेररत मिंि-पिन की ध्वनन लसधिुं की घाहटयों में गूजिं उिती। य उचित ी था कक उनके पौरुष तथा ववश्व के गूढ़ अध्यात्म का वविार करनेविाी उनकी प्रगल्भता की ववशेषताओ िंके कारण एक म ान् ्तथा शाश्वत सस्ृकिनत की स्थापना करने का सम्मान उन् ें प्राप्त ुआ। अपनेननकट के जानत-बाधिंवों से, ववशेषतः आयाणसवासी पारलसकों से आय सजब सपिूंणतसः स्वतिंि ो गए, तब सप्तलसधिुं ुके पार अनिंतम सीमा तक उनके उपननवेशों का ववस्तार ो िुका था। ' म िोग एक स्वतिंि राष्ट्र ैं' इस बात का पयाप्सत ज्ञान भी उन् ें ो िुका था। इसके अनतररक्त इस राष्ट्र की सीमाएँ ँभी ननक्श्ित ो िुकी थी।िं शरीर में फै े ुए ज्ञान-ततिंुओ िंके समान उस भूलम पर ववरत रूप सेप्रवाह त ोनेविाी उन तुक्ष्ट-पुक्ष्टदायक सप्त सररताओिंके कारण ी एक नए सगिंहित राष्ट्र का ननमाणस ुआ था। उन नहदयों के प्रनत ववद्यमान कृत्य भक्क्तभाव के कारण ी आयों ने स्वय िंको 'सप्तलसधिुं' ु क िाना पसदिं ककया। ववश्व के 'ऋनवेद' जैसेप्रािीनतम ग्रथिं में वेदकािीन भारत को य ी नाम हदया गया ै। में ज्ञात ै कक आय सप्रमुख रूप से कृवष करते ेथे। अतः इन सप्त नहदयों के प्रनत उनके मन में ककतना अवणनसीय प्रेम तथा भक्क्तभाव ोगा- इसकी कल्पना म िोग कर सकते ैं। इन नहदयों में सवश्रेेसष्ट्ितथा ज्येष्ट्िनदी लसधिुं को वे िोग राष्ट्र तथा सस्ृकिनत का मूनतमतिं प्रतीक मानते ेथे।

इमा आपः शिवतमा इमा राटरस्य भेषजीः ।

इमा राटरस्य वमत् ीररमा राटरभृतोऽमृताः ॥

सप्तलसधिुंके लिए आयों का भक्क्तभाव

भववटय की हदष्वजयों कालावध् में आयों को इन् िंनहदयों जैसी अनेक सुख-समृद्ध्वकत् नहदयों लाभ ुआ ोगा। परिंतु सप्तशसिंओिु ने उनके शलए स्वतत्रिं राटर स्थावपत ककया और ष्जनके नामों प्रभाववत ोकर उनके पूवजतनों ने उनकी राटरीयता तथा सास्ृकिततक एकता की घोषरा की और उन् ें सप्तशस्िु नाम भी हदया, उस सप्तशस्िुके शलए आयों के मन में प्रेम तथा भष्तत ववदयमान थी।

भववष्ट्य की हदक्नवजयों की कािवचध में आयों को इन् िंनहदयों जैसी अनेक सुख-समृद्चधवधकस नहदयों से िभ ुआ ोगा। परिंतु क्जन सप्तलसधिंुओ िने उनके लिए स्वितिं राष्ट्र स्थावपत ककया और क्जनके नामों से प्रभाववत ोकर उनके पूवजसनों ने उनकी राष्ट्रीयता तथा सास्क्रिनतक एकता की घोषणा की और उन् ें 'सप्तलसधिंु' ु नाम भी हदया, उस सप्तलसधिंु ुके लिए आयों के मन में प्रेम तथा भक्क्त ववद्यमान थी। तब से आज तक लसधिंु ु अथात्स ूह दिंू ूककसी भी स्थान पर क्यों न ों, वे िा ते ैं कक उनके पापों का ववनाश ोकर आत्मशुद्चध ो, इसलिए सप्तलसधिंुओ िंका साक्न्नध्य उन् ें प्राप्त ोना र े। इसलिए अत्यचधक भक्क्तभाव से व उन सात नहदयों शतद्रु' ु, रावी", चिनाव", ववतस्ता", गगिंा, यमुना, सरस्वती-का स्मरण करता र ता ै। की से क्जन से '

सस्क्रित के 'लसधिंु' का प्राकृत में 'ह दिं'ू जाता ै जार

केवल आय त ी स्वयिं को 'शस्ि ु क लाते, ऐसा न िंथा; उनके पडोसी राटर (कम-से-कम एक) भी उन् ें इसी नाम से जानते ेथे। य बात शसद् करने के शलए म लोगों के पास पयाप्तत प्रमार् उपलब् ैं। सस्क्रित के 'स' अक्षर का ह दिंू ूतथा अह दिंू ूप्राकृत भाषाओंमें ' ' ऐसा अपभ्रिं ो जाता ै।

केवि आय स ी स्वयिं को 'लसधिंु' क िते, ऐसा न िंथा; उनके पडोसी राष्ट्र (कम-से-कम एक) भी उन् ें इसी नाम से जानते ेथे। य बात लसद्ध करने के लिए म िोगों के पास पयाप्सत प्रमाण उपिब्ध ैं। सस्क्रित के 'स' अक्षर का ह दिंू ूतथा अह दिंू ूप्राकृत भाषाओंमें ' ' ऐसा अपभ्शिं ो जाता ै। सप्त का प्त ो जाना केवि ह दिंू ू प्राकृत भाषा तक ी सीलमत न िं ै। यूरोप की भाषाओंमें इस प्रकार की बात देखी जाती ै। सप्ता को म िोग ' फ्ता' क ते े ैं। यूरोवपय भाषाओंमें 'सप्ता " प्टाकी' बन जाता ै। सस्क्रित का 'केसरी' शब्द ह दिंी में 'के री' में पररवनततस ो जाता ै। 'सरस्वती' का रूप ' र वती' तथा 'असुर' का 'अ ुर' ो जाता ै। इसी प्रकार वेदकािीन सप्तलसधिंु ुके लिए आयाणसवासी प्रािीन पारलसकों ने अपने धम सग्रथिं 'अवेस्ता' में ' प्ताह दिं' ू नाम का उल्िेख ककया ै। इनत ास के प्रारिंलभक कािमें भी म िोग 'लसधिंु' अथवा 'ह दिं' ू राष्ट्र के अिग मानेजाते ेर े ैं। अनेक म्िेच्छि (यावनी) भाषाएँ ँभी सस्क्रित भाषा से ी उत्पन्न ुई ैं। इसे ेस्पष्ट करते े ुए म्िेच्छि पुराणों में इस बात का उल्िेख कुछ इस प्रकार ककया गया ै-

सस्क्रितस्य वारी् तु भारतिं वष तमुह्यताम्। ् अन्ये खडिं ेगता सैव म्लेच्छाह्या नहिंदनोऽभवत् ॥ वपतृपैतर भ्राता च बादरः पततरेवच । सेतत सा यावनी भाषा ह्यचवचचास्यस्तथा पुनः जानुस्थाने जैनु िब्दः सप्तशस्सुितथैव च। प्तह दिंयुावतनी च पुनजेया गुरिंडडका ॥

(-प्रततसग तपव,त अ. ५)

'ह दिं'ू नाम सेी मारे राष्ट्र का नामकरण ुआ था

इस प्रकार आयार्तवासी पारशसक वैहदक आयों को 'ह दिं'ू नाम से ी सबिोध्त करते ेथे। य तनष्चचत जाननेके बाद तथा अन्य राटरों को म ष्जस नाम से जानते ैं व नाम भी, ष्जन् ोंने मारा उस राटर से पररचय कराया ोता ै, उनका ी हदया ोता ै, य जाननेके उपरातिं म स्पटि अनुमान लगा सकते े ैं कक उस समय के ववकशसत राटर भी मारी इस भूशम को पारशसयों की तर ह दिं ूनाम से ी जानते ेथे।

इस प्रकार आयाणसवासी पारलसक वैहदक आयों को 'ह दिं'ू नाम से ी सबिोचधत करते ेथे। य ननक्श्ित जाननेके बाद तथा अन्य राष्ट्रों को म क्जस नाम से जानते ैं व नाम भी, क्जन् ोंने मारा उस राष्ट्र से पररिय कराया ोता ै, उनका ी हदया ोता ै, य जाननेके उपरातिं म स्पष्ट्ट अनुमान िगा सकते े ैं कक उस समय के ववकलसत राष्ट्र भी मारी इस भूलम को पारलसयों की तर ह दिं ूनाम से ी जानते ेथे। य ज्ञात ोनेके पश्िात्ु म इस स्पष्ट्ट ननष्ट्कष सपर प ुँिु सकते ैं कक उस समय के ववकलसत राष्ट्र भी मारी इस भूलम को पारलसयों की तर 'ह दिं'ू नाम से ी जानतेथे। इसके अनतररक्त सप्तलसधिंुके इस प्रदेश में य ाँ-व ाँ फैिी ुई आहदवालसयों की टोलियाँउनकी भाषाओ िंमें भाषा शास्िके इस ननयम के अनुसार आयों को 'ह दिं'ू नाम से ी जानते े ोंगे। जो प्राकृत भाषाएँ ँलसधिंुओ िंकी तथा उनसे ेखून का ररश्ता जोडनेवािी जानतयों की ननत्य व्यव ार में बोिी जानेवािी भाषाएँ ँबन गईं, और जब ह दिी प्राकृत भाषाओिंका जन्म भी वैहदक सस्ंकृत भाषा से ी ुआ था, तब से य ी लसधिं ु अपनेआपको ह दिं ूक िवातेथे। अतः जो प्रमाण उपिब्ध ैं, उनका आधार िेनेपर य बात ननववववसाद रूप से प्रभाववत ो जाती ै कक म िोगों के वपतरों तथा पूवजसों ने म िोगों के इस राष्ट्र और जानत का नामकरण 'सप्तलसधिं'ु अथवा ' प्त ह दिं'ू ऐसा ी ककया था। उस समय के अचधकतर पररचित राष्ट्र म िोगों को लसधिं ु अथवा 'ह दिं'ू नाम सेी जानते ेथे। य ाँककसी सदिं के लिए कोई स्थान न ीं ै।

कदाचित् ्प्राकृत के 'ह दिं'ू क्री बाद में सिंस्कृत भाषा में 'लसधिं' में रूपातिंररत ककया गया ो

अब तक म लोगों ने शलखखत रूप में ववदयमान प्रमार्ों के अनुसार ववचार ककया ै, म ी परिंतु अब तकत तथा अनुमान की सीमा में सचिंार करनेवाले ैं। के अभी तक मनेआयों मूल स्थान के ववषय में ककसी भी उपपवि की पुष्टि आग्र पूवकत न िींकी ै। अध्कतर लोगों ने स्वीकार कर शलया आय तह दिंसुथान बा र से में आए ैं।

अब तक म िोगों ने लिखखत रूप में ववद्यमान प्रमाणों के अनुसार ी वविार ककया ै, परिंतु अब म तकस तथा अनुमान की सीमा में सिंिार करनेवािे ैं। अभी तक मनेआयों के मिू स्थान के ववषय में ककसी भी

उपपवत्त की पुक्ष्ट आग्र पूवकस न िींकी ै। अचधकतर िोगों ने स्वीकार कर लिया आय सह दिंसुथान बा र से में आए ैं। य म िोग भी इसे ेस्वीकार करते े ैं। आयों ने प्रारिंभ में अपनेननवास के लिए क्जस भूलम का ियन ककया था तथा उसे ेजो नाम हदया था, व नाम उन् ोंनेक ाँ ँसे प्राप्त ककया था ? इस बारे में म िोगों को क्जज्ञासा ोना स्वाभाववक ै- क्या ये नाम आयों ने अपनी प्रिलित भाषा से उन् ें रूढ़ ककया था? क्या य करना उनके लिए सभिंव था ? जब म िोग ककसी प्रदेश का दशनस प्रथम बार करते े ैं या प्रथम बार व ााँप ँुँिते ैं, तब व ााँके ननवासी क्जस नाम से उस प्रदेश को सबिंोचधत करते े ैं, उसी नाम को म स्वीकारते ैं; परिंतु अपनी सुववधानुसार उच्ारिण आहद में म िोग कुछ पररवतनस भी करते े ैं। य भी सि ै कक ये नए नाम मारे पूवनसामों की स्पष्ट तथा मधुर स्मृनतयाँ जाग्रत् ्करनेविो ोते े ैं। एक बात ननक्श्ित तथा स्पष्ट हदखाई देती ै कक ज ााँ ँ मनुष्यबस्ती न िीं ै, ज ााँ कृवष के सस्िंकार अभी तक न िीं ुए ैं, उन नए भूखडिं पर जब उपननवेश बनते े ैं, तब उन् ें जो नाम हदए जाते े ैं, वे भी इसी प्रकार के ी ोते े ैं, परिंतु नए भूखडिं के नए नाम व ााँके मिू ननवालसयों के प्रिलित नाम ी थे- य जब लसद्ध ो जाएगा, तभी ऊपर ननहदसष्ट अपनी उचित ोने की बात भी प्रमाखणत ो जाएगी; परिंतु य भी सि ै कक नए भूखडिं को उनके पूव सनामों से ी सबिंोचधत करना सभी को स्वीकाय स ै।

म य तनष्चचत रूप से जानतैं कक इस सप्तशस्िुके प्रदिे में अनेक आहदवासी िोशलयाँ दूरू-दूरू तक फैली ुई थी।िं इन् िीिंोशलयों में से कुछ इन नवागतों सेअत्यध्क शमत्रता का व्यव ार करती,िं इन् ी िंआहदवासी िोशलयों के अनेक लोगों ने इन प्रदिें के नाम प्राकृततक ष्स्थतत तथा आवागमन के माग तआहद के ववषय में आयों को व्यष्ततगत रूप सेजानकारी दी-य भी सववतवहदत ै।

म य ननक्श्ित रूप सेजानते े ैं कक इस सप्तलसधिंुके प्रदेश में आहदवासी टोलियाँतक फिैी ुई थी।िं इन् िींटोलियों में से कुछ नवागतों सेअत्यचधक का व्यव ार करती,िं इन् िींआहदवासी टोलियों के अनेक िोगों ने इन प्रदेशों के नाम प्राकृनतक क्स्थनत तथा आवागमन के माग सआहद के ववषय में आयों को व्यक्क्तगत रूप से जानकारी दी - यीभी सववसवहदत ै। कई िोगों ने आयों की स ायता की। ववद्याधर, दक्ष, राक्षस, गधिंव,स ककन्नर आहद िोग" आयों सेसवदसा शिुतापूण सओिरण करते ेथे, य वास्तववकता न िीं ै, अनेक प्रसगिंों में उनका उर्लेख करते ेसमय उन् ें अत्यतिं अनेक दूरू-दूरू इन लमिता से परोपकारी तथा भिी जानतयाँ क ा गया ै। इससे ऐसा प्रतीत ोता ै कक आहदवालसयों ने इन भूखडिं को जो नाम हदए थे, उन् ें ी सस्िंकृत रूप देकर आयों ने उन् ें प्रिलित ककया ोगा। इस कथन की पुक्ष्ट के लिए अनेक प्रमाण उपिब्ध ैं। परस्पर सक्म्मश्रण के कारण एकरूप ोकर आगे ििकर आयों की जो जानतयाँ ँसविंचधतस ुईं, उनकी भाषाओिंमें इनका उर्लेख ककया गया ै। शवकिंटकख, मिय, लमलिदिं अिसदिं (अिेक्झाडिंया), सिूव (सेल्युकस) इत्याहद नामों का अविोकन कीक्जए।

यहद य सत्य ै तो इस भूशम के आहदवाशसयों ने म ानदी शस्िुको 'ह दिं'ू नाम से सबिंोध्त ककया ोगा, य भी सभिंव ै कक आयों ने अपने ववशिष्ट उच्चारर् के कारर् तथा सस्िंकृत भाषा में ' ' के स्थान पर 'स' अक्षर का

प्रयोग ककया जाता ै- इस तनयम के अनुसार 'ह दिं'ू को 'शस्ि ु में पररवततत ककया ोगा तथा इसी नाम को प्रचशलत ककया ोगा।

यहद य सत्य ै तो इस भूलम के आहदवालसयों ने म ानदी लसधिंुको 'ह दिं'ू नाम से सबिोचधत ककया ोगा, य भी सभिंव ै कक आयों ने अपनेववलशष्ट उच्िारण के कारण तथा सस्कृति भाषा में ' ' के स्थान पर 'स' अक्षर का प्रयोग ककया जाता ै-इस ननयम के अनुसार 'ह दिं'ू को 'लसधिंु' में पररवनततस ककया ोगा तथा इसी नाम को प्रिलित ककया ोगा। इसीलिए इस भूलम के ननवालसयों का तथा ह दिं ूनाम का अक्स्तत्व क्जतना प्रािीन ै, उसकी तुिना में 'लसधिं'ु नाम वैहदक काि से प्रिलन में ोते े ुए भी उसके बाद का ी ै, ऐसा प्रतीत ोता ै। 'लसधिं' इनत ास के प्रारंलभक धूलमि प्रकाश में हदखाई देता ै तो 'ह दिं'ू नाम का काि इतना प्रािीन ै कक व कब ननमाणस ुआ-य ननक्श्ित करने में पुराणों ने भी पराजय स्वीकार कर िी ै।

सिधं नहदयों के पार जाकर उपननवेशों का ववस्तार करनेवािो आय स

लसधिं ुया ह दिंओु िंजैसे ेसा सी िोगों का कायक्षेसि अब पजिंाब अथवा सिधिंद के समान सकंुचित क्षेि में सीलमत ो जाना सभिंव न ी िंथा। सिधिंद के सम्मुख ववद्यमान ववस्तृत तथा उवरसक क्षेि ककसी ववक्षण, पररश्रमी और सामथ्यवसान िोगों को तथा उनकी कतृत्सव-शक्क्त का आह्वान कर र े थे। ह दिंओुंकी अनेक टोलियाँपजिंाब की भूलम को पार कर ऐसेप्रदेश में जा प ँुिंिी, ज ाँ ँमनुष्य का वास्तव्य ब ुत कम था। यज्ञ की देवता अक्नन की मदद से उन् ोंनेनए ववस्तीण सप्रदेश पर अचधकार कर लिया। य ाँके जगंिों की कटाई की गई और कृवष का प्रारंभ भी ककया गया। नगरों की उन्ननत तथा राज्यों का उत्कष स ुआ। मानव- ाथों के स्पश ससे य ववशाि, परिंतु वीरान बनी ुई प्रकृनत का रूप भी पररवनततस ो गया। इस प्रिडं काय सको सफितापूवकस करते े ुए ह दिं ूएक ऐसी केंद्रीय राज्यसस्थाि की स्थापना करने के प्रयास कर र े थे, जो इस क्स्थनत के लिए पूण सरूप से सुगहित न ोते े ुए भी व्यक्क्तयों के स्वभाव धम सके तथा पररवनततस क्स्थनत के अनुरूप एव िंउपयोगी थी। समय बीतता गया और उनके उपननवेशों का भी ववस्तार ोता र ा। ववलभन्न उपननवेश पयाप्सत दूरू ो गए। अन्य तर से ननवास करनेवािो जनसमू ों को वे अपनी सस्कृनित में सक्म्मलित करने िगे। ववववध उपननवेश अपनेहदनों का ववार करते े ुए स्वतिंि राजकीय जीवन का उपभोग करनेिगे। नए सबिंधिं बने, परिंतु पुराने नष्ट न ोकर अचधक दृढ़ तथा स्पष्ट बन गए। प्रािीन नाम तथा परंपराएँभी पीछे छूट गईं। कुछ ने स्वय िंको 'कुरु' तो कुछ ने 'काशी', 'ववदे ', 'मगध' क िाना प्रारंभ ककया, इसलिए लसधिंुओ िंके प्रािीन जानतवािक नामों को झुकाया जाने िगा और अतिंत: वे क्स्थनत के अनुरूप एव िंपूणतस िुप्त ो गए; परिंतु इससे उनके मन में ववद्यमान राष्ट्रीय तथा

[illegible] तथा ुकी थी- य मानना उचित न िीं

ववलभन्न रूप मिा थेराजकीय दृक्ष्ट सेइनमें सवाचसधक म त्त्वपूण सतथा ववकलसत सस्थाि को 'िवती' पद क ा जाता था।

~~नगरों की उन्नतत तथा राज्यों का उत्कष त ुआ। मानव- ाथों के स्पि तसे य ववशाि, परिंतु वीरान बनी ुई प्रकृतत~~ का रूप भी पररवततत ो गया। इस प्रचडिं काय तको सफलतापूवकत करते े ुए ह दिं ूएक ऐसी केंद्रीय राज्यसस्थाि की

स्थापना करने के प्रयास कर र े थे, जो इस ष्स्थतत के शलए पूर् तरूप से सुगहठत न ोते े ुए भी व्यष्ततयों के स्वभाव म् तके तथा पररवततत उपयोगी थी।

व ी वास्तववक रूप से ह दिं ूराष्ट्र का जन्महदन ै

अयोध्या के म ाप्रतापी राजा ने ष्जस हदन अपनेयिस्वी चरर् लकिं पर रख हदए तथा उिर ह दिंसुथान से दक्षक्षर् सागर तक के सपिूंर् तक्षेते्र पर सिा प्रस्थावपत की, उसी हदन शसिंओु ििंने जो स्वदि तथा स्वराज्य-तनशमतत का म ान् ्काय तकरने का प्रर् ककया था व पूरा ो गया।

अयोध्या के म ाप्रतापी राजा ने क्जस हदन अपने यशस्वी िरण िकिं पर रख हदए तथा उत्तर ह दिंसुथान से दक्षक्षण सागर तक के सपिूंण सक्षि पर सत्ता प्रस्थावपत की, उसी हदन लसधिंुओ िंने जो स्वदेश तथा स्वराज्य-ननलमनसत का म ान् ्काय सकरने का प्रण ककया था व पूरा ो गया। य काय ससपिंन्न ोनेके पश्िात् ्भौगोलिक दृक्ष्ट से इस क्षि की अनिंतम सीमा पर भी उनका अचधकार ो गया। क्जस हदन अवश्मेधे का अश्व" क ी िंपर भी प्रनतबचिंधत न ोते े ुए तथा अजेय ोकर वापस िौटा, क्जस हदन िोकालभराम रामिद्रिं के लस िंासन पर ििवती सम्राट् का भव्य श्वेत ध्वज आरोह त ककया गया, क्जस हदन स्वय िंको 'आय'स क िानेवािो नृपों के अनतररक्त नुमान, सुग्रीव, ववभीषण आहद ने भी लस िंासन के प्रनत अपनी राजननष्ठा अवपतस की, व ी हदन वास्तववक रूप से म िोगों के ह दिं ूराष्ट्र का जन्महदवस था। प ि े की सभी पीहढ़यों के प्रयास उसी हदन फिीभूत ुए तथा राजनीनतक दृक्ष्ट सेभी वे यश के लशखर पर ववराक्जत ुए। इसके पश्िात् ्की सभी पीहढ़यों ने क्जस ध्येय प्राक्प्त के लिएववविारपूवकस तथा अनजानेमें भी युद्ध ककए तथा युद्धों में स्वय िंकी बलि िढ़ा दो, उसी एक ध्येय तथा एक ीकाय सका दानयत्व उसी समय ह दिंजूानत को परिंपरा से प्राप्त ुआ।

आयावसत सतथा भारतवष स

प्राचीन आयावतत तकी पररभाषा करते ेसमय ह मालय से ववधय्ािचल तक के प्रदि को 'आयावतत'त नाम से सबिोध्त ककया गया था, 'आयवततःत पुण्यभूशममध्तय ववन्ध्य ह मालयोः '- ष्जस समय य पररभाषा की गई थी, उस अवस्था के शलए य सवस्तवी अनुरूप थी; परिंतु ष्जस म ान् ्जातत ने आयों तथा अनायों की एक सयिंुतत जातत का तनमार्त करते े ुए अपनी सस्कृितत और साम्राज्य ववधय्ािचल के शिखरों से आगे ेसुदूरू तक प ँुँचाया था"

एकात्मता की भावना को यहद कोई ऐसा नाम हदया जा सकता ै, क्जसके उच्िारण से ी उसका सपूिंण स अथ सव्यक्त ो सके तो उस भावना को ी एक प्रकार की शक्क्त प्राप्त ो जाती ै। लसधिुं ुसे सागरतट तक फैी भूलम में जो नई भावना उत्कटता सेप्रदलशतस ो र ी थी, एक अलभनव राष्ट्र की स्थापना का जो सकिंल्प व्यक्त ो र ा था, इसका यथाथ सस्वरूप प्रकट करने ेतु 'आयावसत'स अथवा 'ब्रह्मावत'स शब्द पयाप्सत न ींथे। प्रािीन आयावसत सकी पररभाषा करते ेसमय ह मािय से ववधंिािया तक के प्रदेश को 'आयावसत'स नाम से सबिंोचधत ककया गया था, 'आयवसतःस पुण्यभूलममध्सय ववन्ध्य ह मायोः '- क्जस समय य पररभाषा की गई थी, उस अवस्था के लिए य सवस्सवी अनुरूप थी; परिंतु क्जस म ान् ्जानत ने आयों तथा अनायों की एक सयिुंक्त जानत का ननमाणस करते े ुए अपनी सस्िंकृनत और साम्राज्य ववधंिािया के लशखरों से आगे ेसुदूरू तक प ँिुँिाया था, उस जानत के लिए य पररभाषा अब ककिंचित् ्भी उपयोगी न ींथी। उस जानत के लिए तथा सभी को सक्म्मलित कर सके-ऐसा नाम

व्यक्त करने में य पररभाषा उपयोगी लसद्ध न ीं ो सकी। ह दिंू ूराष्ट्र को व्यक्त करनेवािा तथा उसकी ववराट् कल्पना को स्पष्ट्ट करनेवािा कोई सुयोनय नाम खोजने का काय सभरत द्वारा ह दिंू ूराष्ट्र का आचधपत्य सपूिंण स ववश्व पर स्थावपत ककए जाने के साथ पूरा ुआ। य भरत वैहदक भरत या जैन पुराणों में वखणतस भरत था। इस ववषय में कुछ तकस देना उचित न ींोगा। इतना क ना पयाप्सत ोगा कक आयावसतवसालसयों ने तथा दक्षक्षणपथिी िोगों ने य नाम केवि स्वयिं के लिए न ींस्वीकारा। य म ोगों की मातृभूलम को तथा समान सस्िंकृनत और साम्राज्य को भी हदया। दक्षक्षण हदशा में इस साम्राज्य का अचधकार नए क्षेिों पर भी ो िुका था। ऐसा प्रतीत ोता ै कक इस पराम तथा सामथ्य सका गुरुत्वमध्य भी सप्तलसधिुं ुसे गगिंा-क्षेि में आकर क्स्थर ो गया। उत्तर ह मािय से दक्षक्षण सागर तक का क्षेि समाववष्ट्ट ककया जा सके-ऐसा 'नामभरत' खडिं था। इस राजकीय दृक्ष्ट्ट से सुभव्य नाम प्रिलित ोतेी 'सप्तलसधिुं', 'आयावसत'स अथवा 'दक्षक्षणापथ' आहद नाम िुप्त ो गए। श्रेष्ट्ठ चितिंकों के मन में जब इस ववराट् राष्ट्र की कल्पना साकार ोने िगी थी, तब म ोगों के राष्ट्र की पररभाषा करने का जो प्रयास ककया गया था, व भी इसी बात को प्रमाखणत करती ै। 'ववष्ट्णुपुराण के' एक िघु, परिंतु स्पष्ट्ट अनुष्ट्टुप में जो पररभाषा दी गई ै, उससेअचधक सुदिंर तथा औचित्यपूण सअन्य पररभाषा न ीं ै-

उिरयत्समुद्रस्य ह माद्रेचचैव दक्षक्षर्म् ्।
वषं ंतदभरत िंनाम भारती यत्र सतिंततः ॥

उिर ह मालय सेदक्षक्षर् सागर तक का क्षेत्र समाववटि ककया जा सके- ऐसा 'नामभरत' खडिं था। इस राजकीय दृष्टि से सुभव्य नाम प्रचशलत ोते े ी 'सप्तशसिुं', 'आयावतत'त अथवा 'दक्षक्षर्ापथ' आहद नाम लुप्त ो गए।

सपूिंण सववश्व में 'ह दिंू' ू तथा 'ह दिंुस्थान' नामों कोी स्वीकारा गया

'भारतवष'स नाम मूि नाम 'लसधिुं' का पूरी तर से स्थान न ींिे सका। क्जसकी गोद में खेिकर मारे पूवजसों ने जीवन-अमृत वपया, उस लसधिुंनदी के पववि नाम के प्रनत उनके मन में जो प्रेम था, व कदावप कम न ी िं ुआ। आज भी लसधिुं के तीरों पर क्स्थत प्रातिं को 'लसधिुं' नाम से ी जाना जाता ै।

प्रािीन सस्ंकृत वाङ्मय में 'लसधिुं सौवीर' अपने राष्ट्र के अत्यतिं म त्त्वपूण सऔर अलभन्न घटक ुआ करते ेथे,े ऐसा उर्ल्लखे पाया जाता ै। 'म ाभारत' में लसधिुं ुसौवीर देश के राजा जयद्रथ का म त्त्वपूण सउर्ल्लखे ककया गया ै। ऐसा भी क ा गया ै कक भरत के साथ उसका ननकट का सबिंधिं था। लसधिुं ुराष्ट्र की सीमाएँसमय-समय पर बदिती र ी।िं परिंतु व उस समय एक स्वतिंत्र जानत थी तथा अब भी ै-इसेकोई भी अस्वीकार न ीं कर सकता। मुितान सिैकर समुद्र तट तक लसधिी नामक जो भाषा बोिी जाती ै, व इस राष्ट्र की ओर ननदेश करती ै तथा य भी सूचित करती ै कक य भाषा बोिनेवािे लसधिुं ु ी ैं। राजकीय तथा भौगोलिक दृक्ष्ट से उन् ें ह दिंओु िंके समान राष्ट्र के घटक ोनेका अचधकार प्राप्त ै।

म लोगों के राटर का मूल नाम 'ह दिंसु्थान', 'भरतखडिं' नाम के कारर् कुछ वपछड गया था, परिंतु अन्य राटरों ने इस नए सबीन् के प्रतत वविेष ध्यान न ींहदया तथा सीमा के तनकिवती प्रदिेों के लोगों ने पुराना नाम ी व्यव ार में प्रचशलत रखा। इसी कारर् पारसी, य ूदी (ज्यू), ग्रीक आहद पडोशसयों ने भी म लोगों का पुराना नाम 'शसन्ुिु अथवा 'ह दिं'ू प्रयोग में जारी रखा।

म िोगों के राष्ट्र का मिू नाम 'ह दिंसु्थान', 'भरतखडिं' नाम के कारण कुछ वपछड गया था, परिंतु अन्य राष्ट्रों ने इस नए सबिंोधन के प्रनत ववशेष ध्यान न ींहदया तथा सीमा के ननकटवती प्रदेशों के िोगों ने पुराना नाम ी व्यव ार में प्रिलित रखा। इसी कारण पारसी, य ूदी (ज्यू), ग्रीक आहद पडोलसयों ने भी म िोगों का पुराना नाम 'लसधिुं' अथवा 'ह दिं'ू प्रयोग में जारी रखा। केवि लसधिुंतट के प्रदेशों को ी वे इस नाम से जानते ेथे-ऐसा न ी िं ै। लसधिुंओ िंने पूव समें ववलभन्न घटकों को अपनाकर हदक्ग्वजय करते े ुए क्जस नए राष्ट्र का

सविंधनस

ककया था, उस सपिूंण सराष्ट्र को ी 'लसधिुं' नाम से सबिंोचधत ककया जाता था। पारसी म िोगों को ह दिं ूनाम से सबिंोचधत करते। 'ह दिं'ू शब्द का किोर उच्िारण त्यागकर ग्रीक में 'इंडोज' क ते ेऔर इन् ींग्रीकों का अनुकरण करते े ुए सपिूंण सयूरोप तथा बाद में अमेररका भी म िोगों को 'इंडडयसिं' ी क ने िगे। ह दिंसु्थान में ब ुत हदनों तक भ्मण करनेवािा िीनी यािी ह्वेनसािंग म िोगों को 'लशतिुं' अथवा 'ह दिं'ू ी क ता ै। पाचथयसन िोग" अफगाननस्तान को 'श्वेत भारत' क ते ेथे। इस प्रकार के कुछ अपवादों को छोडकर अचधकतर ववदेशी िोग म िोगों का मिू नाम भिूे न ीं थेअथवा य नया नाम उन् ोंनेस्वीकार न ींककया था। अपनी शेष इच्छाएँ ँपूरी करने ेतु सपिूंण सववश्व म िोगों को 'ह दिं'ू तथा इस धरती को 'ह दिंसु्थान' के नाम से ी सबिंोचधत करता ै।

कौन सा नाम रूढ़ ो जाता ै?

कोई भी नाम इसशलए रूढ़ न ींअथवा सुप्रततक्ष्ठत नाम बन जाता कक म लोग उसे ेपसदिं करते े ैं, बक्ल्क इसशलए कक सामान्यतः अन्य लोग म लोगों के शलए उसका प्रयोग करते े ैं। य ी नाम मान्यता प्राप्त कर लेता ै। वास्तव में इसी कारर् व प्रचलन में अपना अक्स्तत्व बनाए रखता ै।

कोई भी नाम इसलिए रूढ़ अथवा सुप्रनतक्ष्ट्ति नाम न िीबन जाता कक म िोग उसे ेपसदिं करते े ैं, बक्ल्क इसलिए कक सामान्यतः अन्य िोग म िोगों के लिए उसका प्रयोग करते े ैं। य ी नाम मान्यता प्राप्त कर िेता ै। वास्तव में इसी कारण व प्रिन में अपना अक्स्तत्व बनाए रखता ै। ककसी प्रकार का मो क रिंग अथवा रूप न ोते े ुए भी स्वय िंकी प िान ननरपवाद रूप से बनी र ती ै, परिंतु य 'स्व' जब दूसूरे 'परा' के साक्न्नध्य में आता ै अथवा उनमें सघिंष स ोता ै, तब दूसूरे से व्याव ाररक सबिंधिं रखने ेके अथवा दूसूरों ने उससे इस प्रकार के सबिंधिं बनाने की आवश्यकता उत्पन्न ो जाती ै, तब इस 'स्व' के लिए कोई ननक्श्ति नाम ोना आवश्यक ो जाता ै। इस खिै में केवि दो ी व्यक्क्तयों का स भाग ोता ै। यहद ववश्व के िोग लशक्षक के लिए 'अष्ट्ावि "" तथा ककसी ववनोदी व्यक्क्त को 'मुल्िा दो प्याजा "" क ना िा ेंगे, े तब य ी नाम रूढ़ ो जाने की सभिंावना बढ़ जाएगी। दुनुनया क्जस नाम से में सबिोचधत करती ै, व नाम म िोगों की इच्छा के एकदम

विपरीत नाम 37 - 4 नामों से अचधक प्रिलित ो जाएगा; परिंतु यहद दुनुनया के िोगों ने म िोगों को अपनेपूव सवैभव तथा ऋणानुकिंकों का स्मरण करानेवािा नाम खोज लिया तो य नाम अन्य नामों की तुिना में अचधक प्रिलित तथा चिरस्थायी बन जाता ै। वास्तववक रूप से य सि ै। म िोगों के 'ह दिंू' ू नाम की प्रलसद्चध असाधारण रूप hat H इसलिए ुई कक इसी के माध्यम से बा र के िोगों से प्रारिंभ में ननकट का सपिंकस ुआ तथा बाद में किोर सघिंष सभी ुआ। अतः म िोगों के अत्यचधक वप्रय नाम की 'भरतखडिं' का म त्त्व कम ो गया।

3. बौद्ध धम सके अभ्युदय तथा ास के कारण 'ह दिंू' ू नाम को असाधारण म त्त्व प्राप्त ुआ

बौद्ध धम सके उदय से पूव सह दिंओु िंके बा री सबिंधिं दुनुनया से अबाचधत बने ुए थे-

एतददिेप्रसूतस्य सकािादग्रजन्मनः ।
स्व िंस्व िंचररत्र शिक्षरेन् ्पृधृथव्या िंसव तमानवाः ॥

(-मनु)

म िोगों के राष्ट्ालभमानी स्मृनृतकारों को गव सके साथ क ने योनय था क्योंकक म िोगों के यपरिम का क्षिे ब ुत ववस्तृतृ बन िुका था। तब भी प्रस्तुत ववविेन के पररपे्रेक्ष्य में बौद्ध धम सके अभ्युदय के पश्िात् ्ह दिंुसुथान का अतिंरराष्ट्रीय जीवन ककस प्रकार का था इसपर वविार करना आवश्यक ो जाता ै। अब समय इतना बदि गया ै कक म िोगों की इस भूलम के लिए राजकीय आिमण तथा ववस्तार की सभी सभिंावनाएँ ँसमाप्त ो िुकी थी।िं राजकीय हदक्नवजय के लिए कोई अवसर शेष न िीं बिा था। म िोगों की

राष्ट्रीय आकाक्षिंाएँ ेदेश की सीमाएँ घिंती ुई ववश्व के अन्य देशों पर आिमण करती र ी।ि ं पूव सइनत ास में ऐसा कोई अन्य उदा रण न ि ंिदखाई देता। ववदेशों से भी मारे सबिंधिं अभूतपूव सरूप से जहटि ो गए। उसी समय ववदेशी राष्ट्र भी एक नई उदिंडता तथा आिमण के उद्देश्य से म िोगों के द्वार पर दस्तक देनिेगे। इन् ि ं

राजकीय घटनाओ िके साथ बौद्ध भगवान् ्के धमिसि प्रवतनस के म ान् ्अवतार-काय सका प्रारिंभ ुआ। उसी समय ह दिंुसुथान अन्य राष्ट्रों का केवि हृदय ी न ि ंअवपतु आत्मा भी बन गया। लमस्र से िकर मेक्क्सको तक के

िाखों अनचगनत िोगों के लिए लसधिंु की य भूलम उन् ें ईश्वर तथा सतिं की पुण्य पावन भूलम प्रतीत ोनिेगी। दूरू-दूरू के क्षिं सिक्षावचध भाववक यिाी य ाँएकि ोने िगे ेतथा जारों ववद्वान् ्धमोपदेशक साधु–सतिं ववश्व के सभी ज्ञात स्थानों पर जाकर िसिंार करने िगे। ववदेलशयों ने में 'लसधिंु' अथवा 'ह दिंू' नाम से ी सबिोचधत करना जारी रखा। इस प्रकार के आवागमन के कारण म िोगों का पुराना नाम ी राष्ट्रीय नाम के रूप में

सवावसह्न्यदिंू माया सेमविदेशोंसेवकसोंधिु ेराष्ट्रों के साथ मारे सबिंधिं राजकीय अथवा दैत्यकम सववषयक रखते ेसमय प्रारिंभ में भरतखडिं के साथ ह दिंू नाम का प्रयोग करते; े परिंतु कुछ समय पश्िाति् ्भरतखडिं नाम वखणतस कर केवि ह दिंू नाम का ी उपयोग करना आवश्यक प्रतीत ुआ।

सपूिंण सववश्व में ह दिंू नाम का ी प्रसार ोनेके पीछे तथा म िोगों के मन में अपनेह दिंू ोनेकी भावना अचधकाचधक दृढ़ ोनेके पीछे बौद्ध धम सका अभ्युदय ी था-ऐसा क ा जाए तो इस बात पर आश्ियि सन ि ंोता ै तथावप बौद्ध धम सका ह्रास भी इस भावना को अचधक प्रबि बनाने का कारण बन गया था।

सपूिंर् तववचव में ह दिंू नाम का ी प्रसार ोनेके पीछे तथा म लोगों के मन में अपने ह दिंू ोनेकी भावना अध्काध्क दृढ़ ोनेके पीछे बौद् म् तका अभ्युदय ी था - ऐसा क ा जाए तो इस बात पर आचचय तन ि ंोता ै तथावप बौद् म् तका ह्रास भी इस भावना को अध्क प्रबल बनाने का कारर् बन गया था।

बौद्ध धम सका ास राजनीनतक कारणों से ुआ था

बौद् म् तका ह्रास ष्जन घिनाओंके कारर् ुआ, उनमें से सवाध्तक म त्त्वपूर् तघिना पर ववदवानों ने सूक्ष्मता से ववचार न ि ंककया। प्रस्तुत ववषय सेउसका तनकि का सबं्ि न ोनेके कारर् अध्क ग राई से ववचार करना इस समय आवचयक न ि ं ै।

बौद्ध धम सका ह्रास क्जन घटनाओंके कारण ुआ, उनमें से सवाचसधक म त्त्वपूण सघटना पर ववद्वानों ने सूक्ष्मता से ववचार न ि ंककया। प्रस्तुत ववषय से उसका ननकट का सबिंधिं न ोनेके कारण अचधक ग राई से ववचार करना इस समय आवश्यक न ि ं ै। म य ाँइस बात पर सामान्य ववचार प्रदलशतस करेंगे ेतथा इसपर सूक्ष्मता से ववचार करने के पश्िाति् ्मतप्रदशनस का काय स(अचधकारी व्यक्क्त द्वारा न ि ं ककया गया तो) आगामी

ह दिंतुव 20 प्रसगिं के लिए छोड देते े ैं।" बौद्ध का तत्त्वज्ञान लभन्न था, इसी कारण क्या मारे राष्ट्र ने उसका ववरोध ककया ?

न िीं, ऐसा न िींथा- इस भूलम में इस प्रकार के लभन्न-लभन्न पथिं और तत्त्वज्ञान ववद्यमान थेतथा एक साथ ोते े ुए भी उनका ववकास ो र ा था। तो क्या बौद्ध मिों में वृद्धचधगिंत ोनेवािा भ्ष्टािार तथा बौद्ध धम समें उत्पन्न ो र ी लशचथिता के कारण ऐसा ुआ ? ननक्श्ित रूप से न ीं।िं कुछ वव ारों में दूसरों की कमाई को स्वय िं की आजीववका का साधन बनाकर तथा ववकास और उपभोग के लिए अन्य िोगों के धन का उपयोग करनेवािी स्वैरािारी, आिसी तथा नीनतभ्ष्ट स्त्री-पुरुषों की टोलियाँ ँर ती थीिं, परिंतु दूसरी ओर अध्यात्म के परमोच्ि पद पर आसीन अनुभवी िोगों की तथा लभक्षुश्रेष्ठों की परिंपरा खिंडित न िीं ुई थी। य भी एक सत्य ै कक केवि बौद्ध वव ारों में ी इस प्रकार का दुरािार न िींथा। म िोगों के राष्ट्रीय गौरव तथा अक्स्तत्व के लिए बौद्ध धम स का राजकीय प्रसार गिंभीर सिंकट उत्पन्न न िींकरता तो इन दोषों के अनतररक्त अन्य दोष ोते े ुए भी बौद्ध धम स को इतनेकिोर ववरोध का सामना न िींकरना पडता। उनकी सत्ता पूववसत् ्बनी र ती। जब पूव सशाक्य युवराज बौद्ध धम सके मिंहदर की आधारलशिा रख र ा था, तभी उसेउसके छोटे से प्राजक (राज्य) के नष्ट ोनेकी सूिना लमि गयी थी। कोसि के राजा ववद्युत्गभ सने शाक्य प्राजक पर आिमण करके शाक्यों का पराभव ककया। इस बात से शाक्य लस िं" अथात्स ्राजपुत्र लसद्धाथ सगौतम ने जीवन में क्जतने दु:ख का अनुभव" ककया, व आगे े आनेवािी ववपदाओिंकी झिक ी तो थी।

राष्ट्रकाय सके लिए शूर तथा बिशािी व्यक्क्तयों की कमी ो गई

बौद् ने अपनी जातत के चुने ुए व्यष्ततयों को अपने शभक्षुसघिं में सष्म्मशलत कर शलया था। कारर् ितय गर्तत्रिं में प्रथम श्रेर्ी के िूर बलिाली व्यष्ततयों कमी ोनेलगी। अतः अध्क सामर्थयवतान तथा अध्क युद्तनपुर् ित्रुओ िंसामना करते ुए ितय का य बलिाली राटर की उपष्स्थतत में नटि गया।

बौद्ध ने अपनी जानत के िुने ुए व्यक्क्तयों को अपनेलभक्षु सघिं में सक्म्मलित कर लिया था। इस कारण शाक्य गणतिंत्र राष्ट्र में प्रथम श्रेणी के शूर तथा बिशािी व्यक्क्तयों की कमी ोनेिगी। अत: अचधक सामथ्यवसान तथा अचधक युद्धननपुण शत्रुओ िंका सामना करते े ुए शाक्य लस िं का य बिशािी राष्ट्र उसी की उपक्स्थनत में नष्ट ो गया। इस समािार का कोई प्रभाव शाक्य लस िं पर न िीं ुआ, उस बौद्ध कोहट को प्राप्त करनेवािे म ात्मा को न तो कोई दु:ख ुआ, न ककसी सुख का अनुभव। अनेक शतक बीत गए। अब शाक्यों का राजा सभी राजाओिंका राजाचधराज, अखखि ववश्व को पदाक्रािंत करनेवािा केवि 'िोकजीत" बनकर र गया। उस छोटे शाक्य प्राजक की सीमाएँह दिंसुथान की सीमाओिं का स्पश सकरने िगी।िं अनिंतम इस राष्ट्र तथा की का लस िं उसी ो दैवी सत्य तथा परमोच्ि न्याय के अनुसार कवपिवस्तु" के प्राजक पर ननयनत ने क्जस प्रकार मृत्युपाश डािे थे, व ी पाश सिंपूणस भारतवष सको जकडनेिगे। सिंपूणतस: बिशािी तथा युद्ध ननपुण, परिंतु शाक्यों जैसे ेयुद्धननपुण न िीं- लिच्छवव और ूण" िोगों का भारतवष सपर अचधकार ो गया। य समािार सुनने के पश्िात् ्भी बौद्ध पद को प्राप्त व शाक्य लस िं प िे ेजैसा ी अप्रभाववत र ता। उसे ककसी प्रकार का दु:ख न िीं ोता। इन िोगों का दुवांत ह सिंिारि अह सिं तथा ववश्वबिंधुत्व के तत्त्वज्ञान से शातिं न ी िं ोनेवािा था। उनके

खड्गों की धार मृदु ुतिावृकूषों से तथा शानिंत के अनुष्ट्टुपों से ननप्रभ न िींोनेविी थी। उन ओिमणकाररयों ने म गिोंों पर जो दास्य थोपा था, उसका ज र बौद्ध के समान ननववकसार मन से प्राशन करना सभिंव न िींथा। इसका अथ सकदावप य न िीं ै कक लभक्षु सघिं द्वारा ककया गया ववश्वबधुिंत्व का उदात्त काय स मारे लिए म त्त्वपूण सन ी िं था। उनपर इस प्रकार का कोई आरोप िगाने की कल्पना मने भूिवश भी न िींकी थी। इस म ान् ्युनत पर कोई भी इनत ास का अध्येता ध्यान हदए त्रबना न िींर सकता। इसी युनत का ननदेश म करनेविो ैं।

मारे कथन के प्रत्युिर के रूप में क ा जाएगा कक आजतक ष्जतने पराक्रमी तथा म ान् ्(ह दिंू) ू सम्राट् ुए ैं तथा नृपश्रेिेटठ ज्ञात ैं, वे सभी बौद् काल की ी उपज थे। लेकेकन इन सम्रिों को जानता ी कौन था, तो यूरोपीय लोग तथा ममें से कुछ ऐसे ेलोग, ष्जन् ोंने यूरोपीय लोगों के ववचारों के साथ- साथ उनके पूवग्रत -दूवूषत दृष्टिकोर् भी आँखें मूदिंकर अपना शलये ों।

आधुननक लशक्षक्षत िोगों का इनत ास ववषयक बौद्चधक दास्य

ममें राजनीततक कुिलता, चररत्रवानता आहद के कारर् जो व्यष्ततत्व ववकास ुआ था, व मौयों दवारा बौद् म् तको स्वीकार ककए जाने के कारर् से ुआ था अथवा मौयों के साथ व नटि ुआ, ऐसा में न िींलगता। बौद् म् तकुिलता, चररत्रवानता आहद के कारर् जो व्यष्ततत्व ववकास ुआ था, व मौयों दवारा बौद् म् तको स्वीकार ककए जानेके कारर् से ुआ था अथवा मौयों के साथ व नटि सकती ै, ऐसे ववचव में ने भी हदष्ग्वजय प्राप्त ककए ैं, लेककन वे सब दूसूरे क्षेत्र में प्राप्त ककए ैं। ज ाँ ँतलवारों की ्र आसानी से तेज कराई जा सकती ै, ऐसेववचव में न ी।िं

मारे कथन के प्रत्युत्तर के रूप में क ा जाएगा कक आजतक क्जतने परािमी तथा म ान् ्(ह दिंू) ू सम्राट् ुए ैं तथा नृपश्रेष्ट् ज्ञात ैं, वे सभी बौद्ध किा की ी उपज थे। िेककन इन सम्राटों को जानता ी कौन था, तो यूरोपीय िोग तथा ममें से कुछ ऐसेिोग, क्जन् ोंनेयूरोपीय िोगों के वविारों के साथ- साथ उनके पूवग्रस -दूवूषत दृक्ष्टकोण भी आँखें मूदिंकर अपना लिये ों। एक समय ऐसा भी था कक ह दिंसुथान में इनत ास की पाठ्यपुस्तकों की शुरुआत ी मुसिमानी ओिमणों के वणनस से ुआ करती थी, क्योंकक तत्कािीन अग्रेंजी िेखेक मारे प्रािीन इनत ास के बारे में कुछ भी न ी िंजानते ेथे। अभी-अभी यूरोपवालसयों का सामान्य ज्ञान बौद्ध धम सके अभ्युदय के पूवकसिा तक प ँुँिा ै। म िोग भी य ी समझतेर े ैं कक म िोगों के इनत ास का वैभवपूण सकिा य ी था, परिंतु इन दोनों बातों में सत्य का अभाव ै। बौद्ध धम सतथा उनके लभक्षु ुसघिं के प्रनत मारे मन में जो पूज्य प्रेमभाव ै, व अन्य िोगों सेकम न िीं ै। म िोग बौद्ध के म ान् ्परिमों को अपने ी परिम मानते े ैं तथा उनके दानयत्व भी स्वीकार करते े ैं। व देववप्रय अशोक म ान् ्था तथा बौद्ध लभक्षुओिंके हदक्नवजय म ानतर थे। अशोक" के समतुल्य हदक्नवजयी शुद्धिारणी तथा राजनीनतकुशि राजा उसके पूव सभी ो िुके थे। व इसीलिए म ान् ्क िाते कक उनमें ये सभी गुण ववद्यमान थे। ममें राजनीनतक कुशिता, िररवानता

आहद के कारण जो व्यक्क्तत्व ववकास ुआ था, व मौयों द्वारा बौद्ध धम सको स्वीकार ककए जानेके कारण से ुआ था अथवा मौयों के साथ व नष्ट ुआ, ऐसा में न ीं िगता। बौद्ध धम सकुशिता, िररवानता आहद के कारण जो व्यक्क्तत्व ववकास ुआ था, व मौयों द्वारा बौद्ध धम सको स्वीकार ककए जाने के कारण से ुआ था अथवा मौयों के साथ व नष्ट सकती ै, ऐसेववश्व में नेभी हदक्नवजय प्राप्त ककए ैं, िेककन वे सब दूसूरे क्षेि में प्राप्त ककए ैं। ज ाँ ँतिवारों की धार आसानी से तेज कराई जा सकती ै, ऐसेववश्व में न ी।ि ब ते ेपानी का सुदिंर चचि देखने ेभर से प्यास न ीं बुझ सकती। इस वास्तववादी ववश्व में उन् ोंनेहदक्नवजय प्राप्त न ीं ककए। बौद्ध धम सने भी हदक्नवजय प्राप्त ककए। वे इस ववश्व से ब ुत लभन्न ववश्व में ककए गए थे। जब ककसी ज्वािामुखी के िावा प्रवा के समान शक और ूण िोग इस देश में घुस आए तथा य ाँकी उन्नत और ववकलसत सस्कृिनत उन् ोंनेजिाकर सपूिंणतसः ध्वस्त कर दी, तब इसी प्रकार के ववचार म िोगों के देशालभमानी चचतिंकों के मन में उत्पन्न ुए ोंगे।

अक्नन तथा तिवार का तत्त्वज्ञान

ह दिंओु िंको उनकी आँखों के सामने, उन् ोंनेजी-जान से सँभालकर रखेशसद्ातिं और म ान् ्ध्येय, उनके शस िंासन, उनकी राजगदहदयाँ, ँ य ाँतक कक उनके पररवार ी न ींबष्ल्क अपनेपूजनीय देवताओंको भी कुचले जाते े ुए देखना पडा, अपनी वप्रय और पावन भूशम ध्वसिं और वीरान ोते े ुए उन् ें देखनी पडी।

ह दिंओुंको उनकी आँखों के सामने, उन् ोंनेजी-जान से सँभाकर रखेलसद्धातिं और म ान् ्ध्येय, उनके लस िंासन, उनकी राजगद्हदयाँ, ँ य ाँतक कक उनके पररवार ी न ींबक्ल्क अपनेपूजनीय देवताओंको भी ििुे जाते े ुए देखना पडा, अपनी वप्रय और पावन भूलम ध्वसिं और वीरान ोते े ुए उन् ें देखनी पडी। य ककसनेककया था ? य करनेविो ह दिंओुं की तुिना में भाषा, धम,स तत्त्वज्ञान, मानवता तथा देवत्व के सभी दया-मयाहसद गुणों से अत्यतिं क्षुद्र थे, परिंतु उनमें अचधक बि था। ऐसेह सिंक आिमणकाररयों के इस नृशसिं नया उद्दाम पथिं का सार दो ी शब्दों में व्यक्त ककया जा सकता ै, 'अक्नन और तिवार' अथवा 'जिओ और मारो' इस सपूिंण सघटना का ननष्ट्कष सब ुत स्पष्ट था। 'जिओ और मारो' जैसे ेववक्षण तत्त्वज्ञान के लिए इस भयाव द्वैतवाद के लिए बौद्ध की न्याय-मीमासिंा में कोई साथकस उत्तर न ींथा। इसी कारण इस अपववि, ननष्ट्ठुर तथा ववध्वसिंक अक्नन को नष्ट करने ेतु म िोगों के चचतिंकों तथा अग्रखणयों को पववि यज्ञाक्नन प्रज्वलित करनी पडी। समथस शासि्सिध् प्राप्त करने ेतु उन् ें अपनी वेदकािीन खानों में खनन करना पडा। िोचधत म ाकाि के तुष्टीकरण ेतु प्रयोग में आनेवािेशस्िों को भीषण िािी की वेदी पर धार िगाने जाना पडा। इस दृक्ष्ट से उनका अपेक्षक्षत तकस भी गित लसद्ध न ीं ुआ।

ह दिंख़ड़्गकायथोचितप्रत्युत्तर

स्वातत्र्यि, सामर्थय ततथा सुयि प्राप्त ोने का ववचवास ोते े ी नया तत्त्वज्ञान, कला शिल्पकला, कृवष तथा वाखर्ज्य ववचार, आचार को अप्रत्याशित रूप से प्रोत्सा न प्राप्त ोना आरिंभ ो गया; परिंतु य प्रततकक्रया चरम सीमा तक प ँुँच जानेसे कुछ दोष भी हदखाई देनेलगे, 'वैहदक कम तका पुनरत्थान करो', वेदों पर पुनचच ध्यान दो - ये राटरीय घोषवातय बन गए।

इस बार पुनः प्रकट ुई ह दिं ूतिवार की ववजय ननस्सदिं थी। वविमाहदत्य ने इस अन्य देशीय आिमणकाररयों को ह दिंसुथान की भूलम सेखदेड हदया तथा िलिताहदत्य, " क्जसने मगीोलिया व तातारस की गुफाओ िमें शिुओ िको पकडकर सजा दी, वे दोनों परस्पर पूरक थे। जो काय सकेवि शाक्ब्दक प्रमेयों से लसद्ध न ी ि ो सका, व इन िोगों ने परािम तथा पौरुष से कर हदखाया। एक बार राष्ट्र पुनः पूव सके यश-लशखर पर जा प ँुँिा। जीवन के र क्षेि में उसका प्रकाश फै गया। स्वातत्र्यि, सामथ्य सतथा सुयश प्राप्त ोनेका ववश्वास ोते े ी नया तत्त्वज्ञान, कि लशल्पकि, कृवष तथा वाखणज्य वविार, आिार को अप्रत्यालशत रूप से प्रोत्सा न प्राप्त ोना आरिंभ ो गया; परिंतु य प्रनतकिया िरम सीमा तक प ँुँि जानेसे कुछ दोष भी हदखाई देनेिगे, 'वैहदक कम सका पुनरुत्थान करो', वेदेीं पर पुनश्ध्यिान दो-ये राष्ट्रीय घोषवाक्य बन गए। उस समय की राजकीय क्स्थनत में ऐसा ोना अत्यतिं आवश्यक था।

सत्यधम से ववश्व पर ववजय पानेका बौद्धधम सका ववफि प्रयोग

स्त्रि दवारा ववजय प्राप्त करनेके बजाय ितिंतपूर् तमाग तसे तथा सत्य के आचरर् दवारा इस ववचव को जीतनेमें ी ह दिंसुथान ने अपना ववचवास कायम रखा और प्रयास भी ककया। लेककन इसी उदारता के कारर् ह दिंसुथान लालची लोगों के उप ास का ववषय बन गया। सूक्ष्म जीव- जतिुंओ िकी जान बचाने के शलए ाथी-घोडों को वपलाया जानेवाला पानी भी छानकर हदए जानेकी आज्ञा ह दिंसुथान के राजाओंने उस समय दी थी ।

ववश्वधम सका सदिंश अखखि ववश्व में प्रसृत करनेका प्रथम वविशि प्रयास बौद्धकम सद्वारा ककया गया, ' े लभक्षुओ ! जाओ, ववश्व की दसों हदशाओंमें िसिंर करो। ववश्व धम सका सदिंश अखखि ववश्व को दो!' वास्तव में य एक व्यापक स्वरूप का ववश्वकम स ी था। ये पयटसन देश पर शासन करने अथवा धनिाभ की अलभिाषा से न िींककए जाते। उस धम सद्वारा ककया गया काय सवास्तव में ककतना ी म ान् ्क्यों न ो; व मनुष्य्य के अतिंःकरण से पशुवत् ्मानलसकता, राजनीनतक इच्छा, आकाक्षिंएँ ँया व्यक्क्तगत स्वाथ सके बीज उखाडकर नष्ट कर न ी िसका, क्जससे ेकक ह दिंसुथान तिवार को त्यागकर, ननक्श्तिं ोकर ाथ में मािा लिये जाप करता कफर भी शस्द्विारा ववजय प्राप्त करने के बजाय शानिंतपूण समाग ससे तथा सत्य के आिरण द्वारा इस ववश्व को जीतनेमें ी ह दिंसुथान ने अपना ववश्वास कायम रखा और प्रयास भी ककया। िेककन इसी उदारता के कारण

ह दिंसुथान ीिि ोगों के उप ास का ववषय बन गया। सूक्ष्म जीव-जतिुंओ िकी जान बिानेके लिए ाथी-घोडों को वपिाया जानेवािा पानी भी छानकर हदए जानेकी आज्ञा ह दिंसुथान के राजाओंने उस समय दी थी। समुद्र की मछलियों को खखिाने ेतु समुद्र में अन्न डािा जाता था। िेककन क्या ववश्व के अन्य िोगों ने मछलियों को िाव से खाना छोड हदया या बडी मछलियों ने छोटी मछलियों को खाना बिंद कर हदया? ह सिंा को पूण सरूप से नष्ट करने के प्रयास में ह दिंसुथान ने अपना ी लसर ओखिी में देकर अपनेकी ाथों से मुसिी ीिाई। अतिंतः तिवार की पात के सामनेघास की पात की कुछ न ीिीिेती, य बात ह दिंसुथान ने अनुभव से सीखी। जब तक सपिूंण सववश्व के दाँत तथा नाखून रक्तरिंक्जत ै और जब तक राष्ट्रीय तथा वालिंशक भेद मानव को पशुता तक प ँुिाने के लिए पयाप्सत रूप से प्रबि ै तब तक अपनी आत्मा के प्रकाश के अनुसार ककसी भी प्रकार के आध्याक्त्मक अथवा राजकीय जीवन में उन्ननत करनी ै तो राष्ट्रीय तथा जातीय बधिंनों से उत्पन्न शक्क्त की अव ेना करना ह दिंसुथान के लिए उचित न िीं ोगा। इसीलिए ववश्वबधिुंत्व आहद शब्दों का केवि वाणी में ी प्रयोग ककए जानेके कारण तथा कृनत वव ीनता के कारण ववद्वानों के मन में घृणा उत्पन्न ुई। ब ुत खेदपूवकस उन् ोंनेक ा-

ये त्वया देव तनह ता असुराचचैवै ववटरुना।
ते जाता म्लेच्छरूपेरे् पुनरदय म ीतले ॥
व्यापादयष्न्त ते ववप्रान् ्घ्रष्न्त यज्ञाहदकाः कक्रयाः ।
रष्न्त मुतन कन्याचच पापाः ककिं ककिं न कुवष्तन्त ॥
म्लेच्छाक्रातिें ेच भूलोके तनवषतट्कारमगिंले।
यज्ञयागाहद ववच्छेदादेवलोकेऽवसीदतत ॥

(-गुराढ्य)

क्जस ननतातिं रम्य भूलम ने श्रद्धायुक्त अतिंःकरण से लभक्षुवसर्ि को अगिंीकृत ककया था, खड्ग को त्यागकर ाथों में सुमररनी िेकर भगवान् ्का नाम जपते ुए अह सिंा की प्रनतज्ञा की थी, उस भूलम को जिाकर क्जन् ोंनेवीरान बना हदया, उन शक, ूणों की ह सिं टोलियों को लसधिुं के पार खदेड हदया गया तथा एक नई सुदृढ़ राजसत्ता स्थावपत की गई। उस समय के राष्ट्रीय नेताओं को इस बात का अनुभव ुआ ोगा कक यहद धम सने भी इस काय सको स ायता दी तो ककतना प्रिडिं शक्क्तसामथ्य सननमाण ककया जा सकता ै।

बौद्धोंके ववश्वधमस कोह दिं ओु िके राष्ट्रधमस काप्रत्युत्तर

ष्जन लोगों ने ह दिंसुथान को एक राटर के रूप में गला घोंकिर खत्म ककया था, उन ित्रुओंके साथ ी पूजा-प्राथनता तथा मठ आहद के माध्यम से, ह दिंसुथान ने अपने स म्ी ब्ि ुक कर नाता जोडनेका काम प ले ेभी ककया था। लेककन ऐसेववचवम् तका तया उपयोग, ष्जसने ह दिंसुथान को असुरक्षक्षत और असजग अवस्था में तो छोडा ी, साथ-साथ अन्य राटरों की कूरूरता और पिुता भी कम न करा सका।

य सि ै कक शिु ुमें तथा म िोगों में एक भी गुण समान ो तो उससे िडने की मारी शक्क्त कम ो जाती ै। जो गुण में ववशेष रूप से वप्रय ोते े ैं तथा क्जन् ें आत्मसात् ्करने में में गौरव का अनुभव ोता ै, वे सभी गुण यहद मारे ककसी लमि में ववद्यमान ों, तब व व्यक्क्त मारा सवाचसधक वप्रय लमि बन जाता ै। इसी [illegible]त्व अथवा समानत्व का कोई बधिंन न िीं किोरतापूवकस ककया जाता ै। ववशेषतः उस समय ह दिंुसुथान ववश्वबधिंुत्व तथा अह सिां के नशे ेमें इतना डूबा ुआ था कक आिमणकाररयों का प्रनतकार करने की इसकी शक्क्त ी नष्ट ो िुकी थी। इसी ह दिंुसुथान में अन्याय के प्रनत िोगों के। मन में कटु द्वेषे प्रज्वलित करनेका तथा शाश्वत प्रनतकार-शक्क्त का वरदान प्राप्त करा देनेके लिए दोनों के लिए पूज्य, पूजा-प्राथनसा तथा मि-सस्थ्ािओ िंको नष्ट करना आवश्यक था। तत्पश्िात् ् ी य काय स अत्युत्तम प्रकार से ककया जाना सभिंव था। क्जन िोगों नेह दिंुसुथान को एक राष्ट्र के रूप में गिा घोंटकर खत्म ककया था, उन शिुओ िंके साथ ी पूजा-प्राथनसा तथा मि आहद के माध्यम से, ह दिंुसुथान ने अपनेस धमी बधिंु ु क कर नाता जोडने का काम प ि ेभी ककया था। िेककन ऐसे ेववश्वधम सका क्या उपयोग, क्जसनेह दिंुसुथान को असुरक्षक्षत और असजग । अवस्था में तो छोडा ी, साथ-साथ अन्य राष्ट्रों की िूरता और पशुता भी कम न करा सका। सरिंक्षण का एकमाि माग सअब नजर आता ै, तो व ै - राष्ट्रीयता की भावना से उत्पन्न, बिशािी एव िं परािमी पुरुषों की समथ सशक्क्त । अवास्तव तत्त्वज्ञान के जजिंाि मेंं फँसकर ह दिंुसुथान ने अपना रक्त तो ब ाया, परिंतु उसका पररणाम ववपरीत ुआ।

ववदेलशयों की दासता को आमत्रिंति करनेवािा तथा स्वदेश को गत समें डिानेवािा बौद्धधमस

जब बौद् म् तदवारा बलपूवकत तथा िस्त्रों की स ायता से ह दिंुसुथान पर अपनी सिा प्रस्थावपत करने के प्रयास प्रारिंभ ककए गए, तब बौद् म् तकी ववचवबिंतुव की प्रवृवृयों का ववरो् करनेवाले आदिोलन भी अध्क तीव्र तथा बलिाली ोनेलगे।

जब बौद्ध धम सद्वारा बिपूवकस तथा शस्िों की स ायता से ह दिंुसुथान पर अपनी सत्ता प्रस्थावपत करने के प्रयास प्रारिंभ ककए गए, तब बौद्ध धम सकी ववश्वबधिंुत्व की प्रववृत्तयों का ववरोध करनेवािेआदिंोिनि भी अचधक तीव्र तथा बिशािी ोननेगे। बा र सेय ाँआकर मारे देश पर आिमण करनेवािों को म िोगों ने स्वामी के रूप में स्वीकार न ी िंककया तथा देश की स्वातिंत्रता का सौदा करना भी देशालभमानी प्रववृत्त के िोगों ने स्वीकार न िींककया। स्पेन के कैथोलिक िंिैनिडें के लस िंासन पर कैथोलिक पथिं के राजा को आसीन करने का प्रयास कर र े थे। उन् ें स ानुभूनत दरशानेवािा एक प्रमुख गुट िंिैनिडें में प्रत्यक्ष रूप से ववद्यमान था। उसी प्रकार बौद्ध धम स के अनुकूि वविार रखनेवािेकुछ आिमणकाररयों को भी ह दिंुसुथान में िि र े युद्ध के समय गुप्त रूप से स ानुभूनत हदखानेवािे ेअनेक बौद्धधमीय िोग य ाँ ाँभी ववद्यमान थे। इसके अनतररक्त बा र के बौद्धधमीय

राष्ट्रों ने ननक्श्ति राष्ट्रीय तथा धालमकस उद्देश्य से ह दिंसुथान पर आिमण ककए थे। इन घटनाओिंके स्पष्ट प्रमाण म ोगों के प्राीन ग्रथिों में ववलभन्न स्थानों पर लमिते ैं। म य ाँउस कािा के समग्र इनत ास का वविार न िंकर र े ैं, परिंतु इस आय सदेश तथा राष्ट्र पर ूणों के राजा न्यूनपनत तथा उसके बौद्धपथिीय स ायकों ने एक साथ लमिकर जो आिमण ककया तथा क्जसका िक्षखणक और यथाथ,स परिंतु सक्षिंक्षप्त वणनस म गिों के प्राीन ग्रथिों में लमिता ै, उसका ननदेश म य ाँ करनेवािो ैं।

इस प्राीन ग्रथिं में कुछ पौराखणक प्रकार से ' ा नदी के तट पर प्रिडिं युद्ध ककस प्रकार ककया गया, बौद्धों की सेनाओिंका लशववर ीन देश में ककस कारण स्थावपत ुआ' (ीन देशमुपागम्य युद्धभूमीमकारयत्)् ववलभन्न बौद्ध राष्ट्रों की स ायक सेनाएँ ँउन् ें ककस प्रकार आकर लमिी िंतथा इस कारण उनके सैन्य की सख्यिा में ककतनी वृद्धध ुई (श्याम देशोद्भिक्षास्तथा िक्षाश्जापकाः । दश िक्ष्याश्ांनिदेश्या युद्धाय समुपक्स्थतः ॥) तथा अिंत में बौद्धों को ककस प्रकार पराभूत ोना पडा और इस पराजय के फिस्वरूप उन् ें ककतना जबरदस्त दिंड लमिा- आहद का वणनस ककया गया ै। अतिंतः बौद्धों को प्रकट रूप से अपनी राष्ट्रीय ध्येयाकाक्षिंाओिं को स्वीकार करना पडा तथा उन् ें त्यागना पडा। भववष्ट्य में ककसी प्रकार के राजकीय उद्देश्य से ह दिंसुथान में प्रवेश न करने की स्पष्ट तथा बधिंनकारक शपथ उन् ें िेनी पडी। ह दिंसुथान सभी के साथ सह ष्ट्णुतापूवकस आिरण करता था। अतः बौद्धों को व्यक्क्तगत रूप से ककसी तर का भय ोनेका कोई कारण न िंथा। ह दिंसुथान की स्वतिंता तथा राजनीनतक जीवन के लिए सकिंट उत्पन्न करनेवािी सभी आकाक्षिंाओिं का त्याग करना उनके लिए आवश्यक था। 'सवैश् बौद्धवृदैश् तैिव शपथिंकृतम्।् आयदेसशिं यास्यामः कदाचिद्राष्ट्र ेतवे ।।"

(- भववष्ट्यपुराण, प्रनतसग सपव)स

भववटय में ककसी प्रकार के राजकीय उददेचय से ह दिंसुथान में प्रवि न करने की स्पटि तथा बिंन्कारक िपथ उन् ें लेनी पडी। ह दिंसुथान सभी के साथ सह टरुतापूवकत आचरर् करता था। अतः बौदों् को व्यष्ततगत रूप से ककसी तर का भय ोनेका कोई कारर् न िंथा। ह दिंसुथान की स्वतत्रिंता तथा राजनीततक जीवन के शलए सकिंि उत्पन्न करनेवाली सभी आकाक्षिंाओिं का त्याग करना उनके शलए आवचयक था।

वैहदक धम सका प्रनतकियात्मक पुनरुज्जीवनामक

इस प्रकार म लोगों की राटरीय वविेषताएँ ँस्पटि रूप सेप्रकि करनेवाली सस्थ्िाओिंको पुनः प्रारिंभ ककया गया। बौदों् की राज्यसिा की अष्जतावस्था में भी जो वर्ाश्रतम व्यवस्था पूर्तः नटि न िंकी जा सकी थी, उसे े अत्यध्क उन्नत दिा प्राप्त ुई।

इस प्रकार म िोगों की राष्ट्रीय ववशेषताएँ ँस्पष्ट रूप से प्रकट करनेविाी सस्थिाओंको पुनः प्रारिंभ ककया गया। बौद्धों की राज्यसत्ता की अक्जतसावस्था में भी जो वणाश्रसम व्यवस्था पूणतसः नष्ट न िींकी जा सकी थी, उसे ेअत्यचधक उन्नत दशा प्राप्त ुई। राजाओंतथा सम्राटों ने स्वय िंकी म ानता स्थावपत करने ेतु 'वणव्सयवस्थानपर:' (सोनपत ताम्रिेख) तथा 'वणाश्रसमव्यवस्थापनप्रवृत्तिः ' (मधवत ताम्रपट) आहद उपाचधयों का उपयोग अलभमानपूवकस करना प्रारिंभ ककया। वण-सव्यवस्था की पुनस्थापसना के लिए इस प्रनतकिया से ब ुत

बि लमिा। व भववष्य में इतनी शक्क्तशिी बन गई कक व म िोगों की राष्ट्रीयता की प िन बन गई। म िगों से ववदेशी ककस प्रकार लभन्न थे-इसे ेइस प्रकार पररभावषत ककया गया ै-

चातुवण्तयव्तयवस्थान िंयष्स्मन्दे न ववदयते।
त िंम्लेच्छदेिंजानीयात आयावततस्ततत: परम् ्॥

ऊपर ककए गए ववविेन के पररपे्रेक्ष्य में इस पररभाषा का अथ ससमझनेका प्रयास ककया जाना िाह ए। इससे य ज्ञात ोगा कक जो देश म िोगों की वणाश्रसम जैसी सस्थिा के लिए अनुकूि न िींथेतथा इसके लिए उनके मन में शिुता की भावना ववद्यमान थी और क्जन देशों में म िोगों की धालमकस सस्कृनत तथा सस्कार जीववत रखने ेके लिए उचित सरिंक्षण प्राप्त न िीं ो सकता था, उन देशों में न जाने पर प्रनतबधिं िगाने ेतु धमाज्ञसा प्रसृत करना आवश्यक प्रतीत ुआ। य प्रनतकिया अस्पष्ट अववार के कारण ी ुई थी। कफर भी राजनीनतक दृक्ष्ट से ववार करने के पश्ात् ् म िोगों को भी िगा कक क्जन देशों में अपनेदेशवालसयों को अपमाननत ककया जाता ै तथा राष्ट्रीय दृक्ष्ट से उन् ें नपुसिंक बना हदया जाता ै, उस देश में ककसी को न भेजने का ननणयस तथा व ाँजाना प्रनतबचिंधत करना उचित था। इस बात से स मत ोनेविोचितिंक आज भी ववद्यमान ैं।

ह दिं राष्ट्रकोअपनेस्वतिंअक्स्तत्वकीप िान

ह दिंसुथान में बौद् म् तके ह्रास के शलए तथा इसके पूरा ोनेके शलए राटरीय और राजकीय घिनाएँ ी उिरदायी थी।िं बौद्म् तका अब कोई भौगोशलक केंद्र न िींथा। बौद् म् तको शसर-आँखों पर बैठाकर नतनत करने से ह दिंसुथान का सतिंुलन बबगड गया था। उसे ेपूव तष्स्थतत में लाना अत्यध्क आवचयक ो गया था।

ह दिंसुथान में बौद्ध धम सके ह्रास के लिए तथा इसके पूरा ोनेके लिए राष्ट्रीय और राजकीय घटनाएँ ी उत्तरदायी थी।िं बौद्ध धम सका अब कोई भौगोलिक केंद्र न ी िंथा। बौद्ध धम सको लसर-आँखों पर बिैकर नतनस करने से ह दिंसुथान का सतिंुनि त्रबगड गया था। उसे ेपूव सक्स्थनत में िाना अत्यचधक आवश्यक ो गया था। ककसी जीव-जतिं के समान राष्ट्र को अपनेअक्स्तत्व की प िान जब ुई तथा इस अक्स्तत्व को लमटाने े ेतु आिमण करनेविाी ववदेशी शक्क्त से युद्ध आरिंभ ुआ, तब मारा ननक्श्ित स्थान कौन सा ै, इसे ेप्रदलशतस करना ब ुत

ह दिंतुव 28 आवश्यक ो गया। म सामूह क तथा राष्ट्रीय दृक्ष्ट के अनतररक्त भौगोलिक दृक्ष्ट से भी ननक्श्ति ी स्वर्तिं राष्ट्र ै, ऐसा समिू ेववश्व को गरजकर क ने के लिए मनेस्वयप्रिंरणा से अपनेअधीन भूभाग दरशानेविाी, सुस्पष्ट सीमाएँ ँहदखानेविाी रेखाएँ खिंिीं डिाी।ि प्रकृनत ने ी मारे दक्षक्षण हदशा के सीमातिं प्रदेश सुरक्षक्षत बना हदए थे। राजनीनतक गनतववचधयों की नजर में वे मान्यता प्राप्त भी थेऔर पववि भी।

ह दिंूराष्ट्रकाउत्तरदक्षक्षणसीमातिं

म लोगों का दक्षक्षर् दवीप समुदाय अमयादता तथा असीम सागर से पररवेष्टित सागरी सौंदय तके शलए य अत्यध्क उत्कृटि, रमर्ीय तथा तनतातिं काव्यमय ै। इस समुद्र दिनत से मारी अनेक पीहढ़यों के कववयों तथा दिवाशसयों को दिनत-सुख शमला, पररिंतु वायव्य सीमा प्रातिं में ववशभन्न जाततयों परस्पर सबिंि् मैं इतनी अध्क वृदृध् ुई कक इससे म लोगों की जाततयों का वविुद् स्वरूप नदि ोनेभय उत्पन्न ो गया।

म िोगों का दक्षक्षण द्वीप समुदाय अमयादसा तथा असीम सागर से पररवेक्ष्टत था। सागरी सौंदय सके लिए य अत्यचधक उत्कृष्ट, अतीव रमणीय तथा ननतातिं काव्यमय ै। इस समुद्र के दशनस से मारी अनेक पीहढ़यों के कववयों तथा देशवालसयों को दशनस- सुख लमिा, पररिंतु वायव्य सीमा प्रातिं में ववलभन्न जानतयों के परस्पर सबिंधिों में इतनी अचधक वृद्चध ुई कक इससे म िोगों की जानतयों का ववशुद्ध स्वरूप नष्ट ोनेका भय उत्पन्न ो गया। व ाँकी सीमाएँभी ब ुशः बदिती र ी।ि राष्ट्र की सुरक्षा के लिए भी य एक सकिंट बन गया। इसमें कोई आश्चयि सन िींकक उज्जयनी नगरी के 'म ाकिा' के नेतृतव में लमिी स्वदेशननमाणस की प्रेरणा से, दक्षक्षण की तर उत्तर की सीमारेखा भी सुस्पष्ट और सुरक्षक्षत करने की ओर देशभक्तों का ध्यान गया। 'लसधिुं' नदी जैसी भव्य और रमणीय नदी से बढ़कर अच्छी सीमारेखा उन् ें क ाँ ँलमिती। क्जस हदन मारे पूवजस इस नदी को िाँघकर आए, उसी हदन से, नदी के उस पार म िोगों का दक्षक्षण द्वीप समुदाय अमयादसा तथा था। अतीव के के का र र े पररजनों से उनका कोई नाता न िीं र ा। य ाँउन् ोंनेनए राष्ट्र की आधारलशिा रखी तथा स्वर्तिं राष्ट्र के रूप में उनका पुनजन्सम ुआ। नवीन आशा तथा ध्येयाकाक्षिंाओिंसे प्रेररत ोकर उन् ोंनेअन्य गिगों को अपनेमें समा लिया। स्वय िंकी अलभवृद्चध के साथ एक नई जानत तथा राज सस्थ्िा के रूप में भववष्ट्य में अत्यचधक ववकास तथा उन्ननत करने की बात एक अटि सत्य बन गई। इस नई जानत तथा राज सस्थ्िा का अन्य नाम न िींथा, पररिंतु ये िोग अत्यतिं योनय तथा स्फूनतमसय 'लसधिुं' अथवा 'ह दिं'ू नाम ी धारण करेंगे– य ननक्श्ति ो गया-

शसिंसुथानशमततज्ञेय िंराटरमायस्तय चिोमम् ्।

शस्ि ुके प्रवा के अनुसार म लोगों का सीमा- तनारत्र् कोई अभूतपूव तघिना न िींथी। नवचैतन्य प्रदान ने घोवषत ककया 'पुनः वेदों की इस म ान् ्राटर को करनेवालों था कक ओर चलो' उदघोषर्ा की ी व

तनटपवि म्ानुतसार थी। वैहदक स्थावपत ककए गए तथा वैहैदक म् तपर आ्ररत राटर का नाम वैहदक ोना अपरर ाय तथा।

लसधिं ुके प्रवा के अनुसार म िोगों का सीमा-ननधारसण कोई अभूतपूव स घटना न िंथी। राष्ट्र को नवैतन्य प्रदान करनेविों ने घोवषत ककया था कक 'पुनः वेदों की ओर िो' इस म ान् ्उद्घोषणा की ी व ननष्ट्पवत्त थी। वैहदक धमानुससार स्थावपत ककए गए तथा वैहदक धम सपर आधाररत राष्ट्र का नाम वैहदक ोना अपरर ाय सथा। उस समय की सभिंावनाओ िंका वविार करते े ुए वैहदक प्रथा के अनुसार ी नाम हदया गया। साराशिं में इनत ास के ननष्ट्कष सके अनुसार जो घटनाएँ घटीं वे म िोगों की अपेक्षानुसार, प्रत्यक्ष रूप में भी उसी मि से घटी।िं स्वदेश प्रेम से प्रेररत ोकर लिखे ककसी पुराण में स्पष्ट्ट उल्लेखि ै कक वविमाहदत्य के पोते शालिवा न ने ववदेलशयों का ह दिंसुथान पर ववजय पानेका दूसूरा प्रयास ववफि ककया तथा उन् ें लसधिं ुके पार खदेड हदया। एक राजाज्ञा द्वारा उसनेघोवषत ककया कक 'इसके पश्िात् ्ह दिंसुथान तथा अन्य अह दिं ूराष्ट्रों के बिी लसधिं ु ी सीमा रेख मानी जाए।'

एतष्स्मन्नतिंरे तत्र िाशलवा न भूपततः ।
ववक्रमाहदत्यपौत्रचच वपतृराज्य िंप्रपेहदरे ॥
ष्जत्या िकान् ्दुरुाष्ानत चीनतैविरर दिजान् ्।
बाष्ल् कान् ्कामरूपाचिंच रोमजान् ्खुरजान् ्िठान् ्॥
तषा िंकिोन् ्गृ ीत्वाच दडयोग्यानकारयत् ्।
स्थावपता तेन मयादता म्लेच्छायार्ता पृथृक् पृथक् ॥
शसिंसुथानशमततज्ञेय िंराटरमायस्तय चिोमम् ्।
म्लेच्छस्थानिंपरिं शसो्ः कृत िंतेन म ात्मना ॥

(- भववटय पुरार्, प्रततसग,त अ. २)

लसधिं ी ह दिं सु थान की स्फू नतस

म लोगों के दि का प्राचीनतम नाम 'सप्तशस्ु िु अथवा 'शस्ु िु ोनेके तनष्चचत प्रमार् उपलब् ै। भारतवष त नाम भी इसके पचचात् ् ी हदया गया था, य भी प्रमाखर्त ो चुका ै। य नाम व्यष्ततननटठ ै तथा इसमें ककसी व्यष्तत के प्रतत तनटठा प्रकि की गई ै।

म िोगों के देश का प्रिीनतम नाम 'सप्तलसधिं' अथवा 'लसधिं' ोनेके ननक्श्ति प्रमाण उपिब्ध ैं। भारतवष सनाम भी इसके पश्िात् ् ी हदया गया था, य भी प्रमाखणत ो िुका ै। य नाम व्यक्क्तननष्ट्ि ै तथा

इसमें ककसी व्यक्क्त के प्रनत ननष्ठा प्रिकट की गई ◌ै। ककसी का व्यक्क्तगत यश व कीनत सककतनी भी उज्ज्वि क्यों न ◌ो, समय के साथ उसमें कमी आनेगती ◌ै। इस प्रकार के नाम से व्यक्क्त-ववषयक मधुर भावनाओंकी स्मृनृतयाँ जुडी र ती ◌ैं, तथावप ककसी अत्यतिं कल्याणकारी तथा चिरिंतन प्राकृनतक कृनत से सबिंद्ध नाम की तुिना में ककसी व्यक्क्त के परिाम तथा उसकी म ◌ानता के कारण जो नाम म त्त्वपूण सबन जाता ◌ै। व नाम सदैव जाग्रत् ◌्र नेवािे स्वत्व की प ◌िान तथा कृतज्ञता का स्थायी तथा अचधक प्रभावी स्फूनत सस्थान न ◌िींबन सकता। सम्राट् भरत का ननधन ◌ो गया। अन्य सम्राटों की भी मृत्यु ◌ो गई, परिंतु लसधिं अखडिं व चिरिंतन बनी ◌ुई ◌ै। म ◌िोगों के स्वालभमान को प्रज्वलित करती ◌ुई, म ◌िोगों की कृतज्ञता बुद्चध सदैव जाग्रत् ◌्रखती ◌ुई तथा सदैव स्फूनतदसायक बनकर प्रवाह त ◌ो र ◌ी ◌ै। म ◌िोगों के प्रािीनतम भूतकाि से मारे सुदूरू भववष्यकाि को जोडनेवािा राष्ट्र का अत्यचधक आवश्यक तथा जीवभूत पृष्ठ्विंश का - पहिका - मेरुदिंड ◌ी ◌ै। म ◌िोगों के राष्ट्र से इस नदी का सबिंधिं ◌ोने के कारण तथा उसके नाम से म ◌िोग एकरूप ◌ो गए ◌ैं, इसलिए प्रकृनत भी म ◌िोगों का साथ दे र ◌ी ◌ै, ऐसा क ना गित न ◌िीं◌ोगा। म ◌िोगों के राष्ट्र के भववष्य का आकार इतना सुदृढ़ ◌ै कक मानवी कािगणना के अनुसार य युगों-युगों तक चिरिंजीव बना र ◌ेगा। इसी प्रकार के ववचार उस समय के चिंतिकों के तथा कृनतवितीं के मन में उत्पन्न ◌ुए ◌ोंगे। इसी कारण म ◌िोगों के राष्ट्र को प्रािीन वैहदक नाम 'ह दिंसुथान' से सबिंचधत करते ◌े ◌ुए अचधक प्रनतक्ष्ठित बनानेका ववचार उन् ◌ें उचित प्रतीत ◌ुआ ◌ोगा। लसधिंस्थान 'राष्ट्रमायस्सय ◌ित्तमम्।◌्'

शसिंसुथान वैहदक नाम ◌ोने के कारर् ◌ी म त्त्वपूर् तन ◌िीं बना ◌ै। उसका एक अततररतत म त्त्व भी ◌ै। व उसे ◌े पररष्स्थततवि ◌ी प्राप्त ◌ुआ ◌ै। परिंतु व इतना क्षुद्र भी न ◌िीं ◌ै कक उसकी उपेक्षा की जा सके। सस्कृित के 'शस्◌ुबिद का अथ तकेवल शस्◌ुनदी तक ◌ी सीशमत न ◌िीं ◌ै।

उत्तर-दक्षक्षण सीमािंत दरशानेवािा एक ◌ी शब्द - 'लसधिं'◌ु

लसधिंस्थान वैहदक नाम ◌ोनेके कारण ◌ी म त्त्वपूण सन ◌िींबना ◌ै। उसका एक अनतररक्त म त्त्व भी ◌ै। व उसे ◌ेपररक्स्थनतवश ◌ी प्राप्त ◌ुआ ◌ै। परिंतु व इतना क्षुद्र भी न ◌िीं ◌ै कक उसकी उपेक्षा की जा सके। सस्कृित के 'लसधिं'◌ु शब्द का अथ सकेवि लसधिं नदी तक ◌ी सीलमत न ◌िीं ◌ै। उसका दूसूरा अथ स ◌ोता ◌ै सागर, दक्षक्षण द्वीपसमू को पररवेक्ष्टत करनेवािा 'समुद्ररशना' भी ◌ोता ◌ै। इसलिए 'लसधिं' शब्द के उच्चारण से म ◌िोगों के सभी सीमाओं का एक साथ बोध ◌ोता ◌ै। ह मािय के पूव सतथा पक्श्चम पिार से दो पृथक् प्रवा ◌ों में ब नेवािी लसधिं ◌ु की ◌ी ब्रह्मपुत्र एक शाखा ◌ै - ऐसा प्रािीन काि से ◌ी समझा जाता र ◌ा ◌ै। म ◌िोगों ने इसपर ववशेष ध्यान न ◌िींहदया; परिंतु य ननवववसाद रूप सेसत्य ◌ै कक लसधिंउत्तर-पक्श्चम सीमाओंकी पररमा करती ◌ुई अग्रसर ◌ोती ◌ै। लसधिं ◌ुसेसागर तक की मारी मातृभूलम आँखों के सामनेसाकार ◌ो उिती ◌ै।

लसधिंुस्थानतथामे्च्छिस्थान

भौगोशलक दृष्टि सेसुयोग्य ोनेके कारर् ी 'शसधं्ु नाम दिेप्रेशमयों ने स्वीकार ककया ै - ऐसा मानने का कोई आर्ार न िीं ै। इस नाम से केवल भौगोशलक अथ त ी सूधचत न िीं ोता। य तनष्चचत राटर की ओर भी सकेंत करता ै। शसधंसु्थान कोई छोटा सा क्षेत्रीय सधंि न िीं ै। व एक राटर ै अथात् ्'राज्ञः राटरम्' ्।

भौगोलिक दृक्ष्ट सेसुयोनय ोनेके कारण ी 'लसधिुं' नाम देशप्रेलमयों ने स्वीकार ककया ै-ऐसा मानने का कोई आधार न िीं ै। इस नाम से केवि भौगोलिक अथ स ी सूचित न िीं ोता। य ननक्श्ित राष्ट्र की ओर भी सकेंत करता ै। लसधिुंस्थान कोई छोटा सा क्षिीय सधिं न िीं ै। व एक राष्ट्र ै अथात् ्'राज्ञः राष्ट्रम्' ्। व सदा ककसी एक शासन के अधीन न िीं र ा, तथावप एकता की भावना के कारण ननक्श्ित रूप से एक अखडिं राष्ट्र था। व ाँ क्जस सस्ंकृनत का ववकास ुआ तथा जो िोग इस राष्ट्र के नागररक बने, उन दोनों को वैहदक काि की प्रथा के अनुसार 'लसधिुं' क ा जाता। इस बात के प्रमाण उपिब्ध ैं। ववदेशी मे्च्छिस्थान से सवथसा लभन्न तथा स्वतिं राष्ट्र आयों का सवोत्तम राष्ट्र बन गया (राष्ट्रमायस्सय िोत्तमम्) ् तथा 'लसधिुंसु्थान' नाम से प िाना जानेिगा। य ाँ ँक देना आवश्यक ै कक य पररभाषा ककसी धालमकस वृथालभमान अथवा धममसतों पर आधाररत न िीं ै। य ाँ 'आय'स शब्द का प्रयोग इसीलिए ककया गया ै, ताकक लसधिुं नदी के इस ओर के अपनेवैभवशािी राष्ट्र के तथा जानतयों के सभी अननवाय सघटकों का उसमें समावेश ो। इसमें वैहदक या अवैहदक, ब्राह्मण अथवा शूद्र आहद भेदे न िींककया गया। केवि समान सस्ंकृनत, रक्त-सबिंधिं देश तथा राज्यसस्थ्िा का उत्तराचधकार क्जन् ें प्राप्त ुआ ै, वे सभी 'आयस' क िातेैं। इससे ववपरीत ह दिंुसु्थान से सवथसा लभन्न मे्च्छि स्थान का अथ स कदाचित् ्धम सकी दृक्ष्ट से न ी िबक्ल्क राष्ट्रीयता तथा जातीय एकात्मता की दृक्ष्ट से लभन्न तथा परायों का देश ऐसा ी ोता ै।

'हदिंुसु्थाननामकीअनेकशतकोंकीपरिंपरा

य राजाज्ञा ह दिंुसु्थान की अन्य राजाज्ञाओंके समान तथा ी एक लोकवप्रय समथ तआदिोलन का दृचयफल थी। ह दिंुसु्थान की पर भूशम के अतिंतम शसरे अिक बसा था। यहद य के कल्पना मारे राटर मष्स्तटक की उपज न ी ि ोती अथवा उसे ेस्वीकाय तन ी ि ोती तो उसका अष्स्तत्व में आना ी असभिंव था।

य राजाज्ञा ह दिंुसु्थान की अन्य राजाज्ञाओंके समान ी एक िोकवप्रय तथा समथ सआदिंोिन का दृश्यफि थी। ह दिंुसु्थान की भूलम के अनिंतम लसरे पर अटक बसा था। यहद य कल्पना मारे राष्ट्र के मक्स्तष्क की उपज न िींोती अथवा उसे ेस्वीकाय सन िींोती तो उसका अक्स्तत्व में आना ी असभिंव था। कफर अनेक शतकों तक िोगों का मुखोनदत र ना तो और भी कहिन था। समिू देशवालसयों ने, राजाओं से िेकर गरीब िोगों तक सबने य धारणा अत्यचधक भक्क्तभाव से तथा दृढ़तापूवकस और आग्र पूवकस जीववत रखी। इसी कारण म िोगों ने प्रािीन लसधिुं को ी सीमातिं के रूप में स्वीकार ककया। इसे ेमान्यता प्रदान करनेवािा तथा म िोगों की

भूलम को 'लसधिुंस्थान' नाम ननधारसरत करनेविाा कोई राजाज्ञापि अचधकृत रूप से प्रसृतृ ककया ोगा, ऐसी धारणा ी इस बात का स्पष्ट प्रमाण ै। इस राज्ञानुशासन को तथा जनता की इच्छा को धम सका पववि शुभाशीवादस प्राप्त ुआ था। अत: देश के लिए वैहदक नाम प्राप्त करनेके म िोगों के प्रयास सिंभव ुए। इस नाम को चिरिंजीव तथा चिरववजयी बनाने का काय सभी सफि ुआ। लसधिुंसभा, लसधिुंस्थान-इन नामों का भववतव्य ननक्श्ति ो जानेके पश्चाति् ्इनका उत्कष ससाधने ेतु तथा सपिूंण सराष्ट्र का प्रयोजन स्पष्ट ोनेके लिए पयाप्सत रूप से प्रबि तथा प्रभावशािी बनकर म िोगों की जानत के लिए एक अमूल्य आधार-स्तभिं के रूप में उसकी स्थापना अनेक शतकों के पश्चाति् ् ी सभिंव ो सकी। ब ुत सी म त्त्वपूण सघटनाएँ ोनी थी।ि अतिंतः उनके प्रयासों से ी सभिंव ो सका। य ज्ञात ै कक आयावसत सतथा भारतवष सका वास्तववक अथ सन जाननेविो आज भी जारों

िगि ै, परिंतु ककसी भी रास्ते ेपर ििनेविो व्यक्क्त को ह दिूं ूतथा ह दिुंसुथान नाम अपने ी िगते ैं। (कृपया पररलशष्ट देखें।)

भगवान् ्बौद्ध के लिए ननतिांत आदरयुक्त भक्क्तभावना

इन नाम के इतत ास में इसके पचचात् ्तया- तया ष्स्थत्यतिंर ुए- य ववेचना करने से पूव त में क्षमा-याचना करने की आवचयकता प्रतीत ोती ै। अभी तक के ववेचन का य सपिूंर् तभाग शलखते समय मनेअपनी

भावनाओ िको क्षतत प ँुँचाई ै।

इन नाम के इनत ास में इसके पश्चाति् ्क्या-क्या क्स्थत्यतिंर ुए- य ववविेना करने से पूव स में क्षमा-यििाना करने की आवश्यकता प्रतीत ोती ै। अभी तक के ववविेन का य सपिूंण सभाग लिखते ेसमय मने अपनी भावनाओिंको क्षनत प ँुँिाई ै। इसलिए प्रारिंभ में ी य क ना आवश्यक ो जाता ै कक बौद्ध धम सको ककस राजनीनतक क्स्थनत के कारण ह दिुंसुथान से बा र खदेड हदया गया, इस ववषय पर ववविेन करते ेसमय कुछ

किोर शब्दों का प्रयोग बौद्ध धम सके

ियोग करना पडा था। इसलिए ऐसा मानना उचित न िीं

प्रनत आदरभाव का अभाव ै; परिंतु य सि न ी िं ै। बौद्ध धम सको दीक्षा ग्र ण करनेविो ककसी भी लभक्षुके समतुल्य म भी उस पावन सघिं के एक ववनम्र पूजक तथा गुणोपासक ैं। मनेबौद्ध धम सका अनुयानयत्व न ी िं स्वीकारा ै, परिंतुइसका कारण य न िीं ै कक व धम स ी मारे लिए उचित न िीं ै। व धम समहिंदर तत्त्वों की सुदृढ़ नीविं पर खडा ै तथा केवि लशिाओिंपर क्स्थत राजप्रासाद से अचधक समय तक उसका अक्स्तत्व बना र ेगा। उस धममसहिंदर की सीढ़ी पर िरण रखने ेकी योनयता ममें न िीं ै। ह दिुंसुथान में जनमे,े ह दिुंसुथान में ी पररपक्व ुए तथा ह दिुंसुथान को ी अपनी मातृभूलम मानकर उसे ेपूजनेविो अनेक श्रेष्ट्अ सताओिंतथा लभक्षुओु िं के म ान् ्कम सघिों ने मानव को अपनी मूि पाशवी प्रवृवृत्तयों से दूरू करने का प्रथम तथा यशस्वी प्रयास करने का सकिंल्प करने के पश्चाति् ्उसका प्रयोग अनेक शतकों तक ककया। इसी एक बात से मारी भावनाएँ ँइस प्रकार आदिंोलित ो उिती ैंकक उन् ें शब्दों में प्रकट करना असभिंव ै। क्जस सघिं के लिए मारे मन में इस प्रकार की भावनाएँ ँववद्यमान ैं। उस परमज्ञानी बौद्ध भगवान् ्के लिए म ककन शब्दों में आदर व्यक्त कर सकते ैं? े

तथागत बुद्ध ! अत्यतिं क्षुद्र कोहट के ीनतम मानव के रूप में मारे दैन्य तथा अल्पता को ी तुम् ारे िरणों पर अपणस करने ेतु म तुम् ारे सम्मुख उपक्स्थत ोनेका सा स न िींकर सकते। तुम् ारे उपदेश का सार मारी बुद्चध ग्र ण न िींकर सकती। तुम् ारे शब्द ईश्वर के मुख से ननकिेशब्द ैं। मारी बुद्चध इस प्राकृत तथा व्याव ाररक ववश्व की बातें सुनने की अभ्यस्त ो िुकी ै। कदाचित् ्तुमने अपना धमिसि प्रवतनस असमय प्रारिंभ ककया ोगा तथा अपनी धमध्सवजा फ राई ोगी। तभी हदन का उदय ो र ा था, अतः तुम् ारी गनत से िािना इस ववश्व के िोगों के लिए सभिंव न िीं ुआ ोगा। तुम् ारे दैदीप्यमान ध्वज को देखते े ी उनकी दृक्ष्ट िकिौंध ोकर धुँधी बन गई ोगी। 'िािनािमिा भक्ष्या दिंष्ट्रीणामप्यदिंक्ष्ट्रणः । अ स्ताश् सि स्ताना िंशूराणा िंिैव भीरवः ॥ (मनु) । य दुष्ट्टता जब तक इस ववश्व में ावी र ेगी और जब तक आकाश में िमकने ेविो तारों की भाँनत दूरू से ी सु ानेविो सत्य धम सके वविार इस दुष्ट्टता की पराजय न िींकरते,े तब तक कोई भी राष्ट्र अपना ध्वज त्यागकर ववश्वबधिुंत्व का ध्वज फ रानेके लिए मान्यता न िींदेगा। कफर भी, मारे देवी-देवताओिंके पूजन से पावन ुए मारे ध्वज के निी भगवान् ्बौद्ध यहद न िीं ोते,े तो मारे ध्वज की श्रेष्ट्िता में थोडी कमी अवश्य

र जाती। क्जस प्रकार श्रीराम, श्रीकृष्ट्ण अथवा म ावीर में अपनिेगते ैं, उसी प्रकार े भगवन्,् तुम भी मारे ी ो। ये शब्द म िोगों की आत्मा की तीव्र भावनाओिंसे उपजे ेशब्द ैं। तुम् ारा हदव्य साक्षात्कार भी म िोगों को आया ुआ एक स्वप्न ै। य इस मानवी भूलम पर सद्धम सके तत्त्वज्ञान की ववजय ुई तो े भगवान् ्! तुम् ारे ध्यान में य आ जाएगा कक क्जस भूलम ने तुम् ें पािनेमें झिुाया ै, क्जस जानत ने तुम् ें पाि-पोसकर बडा ककया ै, व ी भूलम तथा व ी जानत इस सद्धम सके यश का कारण ै। तुम् ें जन्म देने से य बात प्रमाखणत न ो सकी ै तो इन घटनाओ िंसे व अवश्य लसद्ध ोगी कक य ाँकी भूलम और िोग इस धम सके लिए क्जम्मेदार ैं।

हिंदुस्थानकी भूलम में ी पररपतव ुए तथा ह दिंसुथान को पूजनेवाले अनेक श्रेरेटठ अ ताओिं तथा शभक्षुओिंके म ान् ्कम तसघिों ने मानव को अपनी मूल पािवी प्रववृियों से दूरू करने का प्रथम तथा यिस्वी प्रयास करने का सकिंल्प करने के पचचात् ्उसका प्रयोग अनेक ितकों तक ककया।

4. त िंवष सभारत िंनाम भारती यि सतिंनतः

अभी तक म िोगों ने सस्क्रित ग्रथिों का आधार िेकेर 'लसधिुं' शब्द अभी ककस प्रकार बना-इसे ेसमझने का प्रयास ककया। ह दिंू ूराष्ट्र की कल्पना में समय-समय पर वृद्धचध ोनेके साथ ऐसा प्रतीत ुआ कक उस समय हदया ुआ 'लसधिुंस्थान' नाम ी ककसी भी अन्य नाम सेअचधक साथकस ै। इसी स्थान पर म िोगों ने अपना अनुसधिांन अधूरा छोड हदया था। आयावसत सके समान इस नाम में भी सकिंीणतसा तथा एकपक्षीयता का दोष ववद्यमान ै। ऐसा आरोप यहद िगाया जाता ै तो इस आरोप का खडिंन करने ेतु 'लसधिुंस्थान' शब्द की पररभाषा करते ेसमय ककसी भी पक्षपाती सस्थिा अथवा धालमकस पथिं का सबिंधिं अस्वीकार कर हदया गया। उदा रण के लिए 'आयावसत'स की इस पररभाषा का अविोकन करें। 'िातुवण्सयव्सयवस्थानिं यक्स्मन्देशेन ववद्यते। त िंम्ि्च्छिदेशिंजानीयादाभावसतस्सततः परम् ्॥' य व्याख्या योनय ै, परिंतु सावकसालिक न िीं ै। सस्थिा समाज के लिए म िोगों ै, परिंतु समाज तथा उसके ध्येय ककसी सस्थिा के लिए न िीं पर अथवा उसके सफि ोने की कोई सभिंावना न र नेपर िातुवण्सय सव्यवस्था कदाचित् ्िुप्त ो जाएगी। तब क्या य भूलम परायों की अथवा म्ि्च्छिभूलम बन जाएगी ? सन्यािसी, आयसमाजी, लसख तथा अन्य अनेक िातुवण्सय सव्यवस्था को न िीं मानते। उन् ें क्या इस पररभाषा के अनुसार पराया मानना ोगा ? कदावप न ी।िं म िोगों के रक्त से ी वे उपजे ैं, एक ी ईश्वर मानते े ैं, त िंवष सभारत िंनाम । भारती यि सतिंनतः ॥ य पररभाषा पूव सकी पररभाषा से दस गुना अचधक साथकस ै। य अचधक वास्तववक ै। म ह दिंू िूोग एक ैं तथा म िोगों का राष्ट्र भी एक ै। 'भारती सतिंनतः' (म सब एक ी राष्ट्र की सतिंनत ैं।)

मारे राष्ट्र की जीविंत मातृभाषा-सस्क्रितननष्ट् ह दिंी

इतत ास के उस काल में बौद् म् तके अभ्युदय तथा पचचात् ्ह दिंसुथान में ह दिंी प्राकृत भाषाओंका ववस्तार तथा ववकास ववलक्षर् गतत से ुआ। प्राचीन शिक्षक्षत परिंपरा की अभेदेय सीमाओ िंमें सस्क्रित भाषा इस प्रकार जकड गई थी कक नवीन िब्दों नवीन कल्पनाओंका शिटि (भाषा में) वाड्मय में प्रयोग करने से पूव त ी उनका रूपातिंर भाषा में की प्रथा प्रचशलत ो गई ।

इनत ास के उस कि में बौद्ध धम सके अभ्युदय तथा ास के पश्ाति् ्ह दिंुसुथान में ह दिंी प्राकृत भाषाओ िं का ववस्तार तथा ववकास वविक्षण गनत से ुआ। प्रिीन लशक्षक्षत परिंपरा की अभेद्य सीमाओिंमें सस्ृकित भाषा इस प्रकार जकड गई थी कक नवीन शब्दों तथा नवीन कल्पनाओिं का लशष्ट (भाषा में) वाङ्मय में प्रयोग करने से पूव स ी उनका रूपातिंर भाषा में करने की प्रथा प्रिलित ो गई। इसी कारण ननत्य के व्यव ार के लिए तथा सामाक्जक गनतववचधयों के लिए प्राकृत भाषाओिंका उपयोग ककया जाने िगा। वस्तुतः ये प्राकृत भाषाएँ ँ ी िोगों के प्रिलित तथा प्रज्वलित वविारों को नवीनता तथा सक्षिंक्षप्तता देनेके लिए सवस्सवी योनय थी।िं इसी कारण 'लसधिंु'ु तथा 'लसधिंुस्थान' शब्द कनतपय सस्ृकित ग्रथिों में लमिते े ैं, परिंतु अचधकतर सस्ृकित ग्रथिंकारों ने प्रगल्भता ननदेश 'भारत' शब्द का ी उपयोग ककया ै, परिंतु सभी प्राकृत ह्रास के तथा करने गई। बोलियों ने (प्राकृत) आयावसत सअथवा भारत जैसेपरिंपरागत तथा वप्रय नामों को स्वीकार न िंककया तथा म िोगों की भूलमका ने अचधक िोकवप्रय सबिोधन ह दिंुसुथान (लसधिंुसुथान) ी प्रिन में रखा। सस्ृकित भाषा का 'स' अह दिंू ूतथा ह दिंू ू प्राकृत भाषाओिंमें ' ' में ककस प्रकार पररवनततस ो जाता ै, इस ववषय का वववेिन य ाँपुनः प्रस्तुत करने की आवश्यकता न िं ै।

मारे जीवन के शसदा्तिं तथा मारे ध्येय, आकाक्षिंाओिं को अध्क उन्नत बनाकर देवभाषा सस्ृकित ने ी मारे जीवन- प्रवा ववुिद् तथा पररपूर् तबनाए राटर । कफर भी मारे के लोगों की जीवतिं मातृभृाषा बनने का ब ुमान सस्ृकित की ज्येटठ कन्या को प्राप्त ुआ।

इसीलिए प्राकृत भाषाओिंके वाङ्मयों में ह दिंू ूतथा ह दिंुसुथान का उल्िेख कई लभन्न स्थानों पर ककया जाता र ा ै। सस्ृकित भाषा म िोगों की जानत की अत्यतिं पववि तथा अलभमानास्पद चिरिंतन आनुवलिंशक सपिंवत्त ै, प्रमुख रूप से उसी के सामथ्य सके कारण ी म िोगों की जानत की मिूभूत एकता बनी र ी। मारे जीवन के लसद्धातिं तथा मारे ध्येय, आकाक्षिंाओिंको अचधक उन्नत देवभाषा सस्ृकित ने ी मारे जीवन-प्रवा ववशुद्ध तथा पररपूण सबनाए। कफर भी मारे राष्ट्र के िोगों की जीवतिं मातृभृाषा बनने का ब ुमान सस्ृकित की ज्येष्् किन्या ह दिंी को प्राप्त ुआ। प्रिीन लसधिंुओ िंअथवा ह दिंुओिंकी राष्ट्रीय तथा सास्ृकिनतक परिंपरा िाते े ुए ववख्यात बने ह दिंुओ िंकी भाषा बन गई - आज ह दिंी ननववववसाद रूप से ह दिंुसुथान की भाषा ै। ह दिंी को राष्ट्रभाषा के सम्राज्ञी पद पर स्थावपत करने का प्रयास कुछ नया न िं ै। य वववश ोकर ककया गया प्रयास भी न िं ै। ह दिंुसुथान में त्रब्रहटश साम्राज्य की स्थापना ोनेके अनेक शतक ह दिंी पूव ससपिंूण सह दिंुसुथान की व्याव ाररक भाषा ह दिंी ी थी। इस बात के प्रमाण उपिब्ध ैं। रामेश्वरम् ्से ननकिकर रद्वार की यािा पर जानेवािा कोई साधु, सन्यिासी अथवा कोई व्यापारी सपिंूण सयािा के समय सपिंूण सह दिंुसुथान में इसी भावना का प्रयोग करता गया। अपनेमनोभाव व्यक्त करने में उसे ेककसी प्रकार की कहिनाई न िंोती, पडिंडतों अथवा पृथ्ूवीपनतयों की सभाओ िं में सस्ृकित के कारण उसे ेप्रवेश लमिता, परिंतुराजसभा में तथा ाट-बाजारों में ह दिंी भाषा का ी प्रयोग ककया जाता। ह दिंी सब िोगों को जोडनेवािी भाषा थी। ककसी नानक को अथवा रामदास को अथवा ककसी अन्य िैतन्यशक्क्त" व्यक्त को देश की एक सीमा से दूसूरी सीमा तक यािा करते ेसमय य प्रतीत ोता था कक व

ी प्रदेश में घूम र ा ै। अपनेतत्त्वों का अथवा मििंणा का मुक्त प्रिार करने ेतु इसी भाषा का प्रयोग अपने
आवश्यक था तथा ऐसा ी ककया गया। लसधिंुस्थान अथवा लसधिं ुया ह दिंसुथान अथवा ह दिं ु- इन पुराने नामों का पुनरुज्जीवन ुआ। ये नाम िोकवप्रय ोते ेगए तथा इसी के साथ म िोगों की राष्ट्रीय भाषा का ववकास तथा ववस्तार भी ोता गया। य सपिंूण सराष्ट्र की सपिंवत्त बन जाने के पश्िात् इसे ेउचित रूप से 'ह दिी' नाम हदया गया।

ूणों तथा िकों को अपने पराक्रम से खदेड देनेके पचचात् कई ितकों तक ह दिंसुथान तनभयत स्वतत्रिंता का आश्रय-स्थान बना र ा। इस भूशम पर स्वातत्र्यि तथा समृदृध् का साम्राज्य पुनः स्थावपत ुआ। राजा तथा रिंक - दोनों ी स्वराज्य और स्वातत्र्यि का सुखोपभोग करने लगे।

ह दिं ूराष्ट्र के वैभव का कि

ूणों तथा शकों को अपने परिाम से खदेड देने के पश्िात् कई शतकों तक ह दिंसुथान ननभयस स्वतिंता का आश्रय-स्थान बना र ा। इस भूलम पर स्वातत्र्यि तथा समृदृ्चध का साम्राज्य पुनः स्थावपत ुआ। राजा तथा रिंक-दोनों ी स्वराज्य और स्वातत्र्यि का सुखोपभोग करनिेगे। इन जार वषों के इनत ास का वणनस इस देश के कववयों ने बडे ी वषतस भाव सेककया ै-

ग्रामे-ग्रामे ष्स्थतो देवः दिदिेष्स्थतो मखः ।
गे े गे े ष्स्थतिं द्रव्यिं ग्चतचैव जने जने ॥

(- भववटय पुरार्, प्रततसग तपव)त

लस िि द्वीप से कश्मीर तक सपिंूण सह दिंसुथान पर राजपूत वशिं के एक ी राजा की सत्ता थी। कई बार परस्पर वववा ों के कारण राजपररवारों में अचधक ननकट के सबिंधिं बन जाते ेतथा समान धम सतथा सस्िृनत के कारण वेदृढ़ ो जाते। सुख तथा समृदृ्चध के कारण सपिंूण सराष्ट्र का जीवन मगिंमिय, सुसविंादी और सामजिंस्यपूण सबन गया था। राष्ट्रभाषा का उत्कष स मारे राष्ट्रीय जीवन की एकता व अखडिंता का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

मुसिमानों के आिमण तथा ह दिंओुं द्वारा शौयपूसण सप्रनतकार

ह दिंसुथान के लोग सुख-समृदृध् के आनदिं में मग्न ोकर, सदा के शलए सुरक्षक्षत ोनेके भ्रम में र ने के अभ्यस्स ो चुके थे। ऐसी घिनाएँ इतत ास में कई बार इससे पूव तभी ो चुकी ैं। जब गजनी के म मूद ने शस्िु को पार

ह दिंतुव 37 **करते े ुए शसिंसुथान पर आक्रमर् ककया, तब नीदिं में कुछ बा् उत्पन्न ुई तथा ह दिंसुथान भय से जाग्रत् ् ो उठा।**

ह दिंसुथान के िोग सुख-समृद्चध के आनदिं में मनन ोकर, सदा के लिए सुरक्षक्षत ोने के भ्म में र ने के अभ्यस्त ो िुके थे। ऐसी घटनाएँ ँइनत ास में कई बार इससे ेपूव सभी ो िुकी ैं। जब गजनी के म मूद" ने लसधिं ु को पार करते े ुए लसधिंुस्थान पर आिमण ककया, तब नीदिं में कुछ बाधा उत्पन्न ुई तथा ह दिंसुथान भय से जाग्रत् ् ो उिा। उसी हदन से जीवन-मरण का वास्तववक युद्ध प्रारिंभ ुआ, पर जब युद्ध करने का प्रसगिं आता ै, तभी 'स्वतः' की प िान अचधक स्पष्ट ो जाती ै। समान बिशिी शिु ुके कारण राष्ट्रीय एकता" बनाए रखने ेकी अथवा एक ववशिा राष्ट्र में एकजुटु की भावना ननमाणस करने की सभिंावना बढ़ जाती ै। इस आिमण के कारण लसधिंुसुथान को अचधक प्रभावी प्रेरणा इससे पूव समें कभी प्राप्त न िीं ुई थी। इससे पूव सकालसम के नेतृतूव में मुसिमान लसधिंु पार करने में सफि ुए थे, परिंतु उनका प्र ार सत ी या शरीर को स्पश सकरनेवािा था तथा इससे हृदय पर कोई आघात न िीं ुआ था। प्र ार करनेविो ेभी कुछ अचधक न िींकरना िा ते थे। ननणायसक सग्रिंाम का प्रारिंभ म मूद के साथ ुआ तथा इसका अिंत अब्दािी" से ुए युद्ध के पश्िात् ् ी ो सका। कई वर्षों, दशकों तथा शतकों तक य सग्रिंाम िि ता र ा और इस अववरत ििनेविो सग्रिंाम में अरबस्तान कुछ ी वर्षों में नामशेष ो गया। ईरान जिकर राख बन गया। लमस्र, सीररया, अफगाननस्थान (गजनी), बिूचिस्थान, तातारस तथा (स्पेन) ग्रानडा गजनी तक के राष्ट्र तथा सस्ंकृनत इसिाम के शानिंत प्रेमी (श्मशान शानिंत) खड्ग द्वारा सपिूंणतसः नष्ट कर दी गई, परिंतु इन देशों पर ननणायसक ववजय प्राप्त करने का श्ेरय न िीं लमिा। उन् ें पूणतसः नष्ट करने का श्ेरय उसे ेलमि सका, केवि उनपर आघात करनेका सतिंोष प्राप्त ुआ। प्रत्येक प्र ार पर जो घाव पड जाता व पुनः प्र ार करने के समय तक िीक ो जाता। पराक्जत िोगों की प्रनतकार- क्षमता ववजयी आिमण से अचधक प्रभावी तथा प्रबि लसद्ध ुई। ह दिंसुथान से अथवा ककसी एक जनशक्क्त से न िीं एलशया के अचधकतर राष्ट्र तथा उन् ें स ायता करनेविो सपिूंण सयूरोप के राष्ट्र सग्रिंाम में उपक्स्थत थे। अरबों ने लसधिं प्रातिं पर अचधकार कर लिया, परिंतु इससे कुछ अचधक करने की शक्क्त उनमें न िीं थी।

प्रत्येक प्र ार पर जो घाव पड जाता व पुनः प्र ार करनेके समय तक ठीक ो जाता। पराष्जत लोगों का य सग्रिंाम केवल एक जातत से, राटर की प्रततकार-क्षमता ववजयी आक्रमर् से अध्क प्रभावी तथा प्रबल शसद् ुई।

ह दिंसुथान का य सग्रिंाम केवल एक जातत से, राटर से अथवा ककसी एक जनिष्तत से न ीं ि ा था।

कुछ समय पश्िात् ्अपनी ी भूलम में स्वतिंत्र र ना अरबों के लिए असभिंव ो गया। ननकट भववष्य में एक स्वतिंत्र राष्ट्र के रूप में उनकी प िान न िींर ी, परिंतुअरब, पलशयसन, पिान, बिूिी, तातारस, तुकस, मुगि आहद के जागनतक स्वरूप में प्रिडिं झझिंावात से व्याप्त स ारा मरुस्थि से युद्ध करना पडा। धम सएक अत्यचधक प्रभावी शक्क्त ै। िूटपाट करनेकी ििािसा भी ऐसी ी एक प्रबि शक्क्त ै। जब य शक्क्त धमभसावना पर ावी ो जाती ै, तब उनके सयिंोग से एक भयाव दानवी शक्क्त उपजती ै। व मानव का स ि ार करती ै तथा प्रदेशों को जिाकर नष्ट कर देती ै। जब म मूद लसधिंु के पार आया तथा आिमण करते े ुए उसनेक्जस प्रकार भयकिंर

स िंार ककया, इस बात पर आश्यि स ुआ कक स्वग सतथा नरक इस काय सके लिए साथी कैसे बन गए। य भीषण स िंार कई शतकों तक िलता र ा और ह दिंसुथान को इसका सामना अकि े ी करना पडा। नैनतक तथा सैननक, दोनों ी दृक्ष्ट से इस िडाई के समय अकबर ने जब राजसत्ता सँभाि िी और दारालशको " का जन्म ुआ, तब ह दिंओु िंकी वास्तववक नैनतक ववजय ुई। अपनी खोई ुई नैनतक प्रनतष्ठा पुनः प्राप्त करने ेतु औरिंगजेब ने क्जस पागिपन का स ारा लिया, उससेतो अपनी सैननक- श्रेष्ठता भी खो देनेका खतरा उसके समक्ष उत्पन्न ो गया। अतिंतः सदालशवराव भाऊ ने मुगि लस िंासन को थौडेके प्र ार से खडिं-खडिं कर हदया। पानीपत की िडाई में ह दिंओु िंको पराक्जत ोना पडा, परिंतु इस सपिूंण सयुद्ध में जीत इन् िंकी ुई। तत्पश्ाति् ्मरािों ने अटक पर

ववजयी ह दिंू ूध्वज फ राया। लसखों ने इसी ध्वज को लसधिंुपार से जाते े ुए इसे ेकाबिु में गाड हदया। (सावरकर समग्र, खडिं ३ के, ह दिंपूदपादशा ी, ग्रथिं में इसका ववरण अचधक ववस्तार से हदया गया ै।)

नैततक तथा सैतनक, दोनों ी दृष्टि से इस लडाई के समय अकबर ने जब राजसिा सँभाल ली और दाराशिको का जन्म ुआ, तब ह दिंओु िंकी वास्तववक नैततक ववजय ुई। अपनी खोई ुई नैततक प्रततटठा पुनः प्राप्त करने ेतु औरिंगजेब ने ष्जस पागलपन का स ारा शलया, उससे तो अपनी सैतैनक-श्रेटठता भी खो देनेका खतरा उसके समक्ष उत्पन्न ो गया।

ह दिंतुवकाआत्मसाक्षात्कार

शस्ि्ुसे सागर तक की भूशम म लोग की जन्मभूशम ै - य माननेवाले तथा शस्ि्ुके इस ति पर तनवास करनेवाले लोगों को स्पटि रूप सेज्ञात ो गया कक इस भूशम को एक ी नाम ह दिंसुथान से प चाना जाता ै। ह दिं ू ोनेके कारर् म लोगों के ित्रुओ िंके मन में मारे प्रतत दवेषेभाव था।

इस भीषण तथा सुदी िा में जो युद्ध ुए, उनके पररणामस्वरूप म सभी िोगों को ह दिं ू ोनेकी अपनी प िान अचधक स्पष्ट रूप सी गई। इनत ास िा में पूव समें ऐसा कभी न ीं ुआ था। सपिूंण सराष्ट्र एक समान राष्ट्रीय भावना से जुड गया। य भिूना उचित न ीं ोगा कक मनेअब तक केवि ह दिंओु िंकी गनतववचधयों का ववचार एकात्म रूप से ी ककया ै। ऐसा करते ेसमय ह दिं ूधम सके अनतररक्त ह दिंतुव में समाववष्ट ककसी अन्य कम सका अथवा पथिं का ववकार अलभप्रेत में न ींथा। सनातनी," सतनामी, लसख, आय,स" मरािा ब्राह्मण, पििंम आहद सभी ने ह दिं ूक िाते ुए ी पराजय स्वीकार की थी तथा ह दिं ूबनकर ववजय भी प्राप्त की। म िोगों ने इस भूलम के तथा जानत के अन्य सभी नाम त्यागकर 'ह दिं'ू तथा 'ह दिंसुथान'- इन् िंनामों को सुप्रनतक्ष्ट्ति ककया। आयावसत सदक्षक्षणापथ अथवा जबिंद्वीप और भारतवष स म िोगों की राजनीनतक अथवा सास्िंकृनतक ववशेषताएँ ँस्पष्ट रूप से प्रकट करने ेतु असमथ सलसद्ध ुए। ह दिंसुथान नाम में सामथ्य सववद्यमान थी। लसधिंु ुसे सागर तक की भूलम म िोगों की जन्मभूलम ै- य माननेविो तथा लसधिंु के इस तट पर ननवास करनेविो िोगों को स्पष्ट रूप सेज्ञात ो गया कक इस भूलम को एक ी नाम ह दिंसुथान से प िाना जाता ै। ह दिं ू ोनेके कारण म िोगों के शिुओ िंके मन में मारे प्रनत द्वेषेभाव था। इस कारण अकस्मात् ्कटक से अटक तक

की जानतयों को, पथिीं को तथा मूल्यों को एक साथ सक्म्मलित करनेविाा एक राष्ट्र अक्स्तत्व में आया। इस

सेम्थाणिग्क्नाजीा ंगे ेकक ई.स. १३०० से १८०० तक कश्मीर से सिीीन तक तथा लसधिुं गनतववचधयाँ ँतथा घटनाएँ घटी िवे कभी एक-दूसूरे से सबिंद्ध थिीं तो कभी उनमें अन्यान्य समानता हदखाई देती थी। इनसे ेराष्ट्र की अलभन्नता तथा एकरूपता स्पष्ट रूप से प्रकट ुई। इन गनतववचधयों तथा घटनाओंका सूक्ष्म अध्ययन करते े ुए उनकी ऐनत ालसक मीमासिां अथवा समिीोन अभी तक न िींककया गया ै। इसका कारण य था कक ह दिंसुथान की प्रनतष्ठा तिथा स्वातत्र्यि अबाचधत केवि ह दिंसुथान की ी न िीं, अवपतु सारे ह दिंतुव की सस्कृिनत तथा सावजसननक जीवन से जुडी एकता को प्रस्थावपत करने का काय सअचधक म त्वपूण ससमझा गया था। इसी ह दिंतुव के लिए सैकडों रणभूलमयों पर युद्ध करना पडा तथा र प्रकार की राजनीनतक युक्त का भी प्रयोग करना पडा। 'ह दिंतुव' शब्द मारे सपूिंण सराजनैनतक जीवन की रीढ़ की ड्डी बन गया। इतना कक कश्मीर के ब्राह्मणों की यातनाओं से मिाबार के नायरों की आँखें अश्रुपूररत ो जाती।ि म िोगों के स्तुनतपाक कववयों ने ह दिंओु िकी पराजय पर शोक काव्यों की रिना की। भववष्य-द्रष्टाओंने ह दिंओु िकी भावनाएँप्रज्वलित किीं। वीर योद्धाओंने युद्ध ककए, सतिं-म ात्माओ िने ह दिंओुंके प्रयासों को शुभाशीष हदए। राजनीनतक नेताओंने ह दिंओु ि के परमोच्चि भिववतव्य को साकार ककया। म िोगों की माताओंने युद्ध में जख्मों को स िाया। ह दिंओुंके परिाम तथा हदक्नवजय से उनकी आँखें आनदिंाश्रुओ िसे भर आईं।

मारे इन कथनों की पुष्टि करनेवाले तथा उनकी मान्यता प्रस्थावपत करनेवाले लोगों के उद्धर, जो म पूवजतों के ग्रथिों में ववदयमान ैं, उन् ें सक्षिंप में देना अथवा उन वचनों का उल्लेख करना सभिंव न िीं ै। यहद ऐसा करने के प्रयास एक पूरा मारे ककए जाते े ैं तो ग्रथिं बन जाएगा । ववेचन की दृष्टि से य ब ुत आकषकत प्रतीत ोता ै।

म त्वपूण सस्फूनतदसायक उद्धरण

मारे इन कथनों की पुक्ष्ट करनेविो तथा उनकी मान्यता प्रस्थावपत करनेविो उद्धरण, जो म िोगों के पूवजसों के ग्रथिों में ववद्यमान ैं, उन् ें सक्षिंप में देना अथवा उन विनों का उल्लेखि करना सभिंव न िीं ै। यहद ऐसा करने के प्रयास ककए जाते े ैं तो एक पूरा ग्रथिं बन जाएगा। मारे ववविेन की दृक्ष्ट से य ब ुत आकषकस प्रतीत ोता ै। परिंतु इस बात पर ध्यान देना सभिंव प्रतीत न िींोता, तथावप अनत योनय ह दिं ूव्यक्क्तयों के मुख

से अथवा उनकी रिनाओ िमें जो आवेशयुक्त तथा स्फूनतप्रसद विन प्रकट ुए ैं, उनमें से कुछ प्रनतननचधक रूप से उद्धृत करने में ी सतिोष का अनुभव करना आवश्यक ो जाता ै।

पृथ्वीराजरासो

चदिंबरदाई दवारा रधचत 'पृृथवीराज रासो' नामक म ाकाव्य के समतुल्य प्राचीन तथा अध्कृत अन्य ग्रथिं ह दी भाषा में आज तक शलखेगए नए व पुराने ग्रथिों में उपलब् न िीं ै। ऐतत ाशसक अनुसिं्न का य ी तनटकष स ै। इस रचना का केवल एक ी लघुकाव्य उपलब् ै.

दिंबरदाई द्वारा रचित 'पृथ्वीराज रासो' नामक म ाकाव्य के समतुल्य प्रािीन तथा अचधकृत अन्य ग्रथिं ह दी भाषा में आज तक लिखेगए नए व पुराने ग्रथिों में उपिब्ध न िीं ै। ऐनत ालसक अनुसधिंान का य ी ननष्ट्कष स ै। इस रिना का केवि एक ी िघुकाव्य उपिब्ध ै, परिंतु परम सौभानय और वविक्षण बात य ै कक प्राकृत भाषा में रचित इस आद्य काव्य में ह दिंसुथान का उल्लेख ज्विितं देशालभमान से ककया गया ै।

दिंरबरदाई के वपता वेन कवव पृथ्वीराज के वपता को, अथात् अजमेर के राजा को सबिंोचधत करते े ुए क ते ै-

अिल ठिा मह पाठ, अिल तारागढ़थानिं।
अिल नग्न अजमेर, अिल ह दिंव अस्थान ि
अिल तेज परताप, अिल लकिंगढ डडिंडय
अिल आप च ुवान, अिल भूशमजस मडिंडय
समरर भूप सोमेस नृपृ, अिल छत्र ओपै ैसुसर
कववराय वेन आसीस दे, अिल जगा िरफेस कर।

ह दी वाड्मय के आद्यकवव की मान्यता प्राप्त कवव के रूप में िदिंबरदाई का उल्लेख ककया जाना अपरर ाय स ो जाता ै। इस स्तुनतपािक ने, ह दिं ूने, 'ह दिंवान' अथवा 'ह दिं' शब्दों का प्रयोग इतनी स जता से तथा सतत ककया ै कक नयार शतक के पूव सभी ये सबिोधन मान्यता प्राप्त कर रोज के व्यव ार में भी रूढ़ ो िुके थे। मुसिमानों के आक्रमण से पूर्व ... इसलिए मुसिमानों द्वारा हदया ुआ य ननदिंाजनक नाम स्वीकारते ुए राजपूतों के लिए य आवश्यक न िींथा कक इस नाम का प्रयोग मारे राष्ट्र का नाम मानकर उसी नाम से म िोगों के राष्ट्र को सबिंोचधत करते ेतथा अलभमानपूवकस उसका प्रिार करते। ह दिंओु िंद्वारा श ाबुद्दीन को बाँधँकर िानेके पश्िात् ्उसे ेइस शत सपर मुक्त कर हदया गया कक पुनः म िगों की ओर आँखें उिकर देखेगा भी न ी।िं इस सबिंधिं में कवव क ता ै-

राखी पचिंहदन साह अदब आदर ब ु ककन्नो
सुज ुसेन गाजी सुपूत र्थयैग्रह हदन्नो
ककय िंसलाम ततनबार जा ु अपन्नेसुथान
मतत ह दिंपुर साह सष्ज्ज आऔ स्वस्थान

परिंतु ह दिंओु िके परम सौजन्य सीिक रास्ते ेपर श ाबुद्दीन िौटनेवािा न िीं था। व सतत आिमण करता र ा तथा सग्रािम ोता र ा। इससे देविोक के कि वप्रय नारद को अत्यचधक ष स ुआ ोगा।

जय ह दिंदुल जोर ुअ छुट्हि मीरर् भ्रम
मररक असमय अरबस्तान चला करन उदवसाक्रम

और पुनः

जुरे ह दिं ुमीरिं ब े खग्ग तारिं
मुखेमारिंमार क े सूरसारिं

तथा अिंत में

ह दिं ुम्लेच्छ अ ा**ष्अ घाष्अन**
नचिैं नारद युद् चायन !!

ह दिंओुंको िकुिकर नामशेष करने के श ाबुद्दीन के प्रयास भी सफि न िीं ुए। एक हदन प्रद्युम्न राम द्वारा श ाबुद्दीन का वध करने की वात्तासहदल्िी मेंप ँुिी और सपूंण सहदल्िी नगर 'न भूतो न भववष्यनत' ष से नािने िगा। म िोगों के राजराजेश्वर पृथ्वीराज का अलभनिंदन उस सपूंण सनगर द्वारा ककया गया।

आज भाग च ुआन घर। आज इन भाग ह दिंवुान ि**॥**
जीववत हदल्लीचवर। गजिं न सतके आन ॥

आज तक अनेक बार शपथ िेकेर उन् ें तोडनेवािा श ाबुद्दीन पुनः शपथ िेकर मुक्त ो गया था और उसनेपुनः ह दिंसुथान पर भयिंकर आिमण ककया था। एक बार झपटकर व हदल्िी तक भी प ँुि गया था। ह दिंपनत पृथ्वीराज ने तत्काि अपनी युद्धमिंडि की सभा आमिंत्रित की। श ाबुद्दीन ने उद्धततापूवकस युद्ध के लिए ििकारा, रावि और सामतिं का िोध भडक उिा। मुसिमान दूत को वववाद करते ेसमय उसे ेस्मरण हदिाते े ुए क ा कक शा ने कई बार म िोगों के पैरों की धूि िाटी ै।

तनलज्तज म्लेच्छ लजे ेनह ि**। म ह दिं ुलजवान** ि**॥**

अिंतः व भीषण हदन समीप आनिेगा। अब अनथकसारक, भीषण ननणायसक युद्ध ोगा- इसे ेदोनों पक्ष ननक्श्ित रूप से समझ गए। म्मीर ने क्जस हदन ववश्वासघात ककया, उसी हदन ििंबरदाई स्तुनतपािक दुगाुदेसवी के समक्ष उपक्स्थत ुआ; उसनेकरुण रस पररपूिु, परिंतु देशालभमान की यािना करते े ुए ननम्न प्राथनसा स्तोि के रूप में सादर की-

द्रगे ेह दिंरुाजान बदीन आयिं

जैप जाप जालरिं् तू स ाय िं

नमस्ते ेनमस्तेइ जालिंर्ानी

सुरिं आसुरिं नागपूजा प्रमानी ॥

इस सग्रिंाम का जो भयकिंर ननणयस ुआ, उसका तथा उसके पश्ाति् ्िदिंबरदाई की क्जस ितुर युक्त से पृथ्वीराज ने श ाबुद्दीन का वध ककया, उसका समग्र वणनस करते े ुए युद्ध में मरनेविोउस ह दिंू ूसम्राट् को अपनी अत्यतिं हृदयस्पशी श्रद्धाजिंलि अवपतस करते े ुए कवव ने अपना काव्य पूण सककया ै-

त्न ह दिंु ुप्रधथराज, ष्जन रजवट्उजाररय

त्न ह दिंु ुप्रधथराज बोल कशलमइझ उगाररय

त्न ह दिंु ुप्रधथराज जेन सुवव ासधर्यिो

बारबार ग्रह मुष्तक अतिंकाल सर बधर्यिो ॥

मुसलमानों दवारा हदया ुआ य तनदिंजनक नाम स्वीकारते ुए राजपूतों के शलए य आवचयक न िंथा कक इस

माके सत्तरमवमाोगमाम मानकर उसी नाम से म लोगों के राटर को सबिंोध्त करते ेतथा अशभमानपूवकत उसका प्रचार करते। ह दिंओ्ु िंदवारा ि ाबुददीन को बाँक्र लानेके पचचात् ्उसे ेइस ित तपर मुतत कर हदया गया कक पुनः म लोगों की ओर आँखें उठाकर देखेगा भी न ीिं

श्री रामदास स्वामी का गूढ़ स्वप्न

'रासो' में भारत शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों पर म ाभारत के लिए ककया गया ै, परिंतु 'भारतवष'स इस अथ समें इसका उपयोग कम ी ुआ ै। य बात ध्यान देने योनय ै। य बात मारे अत्यतिं प्रािीन प्राकृत ग्रथिंों में हदखाई देती ै। म ान् ्ह दिंवी िानिंत के बारे में तथा ह दिंओिंु की स्वतिंतिंता के लिए मरािों ने जो युद्ध ककए, के बारे में प्राकृत वाङ्मय में पढ़ने ेको लमिता ै। ह दिंवी िानिंत के ज्ञाता तथा श्रेष्ट्अिचधकारी उपदेशक समथ स रामदास ने उन् ोंनेदेखे ुए एक स्वप्न का उर्लेख्ि भववष्ट्यसिूक काव्य में हदया ै। इस स्वप्न के अचधकाशिं सत्य ोने की बात भी क िीं ै-

स्वप्नी जे देखखले ेरात्री, ते ते तैसैधच ोत से

ह डिंता कफरता गेलो, आनदिंवन भूवनी ॥ १॥

बुडाले सवहत पापी ह दिंसुथान बळावले े

अभतताचिंा क्षयो झाला, आनदिंवन भूवनी ॥ २ ॥

कल्पातिं माडिंडला मोठा, म्लेच्छ दैत्य बुडावया
कैपक्ष घेतला देवी, आनदिंवन भूवनी ॥ ३ ॥
येथून वाढला म्,त राजम् तसमागमे े
सतीोष माडिंडला मोठा, आनदिंवनभूवनी ॥ ४ ॥
बुडाला औरिंग्या पापी, म्लेच्छ स िंार जा ला
मोडडली माडिंडली छत्रे, आनदिंवन भूवनी ॥५॥
बोलरेवाउगे े ोतेचालरेपाह जेबरे
पुढे घडेल ते खरे, आनदिंवन भूवनी ॥ ६ ॥
उदिंड जा ले ेपारी, स्नानसध्यिा करावया
जपतप अनुटठाने, आनदिंवन भूवनी ॥ ७ ॥
स्मरले शलह लेआ े, बोलता चालता री
रामकता तरामभोतता, आनदिंवन भूवनी ॥८॥

लशवाजी म ाराज का भक्तकवव-भूषण

देश की एक सीमा से दूसूरी सीमा तक यिाा करते े ुए क्जन् ोंनेह दिंुओिंको कृनत करने ेतु जाग्रत् ्ककया तथा मुक्त युद्ध करने तथा उसमें यशस्वी ोनेके लिए स्फूनत सदी, उन राष्ट्रीय स्तुनत पिाकों में राष्ट्रीय स्तुनतपिा के रूप में अत्यतिं ववख्यात कवव भूषण ने औरिंगजेब से इस प्रकार का प्रश्न पूछा-

लाज रौ शिवजीसे ेलरौ सब सैयद सेख पठान पठायके
भूषन यिांगढकिोन ारे उ ा तुग तयों मठ तोरे ररसायके ॥

ह दिंू ूके पतत सोन ववसात सतावन ह दिंू ूगरीबन पायके।
लीजैकलकिं न हदल्लीके बालम आलम आलमगीर क ायके ॥

एक अन्य स्थान पर भूषण लिखता ै -

'जगत् ्में जीते ेम ावीर म ाराजन ते'
'म ाराज बावन ँूँ, पातसा लेवोने॥
पातसा बावनौ हदल्ली के पातिा हदल्लीपतत
पातसा जीसो ह दिंूपूतत सेवा ने
दाढी के रखैयन की दाढ़ीसी र तत छातत
वाढी जस मयादत दद ह दिंवुाने की

कहढ गतय रयततके मनकी कसम शमि गई
ठसक तमाम तुरकाने की
भूषर् भनत हदल्लीपतत हदल क् लका सुतनसुतन
[क शसवराज मरदाने ेकी
मोठी भतय चडिंड बबन चिोंी के चबाय सीस
खिोंी भई सपिंतत चकताके" घरानेकी

(गरीब दीन गुसाइयों को, लभखमगिों को पीडा प ँुँिाने से तथा ह दिंओु िंके मि-महिंदरों को नष्ट करने में े औरिंगजेब ! तुम इतनी बडाई क्यों हदखातो ? प्रत्यक्ष ह दिंूपूनत से सग्रिंाम करने का धैयै सतुममें न िीं ै, ह दिं ू सम्राट् लशवाजी ने तुम् ारा घमडिं तोड हदया। तथावप ववश्ववववजेता, अथात्स ्ओिमगीर का असत्य खखताब अपने नाम के साथ जोडने का िाछिंास्पद काय सतुम करते ेर े ।)

लशवाजी म ाराज के परिाम के ववषय में भूषण गाता ै-

राखी ह दिंूवानो, ह दिंूवान के ततलक राख्यो
स्मृतृत और पुरार् राख्यो वेद ववी् सुतन मै
राखी रजपूती राजा्नी राखी राजन की,
ऱामे ेर्म राख्या, राख्यो गुर् गुऱ्ी में
भूषर् सुकववजीतत दद मर ट्ककी देस-देस
कररतत बखानी तब सुतन मै
सा ी के सुपूत शिवराज समसेरे तेरी हदल्लीदल
दाबीक दीवाल" राखी दुतुन मै ॥

छिसािकागुण गान

शिवाजी राजा तथा उनके दि के वीरों ने वीरता व पराक्रम के जो काय तककए थे, उनके सबंि् मेंं ह दिंसु्थान के सभी स्वकीय ह दिंओु िंके मन में अशभमान तथा प्रिसिंा की भावना ववदयमान थी।

लशवाजी राजा तथा उनके देश के वीरों ने वीरता व परिाम के जो काय सककए थे, उनके सबिंधिं में ह दिंसु्थान के सभी स्वकीय ह दिंओु िंके मन में अलभमान तथा प्रशसिंा की भावना ववद्यमान थी। भूषण मरािा न ी िं था, तथावप लशवाजी राजा से बाजीराव तक के मरािा योद्धाओिं द्वारा ककए गए ओिमणों को अपनी जानत के बाधिंवों द्वारा ककए। ुए ओिमण मानकर उनपर व गव सका अनुभव करता था-ऐसा प्रतीत ोता ै। व एक सच्िा तथा कट्टर ह दिं ूथा। ओित तक व अखखि ह दिं ूआदिंोिन का म त्त्व बडे नेताओिं को समझाते े ुए उसी

ह दिंतुव 45 प्रकार के स्फूनतप्रसद तथा प्रभावी काव्यों की रिना करता र ा। भूषण कवव का अन्य वप्रय पुरुष था

बुदिंखिडिं का

छिसिा-

ैवर" रट्ि" साष्ज गैवर" गरट्ि" सम पैदर थट्ि फौज तुरकानिंकी
भुषर् भनत रायचपिंततको छत्रसाल रोप्यो रनख्याल

छिसिा की जो मह मा य ाँ ँवखणतस की गई ै, उसमें असत्य का अिंश भी न िीं ै। लशवाजी, राजलस िं, गुरुगोववदिंलस िं आहद के समान छिसिा वास्तव में ह दिंओुिंकी रक्षक ढा था। व स्वयिं को 'ह दिंओु िंका रक्षक' क िाता था। छिसिा क ता ै-

ह दिं ुतुरक दीन ै गाये। ततनसो बैर सदाचशल आये ॥
लेख्यो सुर-असुर नको जैसो। के रर कररन बखानो तैसो ॥
जबतिे ा तखत पर बैठै। तब ते ह दिंनु साँ ँउर डाठे ॥
स गेकर तीरथतन लगाये। वेदे आपके धचि कक चा ी ॥
आठ पातिा ी झुक झौरे । सूबतन बाँध् डाडिं के ले छौरे ॥

छिसिा तथा लशवाजी की ऐनत ालसक भेंट के समय लशवाजी ने उसे ेप्रोत्साह त ककया तथा उनको गौरवाक्न्वत करते े ुए क ा, 'तुम छिी लसरताज । जानत अपनी भूलमको करो देश को राज || य बुदिंिा वीर जब बुदिंखिडिं के प्रबि राजपूत सुजान लस िं सेलमिा, तब सुजान लस िं ने तत्कािीन राजकीय क्स्थनत का ब ुत हृदयस्पशी वणनस ककया-

पातसा लागे करन,ह दिंूम तकौनासु
सुध् करर चपिंतरायकी बालइ बुदिंला सासु
जब तै चपिंतत करयौ पयानौ, तब तै परयौ ीन ह दिंवानो
लग्यो ोग तुरकजको जोरा, को राखेह दिंनु का तोरा
अब जो तुम कहि कसौ कृपानी, तौ कफरर चढ़े ह दिंमुख पानी ॥

इस कथन के पश्िात् ्सुजान लस िं ने अपनी समशीर तथा हृदय छिसिा को अवपतस ककया। उसे ेउसके अगिंीकृत काय समें सफि ोने के लिए आशीवादस भी हदए -

य कह प्रीतत ह य उमगाई। हदए पान ककरपान बा्ई
दोऊ ाथ माथ पर राखे। पूरन करौं काब अशभलाखे
ह दिंरम जग जाइ चलावौ। दौरर हदली दल लतन लावौ

छत्र प्रकिा)
(-

लसख गुरु तेगब ादुरु का ह दिंतुव के प्रनत प्रखर अलभमान

वदिंनीय गुरु तेगब ादुरु ने ह दिंसूवातत्र्यि ेतु िि र े युद्ध में न केवि रुचि िी, बक्ल्क वे उसमें प्रमुख रूप से सक्म्मलित भी ुए। पजिंाब में सग्रिंाम जारी रखा तथा उस युद्ध में अपनेप्राणों की आ ुनत भी िढ़ा दी। कश्मीर के ब्राह्मणों पर अत्यािार ककए जानेके पश्ाित् ्जब उनसेक ा गया कक या तो मुसिमान बनो या मरने के लिए तैयार ो जाओ, तब उन् ोंने तेगब ादुरु से सपिंकस ककया। तेग ब ादुरु से उसनेक ा-

तुम सुना हदजेसु हढग तुकेसु अबैसु इमगावो
इक पीर मारा ह दिंू ूभारा भाईचारा लख पावो
ै तेग ब ादुरु जगत उजागर आगर तुकत करो
ततसपाछे तब ी म कफर सबह बन ै तुरक भरा

(- पथिं प्रकिा)

(ब्राह्मणो ! तुम् ें पीडा देनेवािों से क दो कक मारा एक नेता ै तेग ब ादुरु। उसे ेप िमुसिमान बना िो। बाद में म भी मुसिमान बन जाएँगे े।)
जब देश और धम सके शिुिओं ने उसे िुनौती दी, तब उस वीर गुरु ने ननडरतापूवकस क ा-

ततन ते सुन श्री तेगब ादुरु । म् ततनवा न ववषे ेब ादुरु ॥
उिर भनयो कम त म ह दिंू ू। अतत वप्रय ककम करे तनकिं ु

(-सूय तप्रकिा)

(ये शब्द सुनकर गुरु तेगब ादुरु ने उत्तर हदया - प्राण सेभी वप्रय ह दिंू ूधम सकी अप्रनतष्ठा मि ैंन िींकर सकता।)

उन् िींके यशस्वी पिु गुरुगोववदिंलस िं, कवव, द्रष्टा तथा म ह दिंओु िंके लिए युद्ध करने का प्रण करनेवािा योद्धा अपनी कववता में क ता ै-

सकल जगत् ्में खालसा पथिं गाजे े
जगे ेह दिंुम तसकल भडिं भाजे े

(-ववधचत्र निाक, गुरगोववदिंशस िं कृत)

(खिासा पथिं का सविस प्रसार ो । ह दिं ूधम सचिरिंक्जत ो तथा सभी आडबिंरों का नाश ो ।)

म सभी ह दिं ू ैं। सपिूंण सदक्षक्षण प्रदेश पर यवनों का अचधकार ो ्िका ै। उन् ोंने धमस्सथिों को ानन प ँ ुँ्िाई। ह दिं ूधम सनष्ट ककया। प्राणों की बाजी िगाकर इस धम सकी रक्षा करनी ोगी। नई दौत प्राप्त करनी ोगी। य करने के पश्िात् ्ी अन्न सेवन करेंगे। 'य माग सउत्तम ै, परिंतु इस काय समें सफि ोना अत्यतिं कहिन ै। इस काय स ेतु प्रनतक्ष्ट्ति व्यक्क्तयों की आवश्यकता ोगी, ह दिं ूराजा तथा ह दिं ूसेनाएँ ँस ायता करने ववलभन्न स्थानों पर उपिब्ध ोना आवश्यक ै। ईश्वर की कृपा तथा लसद्ध पुरुषों के आशीवादस से ी य ककया जा सकेगा।' इस प्रकार का उपदेश म ि्तुर तथा ववश्वासपिा दादोजी ने हदया था।

कफर भी दादोजी कोंडदेव इस प्रिडिं आदिंनि का प्रमुख मागदसशकस था। सन् ्१६४६ में युवा लशवाजी ने अपनेएक युवा देशप्रेमी स कारी के नाम य खत लिखा-

'शा के प्रनत आप िोग बेइमानी न िींकर र े ैं। मिू कुिदेवता स्वयभिूं ै, में उसी ने यश हदया ै। भववष्य में ह दिंवी राज्य की स्थापना के रूप में म िोगों के मनोरथ भी पूरे ोंगे। य राज्य स्थावपत ककया जाए, ऐसी 'श्री' की इच्छा ै।'

म ान् ्इनत ासकार श्री राजवाडेके पास इस पि की मिू प्रनत ै। उसका अविोकन करने से में ऐसा प्रतीत ुआ कक इस पि के रूप में सि वें, अिार वें शतक में ह दिं ूस्वराज्य-स्थापना के लिए ुए आदिंनि की मिू आत्मा के ी दशनस में ो र े ैं।

म ान् ्इतत ासकार श्री राजवाडे के पास इस पत्र की मूल प्रतत ै। उसका अवलोकन करने से में ऐसा प्रतीत ुआ कक इस पत्र के रूप में सत्र वें, अठार वें ितक में ह दिं ूस्वराज्य-स्थापना के शलए ुए आदिंोलन की मूल आत्मा के ी दिनत में ो र े ैं।

शिवाजी राजा का ह दिं तु व का आदिं ोलन

'जो ककले ेआप चा ते ैं, वे आपको सौंप दूँगा। आपका ध्वज भी उनपर फ राऊँगा, परिंतु मुसलमानों यि न हदलाइए। म ैंह दिं ू ँ ँ तथा आप राजपूत अथात् ्ह दिं ू ी ैं। य राज्य मूलतः ह दिंओुंका ी ै। ह दिं ूप्रतक्षको सम्मुख ित बार नतमस्तक ो सकता ँ ,ू परिंतु ष्जस काम से हमदिंतकी अवमानना ोती ै, व काम म ैं कदावप न िींकरूँगा।'

लशवाजी और उनके द्वारा िाए गए राज्य के आदिंनि को िकुिने ेतु जब राजपूत सरदार जयलस ि ने अिोमण ककया, तब लशवाजी के प्रनतकार की उग्रता कुछ कम ो गई। ह दिंतुव की रक्षाविी ढिा अपने

स धलमयसों के, ह दिंूमीय बाधिंवों का रक्त ब ाने ेतु तथा मुसिमानों को ववजयी बनाने के लिए कहटबद्ध ो गई, तब प्रतीत ुआ कक य ब ुत उद्वेग बढ़ानेविी घटना ै। लशवाजी ने जयलस िं को लिखा-

'जो ककिे ेआप िा ते ैं, वे आपको सौंप दूँगा। आपका ध्वज भी उनपर फ राऊँगा, परिंतु मुसिमानों को यश न हदिाइए। म ैंह दिंू ू ँूँू तथा आप राजपूत अथात्स ्ह दिंू ू ी ैं। य राज्य मूित: ह दिंुओंका ी ै। ह दिंू ू धमरसक्षकों के सम्मुख शत बार नतमस्तक ो सकता ँूँू, परिंतुक्जस काम से ह दिंू ूधम सकी अवमानना ोती ै, व काम म ैंकदावप न िींकरूँगा।'

जयलस िं पर इस पि का ननस्सदिं प्रभाव पडा। प्रत्युत्तर देते े ुए उसनेलिखा, 'औरिंगजेब बादशा पृथूवीपनत ै। स्वय िंकी तुिना उससेमत कीक्जए। शुितापूण सव्यव ार से इस समस्या का समाधन न िीं ोगा। म ह दिंू ू ैं तथा जयपुर नरेश भी ह दिंू ू ी ैं। म िोग ह दिंू ूधम सस्थापना के तुम् ारे काय सके समथकस ैं।'

लशवाजी के नेतृतूव में उससेआप सुि कर िीक्जए। ह दिंू ूसत्ता का उदय ुआ था। उसके कारण सपिूंण स ह दिंुसुथान के ह दिंुओु िंके मन में एक नया िैतन्य उपजा । अत्यािार तथा अन्याय से पीडडत अभागे िोगों को लशवाजी एक उद्धारक तथा प्रनत अवतारी पुरुष प्रतीत ुए। मुसिमानों की दासता के जोत के निी िेस्त ोकर छटपटा र े सावनूर क्िे के ननवालसयों ने उसे ेएक प्राथनसापि प्रेवषत ककया, 'य यूसुफ ब ुत प्रजापीडक ै। क्स्ियों तथा बािकों पर अत्यािार करता ै। गोवध जैसेननदंयि कृत्य भी सतत करता र ता ै। म िोग उसके साथ र ते े ुए ऊब गए ैं। आप ह दिंू ूधम सके सस्थिापक तथा म्िेच्छों का नाश करनेविो ।ैं इस कारण म िोगों ने आपसेसपिंकस ककया ै। म िोगों पर ननगरानी रखी जाती ै। वे मारा अन्न- जि बदिं कर म िोगों का वध करना िा ते ैं। इसीलिए तुरत प ँिुं जाइए।'

ावुर का मुसिमानों की सत्ता भववष्य में स्वीकार न िींकरनेकी प्रनतज्ञा करने के पश्िात् ्लशवाजी ने तजिं राज्य अपने भाई व्यकिंोजी को हदया तथा व ाँकी जागीर भी उसे ेप्रदान की। उस समय लशवाजी ने लिखा, 'ह दिंुओु िं का द्वेष करनेविो दुष्ुटों को अपनेराज्य में स्थान न िींदेना।'

स्वतत्रिंता के शलए न्ाजी तथा उसके भाई का काय तसम्मातनत करने ेतु छत्रपतत राजा राम ने बह जी को अत्यतिं

सम्मानसादक तथा प्रततटठा देनेवाली 'ह दिंूराव' उपाध् से सम्मातनत ककया। उस समय ष्जजिं बा र आनेकी इच्छुक मराठा सेना उसी समय मुगल सेनाध्काररयों की ओर से युद् करनेवाले मराठों को अपनी ओर आकवषत करने ेतु प्रयास कर र ी थी।

मरािों द्वारा की गई ह दिं वी िािनिं त

नागोजी राजा मुसलमानों की सेना सेअलग ो गया। मोरचे ेउठवा शलये तथा पाँचँ जार की फौज लेकेर ि र में आ गया। शिके मुगलों के अी्न ो गए (तयोंकक साभिंजी दवारा उनका सत्यानिा ककया गया था), इसी समय

म लोगों के तीन पुरषों को मुगलों ने ाथी के पैरों तले कुचलवा हदया था, ' म लोग ह दिंओुंकी दौलत के शलए युद् कर र े ैं, आप भी इसके भागीदार ों।'

स्वतिंता के लिए धनाजी तथा उसके भाई का काय ससम्माननत करने ेतु छिपनत राजा राम ने बह जी को अत्यतिं सम्मानजनक तथा प्रनतष्ठा दैनेविी 'ह दिंरूाव' उपाचध से सम्माननत ककया। उस समय क्जजिी का घेरा तोडकर बा र आनेकी इच्छुक मरािा सेना उसी समय मुगि सेनाचधकाररयों की ओर से युद्ध करनेविो मरािों को अपनी ओर आकवषतस करने ेतु प्रयास कर र ी थी। एक उदा रण इस प्रकार का ै, 'नागोजी राजा से सपिंकस ककया ै कक आप म िोगों का साथ दीक्जए। इससे म िोग इस सेना को नष्ट कर सकते ैं। व ाँके िोगों से सबिंधिं-ववच्छेद करो तथा म िोगों सेलमि जाओ। इसी प्रकार म िोग ह दिं ूधम सकी रक्षा कर सकेंगे।'

नागोजी राजा मुसिमानों की सेना से अिग ो गया। मोरि ेउिवा लिये तथा पाँच जार की फौज िेकर श र में आ गया। लशके मुगिों के अधीन ो गए (क्योंकक साभिंजी द्वारा उनका सत्यानाश ककया गया था), इसी समय म िोगों के तीन पुरुषों को मुगिों ने ाथी के पैरों ति ेकुचिवा हदया था, ' म िोग ह दिंओुंकी दौित के लिए युद्ध कर र े ैं, आप भी इसके भागीदार ों।' तब लशके भी मरािों से लमि गए। राजाराम शिु का घेरा तोडकर ननकि गया।

शा ू तथा सवाई जयलस िं में इस बात पर वववाद ुआ कक उनमें से ह दिं ूधम सकी रक्षा करने ेतु ककसने अचधक काम ककया था। य एक लमितापूण सववववाद था। (सरदेसाई-मध्य ववभाग) बाजीराव तथा नाना सा ेब के समय की पीहढ़यों में भी इसी तर की िुनौतीपूण सस्पधास थी। एक इनत ासकार लिखता ै, 'ब ुत से िोगों ने बाजीराव के काय सका अनुकरण ककया तथा उसे ेआगे ेबढ़ाया। ब्रह्मेंद्र स्वामी, गोववदिं दीक्षक्षत आहद सपिंूण सभारत की यािा का अनुभव प्राप्त करनेविो साधु-सतिंों के मन में 'ह दिं ूपदपादशा ी' की भावना उत्पन्न ो गई थी। वे सभी अपने लशष्य वग सको इसी भावना सेउपदेश देते ेथे। बाजीराव ने स्वय िंक ा ै, 'ऐसे क्या देख र े ो? जोरदार आिमण करते े ुए आगे ेबढ़ो। 'ह दिं ूपदपादशा ी' की स्थापना अब अचधक दूरू न ीिं ै।'

(बाजीराव)

ह दिंूपद्ूपादशा ीकीधाक

मथुराबाई ने स्वामीजी को शलखा ै, 'िकिंराजी मोह ते,े गरोजी शिदिं, खडिोजी नालकर, रामाजी खराडे, कृटराजी मोड आहद सम्मान्य सरदारों ने राटर की रक्षा करते े ुए िमलों (ष्ब्यिों) को पराभूत ककया तथा कोंकर् में शस्ि्ुदगु तपर अपना अध्कार बनाए रखा।'

उस समय के प्रमुख चितिंकों में ब्रह्मेन्द्र स्वामी" का उच्तिम स्थान था। ह दिं ूधम सका समि ूनाश ज ो ँ ें ो र ा ै, व ोँजाना उन् ें उचित प्रतीत न िीं ुआ। ह दिं ूसाम्राज्य में ईश्वर तथा ब्राह्मणों पर अत्यिाार ककए जाने की बात ककतनी िज्जास्पद ै, इससे स्वामीजी ने शा ूको अवगत करा हदया।

(सरदेसाई)

मथुराबाई ने स्वामीजी को लिखा ै, 'शकिंराजी मोह ते, गणोजी लशदिं, खडिंजी निाकर, रामाजी खराडे, कृष्णाजी मोड आहद सम्मान्य सरदारों ने राष्ट्र की रक्षा करते े ुए शामिों (क्ब्शयों) को पराभूत ककया तथा कोंकण में लसधिं ुदुगु सपर अपना अचधकार बनाए रखा।' मथुराबाई आग्रिं ेके पि अत्यतिं ज्वितिं देशालभमान से पररपूण सतथा आवेशपूण स ैं। म ान् ्ह दिंसुथान का वास्तववक मम सज्ञात करने ेतु इन पिों का अविोकन करना आवश्यक ो जाता ै।

पुतगसालियों ने गोवा में धम सकी आड िेकर िोगों को जो कष्ट हदए, व यूरोप में तेर वी िंव िौद वी िं शताब्दी में 'इक्न्क्वक्जशन "" नामक धमसस्थिा द्वारा रोमन कैथोलिक पथिं में ववश्वास न रखनेविे िोगों पर ककए गए घोर अत्यािारों के बराबर थे। जब उन् ोंनेह दिंओुं को धालमकस आिार-ववचध आहद करने पर रोक िगा दी, तब िोगों को उनके मिूभूत अचधकारों के प्रनत सिेत करानेविे अतिंाजी माणकेश्वर ने उनकी आज्ञा का स्वय िंउल्िघिंन तो ककया ी, अन्य ह दिंओु िंको भी इसके लिए प्रेररत ककया। व य बात भिीभाँनत जानता था कक दुबुिसों द्वारा प्रनतकार ककए जाने का अथ स ै दुबुिसों द्वारा भानय में लिखे ुए दु:खों को झिेतेर ना। तत्किीन दुबुिस पररक्स्थनत का सामना करने के लिए ककसी बाजीराव अथवा चिमाजी अप्पा जैसेबिवान् ्से स ायता प्राप्त करना आवश्यक था। ह दिंसुथान में पुतगसािव्याप्त प्रदेश में िािंत करनेविा यहद कोई था, तो व अतिंाजी माणकेश्वर ी था। उसनेह दिं ूनेताओिंकी स ानुभूनत बाजीराव को प्राप्त करवा दी। उसने मरािों पर वास्तववक रूप से दबाव डािा। चिमाजी अप्पा ने ननणायसक तथा सफि युद्ध द्वारा सारा ह दिं ूप्रदेश मुक्त कराया। अतिंाजी तो इस सारे आदिंोिन का सिूधार था।

(सावरकर समग्र, खडिं ७ के 'गोमातिंक' नामक काव्य में इन घटनाओिंका ववववरण हदया गया ै।)

इसी समय वसई में ार जाने के बाद नाहदरशा ह दिंसुथान पर आक्रमर् ककया और हदल्ली पर अध्कार कर शलया। बाजीराव के मराठा स्तकों ने उसे ेशलखा, 'त मलसपकुलीखान नामक व्यष्तत कोई ईचवर न िीं ै जो सपूंर् तववचव को किाकर नटि कर देगा। जबरदस्ती करनेपर ी व सधं् किर लेगा। अतः िष्ततिाली सेना के साथ य ाँ ँआ जाइए।

प्रथम बाजीराव पेशवा

परिंतु वसई पर ववजय प्राप्त न ोनेके कारर् बाजीराव समय पर न ििंप ँुच सके। 'ह दिंओु िके शलए बडा सकिंट उत्पन्न ो गया ै। इसी समय चीमस्त वसई पर जाओं अचधकार करना सभिंव न िीं
का चमेली के पार जाना आवचयक ै। उसे ेनाहदरिा को) इस पार (न िींआनेहदया जाए, ऐसी मेरी मान्यता ै ।'

इसी समय वसई में ार जाने के बाद नाहदरशा ने ह दिंुस्थान पर आिमण ककया और हदल्ली पर अचधकार कर लिया। बाजीराव के मराठा स्तकों ने उसेलिखा, 'त मिसपकुिीखान नामक व्यक्क्त कोई ईश्वर न िीं ै जो सपिंूण सववश्व को काटकर नष्ट कर देगा। जबरदस्ती करने पर ी व सचिंध कर िेगा। अतः शक्क्तशािी सेना के साथ य ाँआ जाइए। प्रारिंभ में जबरदस्ती और तत्पश्ात् सुिक । यहद सारे राजपूत तथा स्वामी (बाजीराव) आप एक ो जाएँ ँतो ननणयस ो जाएगा। समस्त ह दिं ूबुदिंआहद के एक स्थान पर एकि ोनेकी योजना बनाना उचित ोगा। नाहदरशा अब वापस न िीं जानेवािा ै। व ह दिं ूराज्य पर आिमण करेगा। रायाजी (सवाई जयलस िं) राणाजी को लस िंासन पर आरूढ़ कराने के पक्ष में ैं। ह दिं ूराजा सवाई आहद, स्वामीजी, आपके आिमण की प्रतीक्षा कर र े ैं। स्वामीजी द्वारा इस बात की पुक्ष्ट ो जाने पर जाटों की सेनाओिंको हदल्ली की ओर भेजकर सवाईजी भी हदल्ली की ओर प्रस्थान करेंगे।' (धोंडो गोववदिं का बाजीराव के नाम पि)

परिंतु वसई पर ववजय प्राप्त न ोनेके कारण बाजीराव समय पर न ििंप ँुिं सके। 'ह दिंओिंके लिए बडा सकिंट उत्पन्न ो गया ै। इसी समय चीमस्त वसई पर जाओं अचधकार करना सभिंव न िीं
का िमी के पार जाना आवश्यक ै। उसे े(नाहदरशा को) इस पार न िींआने हदया जाए, ऐसी मेरी मान्यता ै।'
(बाजीराव का ब्रह्मेंद्र स्वामी के नाम पि)

परिंतु उसका दृढ़ हृदय इन सभी सकिंटों का ननवारण करने में सक्षम था; व लिखता ै, ' म िोगों को परस्पर कि ों से बिना िाह ए (रघुजी को दिंडडत करनेका वविार), ह दिंुस्थान के ै।' लिए अब एकमेव शिु ु उत्पन्न ुआ ै। म ैंनमदसा पार करते े ुए सपिंूण समरिी सेना िबिंतिक फैिा दूँगा। कफर देखेंगेकक नाहदरशा ककस प्रकार निी उत्तर पाएगा।' (बाजीराव के पि)

सवाई जयलस िं अन्य नेताओिंके समान ी ह दिंुस्थान के पुनरुत्थान के आदिंोिन का कट्टर अलभमानी था। बाजीराव को मािवा आने के लिए उसनेप ि की, ताकक ह दिं ूस्वातत्र्यि सग्रिंाम व ाँतक प ँुिंिाना सभिंव ो सके। लशवाजी म ाराज की अनेक पीहढ़यों के अनुयानययों ने ह दिं ूपदपादशा ी का म ान् ्ध्येय अपनेसम्मुख रखा तथा उसका प्रिार सपिंूण सह दिंुस्थान में करने के लिए बाजीराव का मािवा में जाना ब ुत आवश्यक था। य ववद्वान्् स्वदेशालभमानी राजपूत अपनेएक पि में लिखता ै, 'लसचिंधश्री नदिंिािजी प्रधान व भाईजी िाकुर इिंदौर अमर गढसुम ाराजाचधराज श्री सवाई जयलस िंजी कृत प्रमाण बि जो सो आपको लिखते े ैं कक बादशा ने ढ़िाई की ै तो कुछ चिंतिा न ी।िं श्री परमात्मा पार िगावेगा। बाजीराव पेशवा से मने आपके ननसबत कहो-

विन करा लिया ै।' आगे पुनः लिखता ै, 'आपको क्जतनी शाबाशी दी जाए, कम ै। सब मिवा सरदारों के एक ोकर र ने से ह दिं ूधम सका कल्याण ोगा और मिवा में ह दिं ूधम सकी वृद्चध ोगी। इस बात पर ववचार कर

मिवा में मुसिमानों की नौमेदे कीक्जए और ह दिं ूधम सकायम रखें।' (जयलस िं का पि, २६ अक्तूबर, १७२१ खख.)

'श्रीमधदिंलालजी प्रा्न व भाईजी ठाकुर इिंदौर अमर गढसु म ाराजाधाज श्री सवाई जयशस िंजी कृत प्रमार् बच जो"सो आपको शलखतैं कक बादिा ने चढ़ाई की ै तो कुछ धचतिंा न ी।िं श्री परमात्मा पार लगावेगा। बाजीराव पिेवा से मनेआपके तनसबत कोल- वचन करा शलया ै।'

ह दिंस्वातत्र्यिकाअग्रणीनेतानानासा ब

पानीपत की युद्धूशम में बडी जन-न् की ातन ुई थी, परिंतु सवनतिा न िीं ुआ था, तयोंकक उस युद् में दो वीर बच गए थेतथा उन् ोंने ह दिंतुव का काय तसँभाल शलया था। वे थेनाना फडनवीस तथा म ादजी - ह दिं ू राजसिा की बुद्ध्, तलवार तथा ढाल!

ह दिं ूस्वातत्र्यि तथा ह दिं ूपदपादशा ी के इस म ान् ्युद्ध में ववख्यात ोनेविो वीरों में बाजीराव का पिु नानासा ब सवश्रेसष्ट् अग्रगण्य नेता था। उसके लिखे ुए पि एक स्वतिंि अध्ययन का ववषय ै। व ज ाँ उपक्स्थत र ता ै, व ाँ ँह दिंतुव का प्रिार करते े ुए हदखाई देता ै। ताराबाई को व लिखता ै, 'मुगि केवि ह दिं ू राज्य के शिु ैं, उनसे ेअच्छे सबिंधिं बनने की सभिंावना उत्पन्न ोनेपर म िोगों के सेवक उचित आिरण न ी िं करते। य दोष ै।' (नानासा ब के पि)

पानीपत की युद्धभूलम में बडी जन-धन की ानन ुई थी, परिंतु सवनसाश न िीं ुआ था, क्योंकक उस युद्ध में दो वीर बि गए थेतथा उन् ोंनेह दिंतुव का काय ससँभि लिया था। वे थेनाना फडनवीस तथा म ादजी - ह दिं ू राजसत्ता की बुद्चध, तिवार तथा ढि ! न पानीपत की भीषण पराजय के पश्ित् ्भी-उस तर का पराभव ोने के कारण ी-इन दोनों ने सतत िािीस सिा तक अपने ववचारों तथा कृनत से कठोर सग्रिंाम जारी रखा। पानीपत में ववजयी ोनेविों पर भी इतना जबरदस्त प्र ार ुआ था कक इसके फिस्वरूप ह दिं ू ी ह दिंसुथान के वास्तववक राजा लसद्ध ुए। इनत ास में जो सफि अपररवतनस ुआ था उसे ेस्पष्ट रूप से जान िेनो राष्ट्र के ववकास के कारण ी सभिंव था। ह दिं ूसाम्राज्य के ववषय में तथा ह दिंतुव के लिए जो ववश्वास मन में जागा था, उसके प्रमाण उस समय के बुद्चधमान तथा राजनीनतज्ञों की रिनाओंमें स्पष्ट रूप से हदखाई देता ै।

गोववदिंराव कािे का फडनवीस के नाम पि

नाना फडनवीस तथा म ादजी के परस्पर मतभेद पूणतसया समाप्त ो जाने से सपिूंण सम ाराष्ट्र वषतस ो गया, य वात्तासपेशवा के राजदूत गोववदिंराव किो ेके पास प ँ ुँ ुिते ी उन् ोंनेनानासा ब फडनवीस को एक पि लिखा- 'पि देखते े ी रोमाचिंति ो उिा। सतिुंष्ट भी ुआ, परिंतु पि में इसे ेववस्तारपूवकस न िीं लिख सकता। ऐसा करने से कई ग्रथिं बन जाएँगे ! अटक नदी के इस पार सेदक्षक्षण सागर तक ह दिंुओं ुका प्रदेश ै। तुकसस्थान न िीं

ि ैा। विंवी ौ ोर्वाोकिमीहद ीदत्रश्रृतिकिं र ी थी। उन् ोंनेइसका उपयोग ककया। उसके पश्ाति् ्के राजा नादान थे। यवन प्रबि बन गए। िकतों ने (बाबर के वशिंज) क्स्तनापुर पर अचधकार जमाया। अिंत में अिामगीर के राज में यज्ञोपवीत पर साढ़े तीन रुपए का जक्जया कर िगाया गया तथा खाद्य-पदाथ स ी खरीदने की पररक्स्थनत आ गई।

"उन हदनों में लशवाजी म ाराज ी धमरसक्षक लसद्ध एक किाशवासी नानासा ब तथा भाऊसा ब प्रििंड सूय सके समान अपूव सप्रतापी ुए। य सिू श्रीमान् ्के पुण्यप्रताप के कारण तथा राजेश्री पाहटिबुवा की बुद्चध तथा तिवार के परिाम के कारण घर में ुआ वैभव ै; परिंतुय ककस प्रकार सभिंव ुआ ? जो कुछ प्राप्त ुआ, उससे अचधक ी सुिभ ो गया। यहद कोई मुसिमान ऐसा करता तो उसकी ब ुत प्रशसिंा की जाती तथा इस घटना को ऐनत ालसक म त्त्व प्राप्त ो जाता। यवनों द्वारा की गई छोटी सी अच्छी घटना को प ाड समान बडी बताया जाता ै। म ह दिंू िोग आकाश क्जतनी बडी घटनाओिं ुका भी उल्ििेख न ी िं करते। य ी म िोगों की परिंतु प्रथा ै।' अिंभ्य घटनाएँ ुईं, य काफरशा ी ुई, ऐसा यवनों को प्रतीत ुआ-

'परिंतु क्जन् ोंनेलसर ऊँिा करनेका प्रयास ककया, उनके मस्तक काट हदए गए। अनपेक्षक्षत रूप से धन प्राप्त ुआ। उसकी व्यवस्था शककता सके समान करने के पश्ाति् ्उसका उपभोग करना आगे ेकी बात ै। क ी िं भानय साथ न िीं देगा तो क िीं ककसी को शापवाणी का प्रभाव ोगा। कुछ न िीं क ा जा सकता। जो काय स ुआ ै, व केवि राज्य अथवा भूलम प्राप्त करने तक ी सीलमत न िीं ैं। वेद-शास्ि रक्षण। गो-ब्राह्मण प्रतपािन, सावभसौमत्व की प्राक्प्त, नई कीनत सतथा यश भी सक्म्मलित ैं। इसे ेजतन से रखो। य अचधकार आपका तथा पाटिी बाबा का ै। उसमें कुछ बाधा उत्पन्न ोनेसे दोस्त दुश्ुमन बनकर बिशािी ो जाता ै। सदिंे दूरू ो गया। य अच्छी बात ुई। दुश्ुमन ननकट ी ववद्यमान ै। इसके कारण कुछ बिैन था। आपका पि पाकर चििंता दूरू ो गई।' (१७२३ खि.)

इतनी स ज-सुदिंर शैिी में लिखा गया य पि मारे इनत ास का अतिंरिंग दशनस क्जस उत्कटता से तथा वास्तववक रूप से स्पष्ट करता ै, उतना इनत ास के नीरस ग्रथिों में न िीं लमिता। इस िेखक द्वारा ह दिंू ूतथा ह दिंुस्ुथान - नामों की व्युत्पवत्त ककतनी स जता से दी गई ै ! मारी आखखरी पीढ़ी के पूवजस भी ह दिंू ूतथा ह दिंुस्ुथान-नामों सेककतना प्रेमे करते ेथे। ककतना भक्क्तभाव था, नामों से वे ककतने एकरूप ो िुके थे, इन बातों को य पि बडी ाहदसक भावना सेप्रकट करता ै। इसे ेलसद्ध करने के लिए अन्य प्रमाणों की आवश्यकता न ी िं ै।

म्रतक्षर् ककया। तत्पचचात् ्
उन हदनों में शिवाजी म ाराज ंम्रतक्षक शसद् ुए। उन् ोंनेदि के भाग में
तत्पचचात् ्कैलािवासी नानासा ब तथा भाऊसा ब प्रचडिं सूय तके समान अपूव तप्रतापी ुए। य सूत्र श्रीमान् ्के
पुण्यप्रताप के कारर् तथा राजेश्री पाहिलबुवा की बुदध् तथा तलवार के पराक्रम के कारर् घर में ुआ वैभव ै;
परिंतु य ककस प्रकार सभिंव ुआ ?

5. 'ह दिंं'ू नाम मुसिुमानों ने द्वेषपूवकस हदया ैइस धारणा के लिए कोई आधार न िीं ै

ह दिंं ूअथवा ह दिंसुथान िब्दों सेब्जस अपमान का बो् ोता था, उसे े म लोग इसका तयों स ते ेर ें? एक कारर् य भी ै कक वे की तर लोग म लोगों अपमान-परिंपरा से पूरी पररधचत थे। म लोगों में ब ुत जो से भीग ऐसेोटरीय कारर्ों से क ते ैं कक भाषा इस ह दिंं िूब्द सस्कृित का िब्द न िीं ै, परिंतु िब्द की य वविेषता न िीं ै ।

मनेअभी तक प्रिीन वैहदक किा से िेकर ह दिंं ूसाम्राज्य के सन् ्६ १८१८ के अिंत तक ह दिंं ूतथा ह दिंसुथान नामों के इनत ास के सभी अध्यायों की िमबद्ध जानकारी प्राप्त करने का प्रयास ककया ै। इसके पश्ाित् ्ह दिंतुव के प्रमुखतम अलभिक्षण ननक्श्ित करनेका जो प्रमुख उद्देश ै, उसपर ध्यान केंहद्रत करना ोगा। इस काय स ेतु योनय भूलमका बन गई ै। मारे इस अनुसधिंान के प्रारिंभ में ी य ननक्श्ित रूप से ज्ञात ुआ कक मारे ववद्वान,् परिंतु अधीर िोगों के मन में एक सदिें दृढ़ ो िुका ै कक मुसिमानों ने द्वेषपूण सभावना से ी म िोगों को 'ह दिंं'ू नाम हदया ै। इस सदिें का सपिूंण सखडिंन अब ो िुका ै। इस नाम के इनत ास पर इतने समग्र रूप से लिखने ेके पश्ाित् ्य सदिें बिकाना िगता ै; उनका केवि ननदेश करना ी उसका खडिंन करने के बराबर ै। मो म्मद के जन्म से ब ुत वष सपूव सतथा अरब राष्ट्रों के बारे में ववश्व के िोगों को ककसी प्रकार की जानकारी ोनेके कई शतक पूव सइस प्रिीन राष्ट्र को म िोग तथा अखखि ववश्व 'लसधिंु' अथवा 'ह दिंं'ू नाम से ी जानते ेथे। क्जस प्रकार लसधिंु नदी की खोज करना अरबों के लिए सभिंव न िीं ुआ, उसी प्रकार लसधिंु नाम की खोज करना भी उनके लिए सभिंव न िींथा। ईरानी, य ूदी तथा अन्य िोगों के माध्यम से ी अरब इस नाम से पररचित

ह दिंतुव 55 ुए। इनत ास के प्रमाणों द्वारा इस बात का खडिंन करनेका प्रयास म छोड भी दें, तब भी; यहद य नाम में शिुओ िंद्वारा नतरस्कार से हदया ुआ नाम ै, जैसा कक कुछ िोगों का वविार ै, तब म िोगों के जातीय सवश्रेसष्ट् तिथा परिामी व्यक्क्त क्या भ्रूवश भी उसे ेस्वीकार करते े? य धारणा भी लमथ्या ै कक म िोगों के पूवजस अरबी या पलशयसन भाषा सेअवगत न िींथे।

मुसिमान म िोगों को काकफर नाम से सबिोचधत करते ेथे।े इस कारण क्या म िोगों ने इस नाम को स्वीकारते ुए क्या उसे ेअपना वैलशष्ट्ट्यपूण ससबिोधन क ा था ? अतः ह दिं ूअथवा ह दिंसुथान शब्दों से क्जस अपमान का बोध ोता था, उसे े म िोग क्यों स ते ेर े? इसका एक कारण य भी ै कक वे िोग म िोगों की अपमान-परिंपरा से पूरी तर पररचित थे। म िोगों में ब ुत से िोग ऐसेभी ैं, जो राष्ट्रीय कारणों से क ते े ैं कक ह दिं ूशब्द सस्कृित भाषा का शब्द न िीं ै, परिंतु इस शब्द की य ववशेषता न िीं ै। सस्कृित वाङ्मय में ककशन, बनारस, मरिा, लसख, गुजरात, पटना, लसया, जमना आहद रोज के व्यव ार में प्रयोग ककए जानेवािेशब्द भी तो न िींैं। अन्य सैकडों शब्दों को भी सस्कृित भाषा में स्थान न िीं ै। इस कारण क्या ऐसा समझ िेना ोगा कक ये शब्द अन्य पराई भाषा के शब्द ैं? बनारस शब्द सस्कृित भाषा में न िीं ै। परिंतु प्राकृत भाषा के इस शब्द का वाराणसी पयायसवािी शब्द सस्कृित भाषा में ै। अतः बनारस मान्यता प्राप्त शब्द ै - ऐसा क ना उचित ोगा। सस्कृित भाषा में प्राकृत शब्दों की खोज करना ब ुत ास्यास्पद प्रतीत ोता ै। ह दिं ूशब्द ससंकृित के ककसी शब्द का प्राकृत रूप ै। य सि ै, परिंतु य प्राकृत रूप भी यदाकदा सस्कृित वाङ्मय में हदखाई देता ै। इससे व प्राकृत शब्द ककतना म त्त्वपूण स ै - य बात प्रमाखणत ो जाती ै। उदा रणाथ-समेरू तिंत्र में 'ह दिं'ू शब्द का प्रयोग ुआ ै। म ाराष्ट्र के आपटे तथा बिंगाि के तकस वािस्पनत जैसे ेदो ववख्यात कोशकारों ने इस शब्द को अपने कोशों में स्थान हदया ै, 'लशव-लशव न ह दिंु सयवनः' इस उक्क्त से म िोगों का पररिय इतना ननकट का ै कक इसे ेउद्धृत करना आवश्यक न िीं ै।

'सप्तलसधिंु ' 'प्तलसधिंु का ीरूपातिं र ै

य भी सभिंव ै कक मुसलमानों की भाषा से प्रभाववत फारसी भाषा में 'ह दिं'ू िब्द के साथ ततरस्कार की कोई भावना जुड गई ो, परिंतु इस बात से य कदावप प्रमाखर्त न िीं ो सकता कक ह दिं िूब्द का मूल अथ तकोई तुच्छतापूर् ततथा 'काला' िब्द ै।

य भी सभिंव ै कक मुसिमानों की भाषा से प्रभाववत फारसी भाषा में 'ह दिं'ू शब्द के साथ नतरस्कार की कोई भावना जुड गई ो, परिंतु इस बात से य कदावप प्रमाखणत न िीं ो सकता कक ह दिं ूशब्द का मिू अथ सकोई तुच्छतापूण सतथा 'कािा' शब्द ै। फारसी भाषा में ह दी अथवा ह दी शब्दों का प्रयोग ोता ै, परिंतु इसका अथ स 'कािा आदमी' ोता ै, इसका कोई प्रमाण प्राप्त न िींोता। सभी िोगों को ज्ञात ै कक ये शब्द 'ह दिं'ू शब्द के साथ लसधिंु ुअथवा लसधिं इन सस्कृित शब्दों में उत्पन्न ुए ैं, य मान भी लिया जाय कक लसधिंु शब्द का प्रयोग करना म िोगों के किो े ोनेसेसबिंचिंधत ै, तब भी ह दिं ूअथवा ह दी शब्दों का अथ स'कािा आदमी' न ोते े ुए

भी उनका प्रयोग में सबिंोचधत करने ेतु ककया जाता ै। 'ह दिंू' शब्द मुसिमानों की भाषा से प्रभाववत फारसी भाषा से उत्पन्न न ीिं ुआ ै। ईरान की प्रािीन भाषा के झदें अवेस्ता के छेद से उपजे ' प्त लसधिंु' का अथ सकेवि सप्तलसधिंु ु ी हदया गया ै। म िोग किो े ैं, इस एकमिा कारण से म िोगों को य नाम प्राप्त ुआ ै, य बात कदावप सभिंव न ीिं ै। इसका एक सीधा सा कारण ै, अवेस्ताकािीन ह दिंू प्रािीन कािा से सप्तलसधिंु ुउस समय आयावसत सके िोगों के समान ी सुदिंर थेतथा उनके पडोस में ी र ते ेथे। कभी-कभी उनके साथ भी खिस्त किा के प्रारिंभ में म िोगों के सीमा प्रदेश को पलशयसन िोग 'श्वेत भारत' क ते ेथे। इससे य स्पष्ट ो जाता ै कक 'ह दिंू' शब्द का 'कािा' अथ सतो ककसी समय भी न ीिंककया जाता था।

इसकारणक्याह दिंू नामःिोगोंकोत्यागदेनिााह ए ?

जब मुसिमान अथवा मुसिमानी सस्किारों से प्रभाववत अक्स्तत्व ह दिंू म फारसी शब्दों का भी न ीिंथा, तब से अथवा ह दिंुसुथान नाम िोगों की भूलम तथा राष्ट्र के से तथा लिए स्वालभमान गौरवपूण सउर्लिखे करने ेतु प्रयोग ककए जा र े ैं। य बात पूव समें हदए

वस्तुतः जब मुसिमान अथवा मुसिमानी सस्किारों से प्रभाववत फारसी शब्दों का अक्स्तत्व भी न ीिंथा, तब से ह दिंू अथवा ह दिंुसुथान नाम म िोगों की भूलम तथा राष्ट्र के लिए स्वालभमान से तथा गौरवपूण सउर्लिखे करने ेतु प्रयोग ककए जा र े ैं। य बात पूव समें हदए ुए वववेिन से भी लसद्ध ो िुकी ै। इसी कारण 'ह दिंू' नाम की म ती तथा म िोगों के मन में ववद्यमान भक्क्तभाव का वविार करते े ुए ऐसा प्रतीत ोता ै कक यहद कुछ

ैं,अवववेकी िोग शब्द मात्र से देकर ह दिंू नाम त्याग देते

करने की कुछ भी आवश्यकता न ीिं ै। ककसी समय प्रत्यक्ष इंगिैंड में अचधकार करनेवािे नॉमिस िोगों ने 'इंगिैंड' शब्द को समझना प्रारिंभ ककया तथा परस्पर ुए वववेिन से भी लसद्ध ो िुकी ै। दोषारोपण करते ेसमय इसी शब्द का प्रयोग ककया जाता, 'म ैंक्या इंक्लिश बन जाऊँ?' ऐसा क ना स्वय िंकी भयकिंर अप्रनतष्ठा किरना माना जाता। ककसी नॉमनस व्यक्क्त को 'इंक्लिश' नाम से सबिंोचधत ककया जाना एक अक्षम्य अपराध था। इसीलिए क्या भूलमका तथा राष्ट्र का नाम पररवनततस कर नॉमि सकरनेका वविार इंगिैंड के ननवालसयों के मन में आया था ? भूिकर भी व न ीिंआया ोगा अथवा ऐसा करने से क्या वे तत्किा म त्त्वपूण सबन जाते े? उन् ोंनेदृढ़तापूवकस अपनेनाम तथा वशिं के नाम का त्याग न ीिंककया। उस समय के नतरस्कृत इंक्लिश िोग तथा उनकी भाषा ववश्व के अभूतपूव सववशिा साम्राज्य के स्वामी बन गए; परिंतु इंक्लिश साम्राज्य-वैभव इतना आश्ियिजसनक ोते े ुए भी ह दिंू जगत् के अपार वैभव की तुिना करने योनय इंगिैंड के पास कुछ भी न ीिंथा।

हदिंू ःरामववश्वकेलिएअलभमानकाद्योतक ै

जब दो राटरों के परस्पर सबिंंध में कुछ ववसगिंतत उत्पन्न ो जाती ै, तब वे अपना सतुिंलन खोकर अतनयबिंत्रत ो जाते े ैं। पारसी तथा अन्य कुछ लोग कुछ समय पूव तयहद ह दिंू ब्द 'चोर' अथवा 'काला आदमी' - इसके अथ तमें

प्रयोग करते े ोंगे ेतो उन् ें इस बात का स्मरर् रखना आवचयक ै कक ह दिं ूलोग भी 'मुसलमान' िब्द का प्रयोग ककसी उच्च समझेजानेवाले व्यष्तत के शलए न िींकरते ेथे।

जब दो राष्ट्रों के परस्पर सबिंधिों में कुछ ववसगिंनत उत्पन्न ो जाती ै, तब वे अपना सतिंुनि खोकर अननयत्रिंति ो जाते े ैं। पारसी तथा अन्य कुछ िोग कुछ समय पूव सयहद ह दिं ूशब्द 'िोर' अथवा 'काि़ा आदमी'- इसके अथ समें प्रयोग करते े ोंगे ेतो उन् ें इस बात का स्मरण रखना आवश्यक ै कक ह दिं ूिोग भी 'मुसिमान' शब्द का प्रयोग ककसी उच् सिमझेजानेविोव्यक्क्त के लिए न िींकरते ेथे। ककसे'मुसिमान' अथवा 'मुसडिं' क ा जाता ै, यहद ऐसा समझा जाता कक उसे ेपशु मानना भी इससे अचधक अच्छा था। जब आपस में प्राणातिंक सग्रिंाम ोते े ैं, जब क्षुब्ुध तथा पाशवी िोध की ज्वािाएँप्रज्वलित ोती ैं, तब इस प्रकार के ममभेसदी तथा कटु अपशब्दों का प्रयोग करते े ुए परस्परों पर दोषारोपण करना अपरर ाय स ो जाता ै और उस समय य उचित भी प्रतीत ोता ै; परिंतु जब िोग इस पागिपन से मुक्त ोकर पुनः अपनी ितेना प्राप्त कर िेते ैं, तब स्वय िंको भि मानव क िाते ुए इस प्रकार के अपशब्दों को तथा परस्परों पर ककए गए दोषारोपणों का ववस्मरण कर िेना ी उचित मानते े ैं। म िोगों को इस बात का भी स्मरण रखना िाह ए कक प्रािीन ज्यिोग 'ह दिं'ू शब्द का प्रयोग सामथ्य सतथा उत्सा के लिए करते ेथे, क्योंकक ये गुण म िोगों की भूलम तथा राष्ट्र के ी गुण ैं। 'सो ाब मो अिक्क' नामक अरबी म ाकाव्य में क ा गया ै कक अपने ी रक्त के िोगों द्वारा ककए गए अत्यािार ह दिंओु िंके खड्ग से भी अचधक कष्टप्रद तथा वेदनामय ोते े ैं, 'ह दिंओुिंके शब्दों में उत्तर देना' य क ावत ईरान में रूढ़ ो िुकी ै। 'ह दिं ूखड्ग सेप्रबि तथा ग रा प्र ार करना' य ी अथ सइस क ावत में अलभप्रेत ै। प्रािीन बैत्रबिोननयत िोग अत्युत्तम कपडे को 'लसधिुं' नाम से ी जानते ेथे। बैत्रबिोननयत िोग इस शब्द को राष्ट्रीयविाक अथ सके अनतररक्त अन्य अथों में भी प्रयोग करते ेथे, इससे म अनलभज्ञ थे।

मारे अत्यतिं प्राचीन पडोसी चीन राटर के ववख्यात यात्री ह्वेनसागिं ने 'ह दिंसुथान' का जो षजतनक अथ तहदया उसे ेसुनकर कोई ै, भी ह दिं ूगौरवाष्न्वत ोगा। उसके अनुसार सस्िकृत 'इिंदु' िब्द म राटरीय सबिोन् भाषा का लोगों को ह दिं ूसेसवथता एक रूप ै। इस कथन की पुष्टि करने ेतु व क ता ै कक ववचव दवारा इस राटर को हदया गया 'ह दिं'ू नाम यथाथ त ै।

िनी िोगों को ह दिं 'इिंदु' केुसमान ीवप्रयथे

ह दिं ूतथा ह दिंसुथान नामों को त्याग देनेकी अप्रासधिंगक सूचना पर गभीरतापूवकत कोई उिर देनेका प्रयास न करते े ुए 'ह दिं'ू नाम परदेशसयों की दवेषवृदृध् से ी उपजा - इस बचकानी उपपवि को मान भी शलया जाए, तब भी म य पूछ सकते ैं कक इन नामों को त्यागकर दूसूरा कौन सा नाम प्रचशलत करना मारे शलए सभिंव ोगा ? आज की ष्स्थतत में 'ह दिं'ू नाम म लोगों की जातत का ध्वजधचह्न बन चुका ै।

मारे अत्यतिं प्रािीन पडोसी िीन राष्ट्र के ववख्यात यािी ह्वेनसागिं ने 'ह दिंसुथान' का जो षजसनक अथ स हदया ै, उसे ेसुनकर कोई भी ह दिं ूगौरवाक्न्वत ोगा। उसके अनुसार सस्िकृत भाषा का 'इिंदु' शब्द म िोगों को

राष्ट्रीय सबिीधन ह दिंं ूसेसवथसा एक रूप ै। इस कथन की पुक्ष्ट करने ेतु व क ता ै कक ववश्व द्वारा इस राष्ट्र को हदया गया 'ह दिंं' ू नाम यथाथ स ै। ह दिंं ूतथा उनकी सस्क्रिनत मानव के ननराशा तथा ननरुत्सा ी आत्मा को शीति िद्रिंप्रकाश के समान सदैव आनदिं तथा उत्सा का स्रोत बनी ुई ै। इससे य स्पष्ट ो जाता ै कक िोगों के मन में अपनेनाम के प्रनत आदर उत्पन्न ो जाता ै, िोगों के मन में अपनेनाम के प्रनत आदर उत्पन्न करने का माग सउस नाम को त्याग देना अथवा पररवनततस करनेका न िीं ै, अवपतु अपनेपरिमी बा ुबि से अपने ध्येय की शुद्ध साक्त्वकता से तथा अपने उच् आध्याक्त्मक पद से उन् ें य नाम स्वीकारने ेतु बाध्य करना ी उचित माग स ै। म कोशों के कुछ बाधिंवों को 'ह दिंं' ू के स्थान पर 'आय'स क िानेकी स्वतिंता जनगणना के समय

[illegible] पूव सवैभव तथा बि प्राप्त न िीं
ऐसा करने पर आय सशब्द का स्तर निी आ जाएगा तथा 'गिुम' और 'मजदूरू' शब्दों के समान अथ सके एक शब्द की वृदूचध शब्दकोश में ो जाएगी।

नामबदिनेकामूखतसापूणसप्रयास

एक बार ककसी सुबुद् तथा स्वदि-प्रेमी व्यष्तत ने जनगर्ना के समय खुद को ह दिंं ून बताते े ुए ' आयनत' क ा, तयोंकक ईरानी मुसलमान म लोगों को दवेषबुदध् से 'ह दिंं' ू क ते े ैं तथा इस िब्द का अथ त'चोर' अथवा 'काला आदमी' ोता ै - ऐसा इस प्रचशलत, पररिंतु असत्य ा्रर्ा का शिकार व ो चुका था। समय की कमी ोने के कारर् मनेइस नाम की उत्पवि के बारे में कुछ भी न ी िंक ा, पररिंतु उससेकेवल इतना ी पूछा कक उसका नाम तया ै?

ह दिंं ूतथा ह दिंसुथान नामों को त्याग देनेकी अप्रासचिंगक सिूना पर गभीरतापूवकस कोई उत्तर देनेका प्रयास न करते े ुए 'ह दिंं' ू नाम परदेलसयों की द्वेषवृदूचध से ी उपजा ै - इस बिकानी उपपवत्त को मान भी लिया जाए, तब भी म य पूछ सकते े ैं कक इन नामों को त्यागकर दूसूरा कौन सा नाम प्रिलित करना मारे लिए सभिंव ोगा ? आज की क्स्थनत में 'ह दिंं' ू नाम म िोगों की जानत का ध्वजचिह्न बन िुका ै। कश्मीर से कन्याकुमारी पयंतं और अटक से कटक तक म िोगों की जानत की एकता प्रस्थावपत कर उसे ेचिरिंतन बनाने की दृक्ष्ट से भी इस नाम को एक ववशेषता प्राप्त ो िुकी ै। क्जस स जता से कोई अपनी टोपी िोग इस नाम को बदि सकेंगे े? बदि िेता ै, उसी स जता से क्या म एक बार ककसी सुबुद्ध तथा स्वदेश-प्रेमी व्यक्त ने जनगणना के समय खुद को ह दिंं ून बताते े ुए 'आयनस' क ा, क्योंकक ईरानी मुसिमान म िोगों को द्वेषबुद्चध से 'ह दिंं' ू क ते े ैं तथा इस शब्द का अथ स'िोर' अथवा 'कािा आदमी' ोता ै- ऐसा इस प्रिलित, पररिंतु असत्य धारणा का लशकार व ो िुका था। समय की कमी ोने के कारण मनेइस नाम की उत्पवत्त के बारे में कुछ भी न िींक ा, पररिंतुउससेकेवि इतना ी पूछा कक उसका नाम क्या ै ? उसनेक ा, 'तख्तलस िं'। ह दिंं ूनाम की उपपवत्त पर ककतनी ी मतलभन्नता क्यों न ो, पररिंतु तुम् ारा य ननववववसाद रूप से एक भ्ष्ट नाम ै। लमश्र धमीय

भी ै और व इस प्रकार का ोनेके कारण उसे ेबदिकर उसके स्थान पर 'मौदियन' अथवा 'लस िंासनलस िं' जैसा कोई प्रिीन तथा शुद्ध आयनस नाम पजीकृत कराना आवश्यक ै। प्रारिंभ में मिू ववषय पर ध्यान न देते े ुए इस प्रयोग से उसकी आचथकस क्स्थनत ककस प्रकार प्रभाववत ोगी तथा ऐसा करना ककतना कहिन ै, य बताना उसनेप्रारिंभ ककया। तत्पश्िात् ्उसनेक ा, 'इस नए नाम को अन्य िोग मान्यता देंगे– य क ना सभिंव न ीिं ै, और जब अन्य िोग मुझे तख्तलस िं नाम से ी जानते े ैं, तब स्वय िंको 'लस िंासन लस िं' क ानेविोका घातक प्रयोग करने सेववशेष क्या प्राप्त ोगा ?' मनेतत्कािा क ा- ' े भिै आदमी ! ननववववसाद रूप से जो पराया

ै, व तुम् ारा, अथाथात् ्एक ी व्यक्क्त का नाम बदिना तुम् ें इतना कहिन प्रतीत ो र ा ै, तब ककसी ववदेशी व्यक्क्त द्वारा भी क्जसकी खोज न ीिंकी गई ै तथा क्जसके लिए म िोगों में वेदों जैसा ी अपनत्व ै, व - म िोगों की सपिूंण सजानत का नाम बदिना ककतना कहिन ै? व प्रयास ककतना अथ सीन ै ? प्रािीन समय से बद्धमिू बना ुआ नाम पररवनततस करना ककस प्रकार का व्यथ सप्रयास ै, इसे ेस्पष्ट करनेवािा तथा इस व्यक्क्तगत उदा रण सेलभन्न तथा बडा उदा रण ै पजिंाब के लसख बधिंुओ िंका। 'धम िसिानन सतिं उबारण, दुष्ुट दैत्व के मिू उपाटन यह काज धरा म ैंजननम्।्समझ ने ु साधुक्षम ममनम् ्॥' (पररिाणाय साधूना िंववनाशाय ि दुष्ुट्कृता िं। धम ससस्थािपनाथायस सभिंवालम युगे युगे।।) य आवश्यक तथा म त्वपूण सध्येय दृक्ष्ट रखते ुए 'निी वस्िकै कपडे फाडे तुरक पाणी अमि गया' ऐसी ववजयी घोषणा करते े ुए मारे उस म ान् ्गुरु ने ह दिंओु िंके सवश्रेसेष्ट्िथा सवोत्तम वीरों की एक स्वतिंि जानत, एक स्वतिंि पथिं स्थावपत ककया, व ी ' खािसा' पथिं क िाता ै। 'क्षत्रियाह धम सछोडडया म्िेच्छ भाषा ग ी। सृकूष्ट सब इविण सधम सकी गनत र ी। ऐसा क ते े ुए व परम साधु नानक शोक से व्याकुि ो गया। उसे े ी आज 'वा गुरुजी की फत ', 'वा गुरुजी का खािास' ऐसी घोषणाओ िंके साथ वदिंन ककया जाता ै। दरबार, हदवाण, ब ादुरु–ये शब्द तो िोरी-नछपे म िोगों के ररमहिंदर के तक प ुँिुँि गए ैं। म िोगों के पुराने घाव िीक ो िुके ैं, परिंतु उनके चिह्न शरीर पर हदखाई देते े ैं। ऐसा प्रतीत ोता ै कक ये मारे शरीर के अिंग ी ैं। उन् ें रगडकर लमटा देनेसे िाभ ोनेकी सभिंावना न ीिं ै। ऐसा करने पर ानन ी अचधक ोगी। उन् ें इसी प्रकार स ने का काम म िोग कर सकते ैं। म िोगों ने अत्यतिं पररश्रमपूवकस

जो सग्रिंाम ककया ै, ये चिह्न उसमें िगेघावों के ैं।

~~**प्राचीन समय से बद्धूल बना ुआ नाम पररवततत करना ककस प्रकार का व्यथ तप्रयास ै, इसे ेस्पटि करनेवाला**~~ **तथा इस व्यष्ततगत उदा रर् सेशभन्न तथा बडा उदा रर् ै पजिंाब के शसख बिंओुं का। 'म् तचलानन सतिं**

उबारर्, दुदुि दैत्व के मूल उपिान यह काज र्ा म ैंजननम् ्। समझ ने ु सा्क्षुम ममनम् ्॥' (पररत्रार्ाय सानूा िंववनिााय च दुटुकृतिां । म् तसस्थािपनाथायत सभिंवाशम युगे-युगे ॥)

'ह दिंू' ू तथा 'ह दिंसुथान' नामों की पररिंपरा

ह दिंतुव 60 **यहद कोई िब्द, चा े व ककतनी भी पववत्र वस्तु से जुडा तयों न ो - बदलना अथवा उनका त्याग करना**

आवचयक ोता ै, तो वे िब्द 'तख्तशस िं' जैसे िब्द ी ैं। वे तनववvवताद रूप से पराए ैं तथा दूसूरों की सिा के

अविेष ैं। ववचव प्राचीनतम वाड्मय से, अथात् ्वेदों में म लोगों की जातत के शलए तथा राटर के शलए 'ह दिंू'्ू एव िं

'ह दिंसुथान' इन् िंमूल नामों का प्रयोग ककया गया ै।

यहद कोई शब्द, िा े व ककतनी भी पववत्र वस्तुसे जुडा क्यों न ो- बदिना अथवा उनका त्याग करना आवश्यक ोता ै, तो वे शब्द 'तख्तलस िं' जैसे ेशब्द ी ैं। वे ननववववसाद रूप से पराए ैं तथा दूसूरों की सत्ता के अवशेष ैं। ववश्व प्रिीनतम वाङ्मय से, अथात्स ्वेदों में म िोगों की जानत के लिए तथा राष्ट्र के लिए 'ह दिंू'्ू एव िं 'ह दिंसुथान' इन् िंमूि नामों का प्रयोग ककया गया ै। क्जन िोगों ने इन् िंनामों को धारण ककया तथा उनके लिए प्रेम भावना भी प्रदलशतस की, उन् िंिोगों ने इन नामों का ववरोध करते े ुए उन् ें त्याग देना िाह ए क ा, क्या य ववश्वास के योनय आिरण ै ? य ी नाम लसधिंुके दोनों तटों पर ननवास करनेवािे मारे देश बाधिंवों ने िगभग िािसि शतकों तक बडेअलभमानपूवकस धारण ककए थे। कश्मीर से कन्याकुमारी तक का तथा अटक से कटक पयंतं का प्रदेश इसी नाम से ज्ञात था। लसधिंुओ िंकी अथवा ह दिंिुओंकी जानत तथा भूलम की भौगोलिक मयादसा इसी नाम से िसिंलित भी थी तथा 'राष्ट्रमायस्सय िोत्तमम्'् के अनुसार म िोगों को सबसे लभन्न प्रकार से स्वातिं प िान प्रदान करनेवािे नाम भी य ी थे। इन् िंनामों के कारण शिुओंके मन में म िोगों के लिए द्वेषभाव ववद्यमान था और इन् िंनामों के लिए शालिवा न" से िेकर लशवाजी म ाराज तक जारों वीर युद्ध में कूद पडे तथा उन् ोंने शतकों तक इन युद्धों को जारी रखा। य ी नाम पद्लमनी तथा चित्तौड की चिता भस्म पर प्रकट ुए थे। तुिसीदास, तुकाराम, रामदास तथा रामकृष्ण" आहद को इसी ह दिंू ूशब्द पर अलभमान था। ह दिंू ूपदपादशा ी गुरु रामदास का स्वप्न था। लशवाजी का व जीवन काय सबन गया। बाजीराव तथा बदिंा ब ादुर, छिसािा और नानासा ब, प्रताप और प्रतापाहदत्य" आहद सभी की ध्येय- आकांक्षिंाओंका व अिि िक्ष्य था। क्जस ध्वज पर ये शब्द अकिंकत थे, उस ध्वज की रक्षा करने के लिए ाथों में खड्ग िेकेर जारों ह दिंिुओं ने भीषण सग्रिंाम ककए। पानीपत की युद्धभूलम पर उन् ें वीरोचित मृतूयु प्राप्त ुई। इतनेबलिदान तथा स ंिार के पश्िात् ्अथवा इसी के कारण ह दिंू ूपदपादशा ी के लिए नाना और म ादजी ने अपनेराष्ट्र की नाव िट्टानों से तथा ग रे पानी से बिाते े ुए इक्च्छत स्थान तक सुरक्षक्षत प ँुिंिाई । नेपाि के लस िंासन पर आसीन सम्राट् से िेकर ाथों में लभक्षापाि िेकर भीख माँगनेवािे लभखारी तक िक्षावचध िोग इसी ह दिंू ूअथवा ह दिंसुथान नाम के प्रनत अपना भक्क्तभाव तथा ननष्ठा पूरेमपूवकस अपणस करते ेर े ैं। इन् िंनामों का त्याग करना, मारे राष्ट्र का हृदय ी ववदीण सकरने के समान ोगा। परिंतु तुम ऐसा करने से पूव स ी ननक्श्ित रूप से मृत ो जाओगे। य कृत्य न केवि तुम् ारे ककए मारक लसद्ध ोगा बक्ल्क व अथ सीन भी समझा जाएगा। ह दिंू ूतथा ह दिंसुथान - नामों को ववस्थावपत करना,

ह माय को उसके मूि स्थान से टाने ेका प्रयास करनेके समान ै ! भयकिंर घटनाएँ ँतथा उथि-पुथि करनेवािा कोई भूकिंप ी य काम करने की सामथ्य सरखता ै।

ह दिंू ूपदपादिा ी ी गुर रामदास का स्वप्न था। शिवाजी का व जीवन काय तबन गया। बाजीराव तथा बदिंा ब ादुरु, छत्रसाल और नानासा ब, प्रताप और प्रतापाहदत्य आहद सभी की ध्येय-आकांक्षिंाओं का व अचल लक्ष्य

था। ष्जस ध्वज पर ये िब्द अकिंकत थे, उस ध्वज की रक्षा करने के शलए ाथों में खड्ग लेकर जारों ह दिंओुिने भीषर् सग्रिंाम ककए।

'ह दिंदुज्म' शब्द के कारण उत्पन्न अस्तव्यस्तता

ह दिंू तथा ह दिंसुथ्ुान - ये ववदेशियों दवारा में हदए नाम ैं, ऐसा सोचकर इन नामों पर जो आक्षेप ककए जाते े ैं, उनका खडिंन कुछ अवप्रय ऐतत ाशसक प्रमार् प्रस्तुत करनेसे ककया जाना ब ुत स ज ै। परिंतु आक्षेप करनेवालों के मन में भय र ने के कारर् ी ऐसा ककया जाता ै।

ह दिंू तथा ह दिंसुथ्ुान-ये ववदेलशयों द्वारा में हदए गए नाम ैं, ऐसा सिोकर इन नामों पर जो आक्षेप ककए जाते े ैं, उनका खडिंन कुछ अवप्रय ऐनत ालसक प्रमाण प्रस्तुत करने से ककया जाना ब ुत स ज ै। परिंतु आक्षेप गए करनेविों के मन में भय र ने के कारण ी ऐसा ककया जाता ै। वे िोग सिोतैं कक यहद उन् ोंने इस नाम को स्वीकार ककया, तो ह दिंूधम सइस नाम से क्जन आिारों-वविारों का बोध ोता ै, वे सभी उन् ें स्वीकाय स ैं, ऐसा माना जाएगा। ह दिंूक िानेविा प्रत्येक व्यक्क्त तथाकचथत ह दिंूधम सपर ववश्वास करता ोगा, इसी भय के कारण (य भय स्पष्ट रूप से कभी प्रकट न िीं ककया जाता) ये नाम पराए िोगों द्वारा न िीं हदए गए ैं। इस वास्तववकता को वे स्वीकार न िीं करते। इस प्रकार का भय सवथसा काल्पननक न िीं ोता ै। परिंतु जो स्वय िंको ह दिंून िीं क िाना ि ते, उन िोगों को इस भय को स्पष्ट शब्दों में प्रकट करना िाह ए। सभ्मि उत्पन्न करनेविो आक्षेपों में इसे नछपानेका प्रयास न िीं करना िाह ए। इससे आपके वविार अचधक स्पष्ट ो जाएँगे। ह दिंुत्व तथा ह दिंूधम-सइन शब्दों में हदखाई देनेविी समानता के कारण म िोगों के अच्छे-अच्छे ववद्वान् ह दिंूबाधिंवों के मन में भी अिगाववादी भावनाएँ उत्पन्न ोती ैं। इन दो शब्दों का मिूभूत भेद म शीघ्र ी स्पष्ट करनेविो ैं। य एँक बात स्पष्ट रूप सेक नी ोगी कक ववदेलशयों द्वारा क्जस शब्द का प्रयोग ककया जाता ै, व शब्द ै 'ह दिंदुजम' (ह दिंूधम सइस अथ ससे), परिंतु इस सबिंोधन के कारण म िोगों के वविारों में गडबडी उत्पन्न ोनेका कोई कारण न िीं हदखाई देता। स्वतिंत्र धम सग्रिंथ के रूप में वेदों को भी न माननेविा व्यक्क्त भी पूणतसः ह दिंू ो सकता ै। जैन िोगों का उदा रण इस बात का पयाप्सत प्रमाण ै। ये जैन बाधिंव पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्वय िंको ह दिंूक िाते ैं तथा दूसूरे ककसी भी नाम से सबिंोचधत ककए जानेपर उनकी भावनाओंको दुःख प ुँिता ै। य बात केवि एक वास्तववकता ोनेके कारण य ाँप्रस्तुत की गई ै। इस ववषय की सपिंूण स छानबीन करने के पश्िात् मारे कथन का ननष्कष सक्या ै, इसे ज्ञात करते समय ककसी प्रकार का पूवग्रस दूवूषत भय न ी िं ोना िाह ए। अभी तक के वववेिन में मनेककसी एक ववलशष्टइज्म का (धम सका) वविार न िीं ककया ै। केवि ह दिंुत्व और उसके राष्ट्रीय, जातीय तथा सािंस्कृनतक अिंगों का वविार मारे ी वववेिन का प्रमुख ववषय था।

य ाँएक बात स्पटि रूप सेक नी ोगी कक ववदेशियों दवारा ष्जस िब्द का प्रयोग ककया जाता ै, व िब्द ै 'ह दिंदुजम' (ह दिं ूम् तइस अथ तसे), परिंतु इस सबिन् के कारर् म लोगों के ववचारों में गडबडी उत्पन्न ोनेका कोई कारर् न िंहदखाई देता। स्वतत्रिं म् तग्रथिं के रूप में वेदें को भी न माननेवाला व्यष्तत भी पूर्त: ह दिं ू ो सकता ै।

ह दिंसुथानअथात् ह्ू दिंओुंकास्थान

म लोगों का य दि इतना ववस्तृत् ोते े ुए इतना जुडा ुआ ै कक भी स्वतत्रिं भौगोशलक अष्स्तत्व की दृष्टि से अन्य प्रदिों की अपेक्षा सुस्पटि सीमाओंसे अलग ोने के कारर् सुरक्षक्षत ै। प्रकृतत ने अपनी हदव्य अगिुंशलयों से ववचव के ककसी अन्य दि की सीमाएँ ाँइस प्रकार रेखाकिंकत न िंकी ैं। इन सीमाओं के कारर् स्वतत्रिं अष्स्तत्व पर कोई सदिं न िंकर सकता। ह दिं ूअथवा ह दिंसुथान - नाम प्राप्त ोनेका भी य ी कारर् ै।

म अब इस क्स्थनत में प ाँुाँि गए ैं कक ककसी भी मानवी भाषा को अज्ञात, ऐसे एक अत्यचधक व्यापक तथा अत्यतिं गूढ़ ववािर-पररिंपरा की समग्र एव िंववस्तारपूवकस िमा कर सकते ैं। ह दिंुत्व शब्द ह दिं ूशब्द से ी बना ै। य म देख मारे सवाचसधक पववि नाम उसी भूलम को हदया िुके ैं। म इससे पूव सय भी ज्ञात कर िुके ैं कक तथा प्रािीन वाङ्मय में सप्तलसधिुं अथवा प्तलसधिुंगया ै ज ाँ ाँवैहदक राष्ट्र का उत्कष स ुआ था। य मूि भौगोलिक कल्पना कम या म िोगों का य देश अचधक प्रमाण में, परिंतु अववरत रूप से ह दिं ूतथा ह दिंसुथान शब्दों से ी जुडी र ी।अब िगभग िार जार वषों के पशाति् ्ह दिंसुथान का अथ सलसधिुं ुसे सागर तक का सपिूंण स भूखडिं-इस प्रकार ो गया ै। कैसे ेभी िोगों के समाज में परस्पर प्रेम, सामथ्य सतथा एकता ननमाणस करने ेतु दो म त्वपूण सबातों का योगदान र ता ै-एक ै, िोगों की अखडिं प्रदेश की तथा स्पष्ट बाह्य सीमा रेखाओ िंसे अपना स्वतिंत्र अक्स्तत्व स्थावपत करनेवािी ननवसनभूलम। दूसूरी ै, व 'नाम' क्जसका उच्िारण करते े ी म िोगों की ऐनत ालसक किा की मधुर स्मृनतयाँ मारे मन में उपजती ैं तथा अपनी वप्रयतम मातृभूलम की मूनत साकार ो जाती ै। सौभानयवश म िोगों को वे दोनों आवश्यक बातें अनायास ी प्राप्त ो गई ैं। म िोगों का य देश इतना ववस्तृत् ोते े ुए भी इतना जुडा ुआ ै कक स्वतिंत्र भौगोलिक अक्स्तत्व की दृक्ष्ट से अन्य प्रदेशों की अपेक्षा सुस्पष्ट सीमाओ िंसे अिग ोनेके कारण सुरक्षक्षत ै। प्रकृनत ने अपनी हदव्य अगिुंलियों से ववश्व के ककसी अन्य देश की सीमाएँ ाँइस प्रकार रेखाकिंकत न िंकी ैं। इन सीमाओंके कारण स्वतिंत्र अक्स्तत्व पर कोई सदिं न िं कर सकता। ह दिं ूअथवा ह दिंसुथान-नाम प्राप्त ोनेका भी य ी कारण ै। इस नाम का उच्िारण करते े ी मारी मातृभूलम की मूनत स ी म िोगों के मनः िक्षुओंके सम्मुख आ जाती ै। तत्पशाति् ्जब उसके भौगोलिक तथा भौनतक स्वरूप का ववािर म िोगों के मन में उिता ै तब उसका स्वतिंत्र, सजीव अक्स्तत्व ी म िोगों को प्रतीत ोता ै। ह दिंओु िंका स्थान ोनेका प्रथम आवश्यक िक्षण भौगोलिक क्स्थनत ी ै। ह दिं ूप्रथम स्वय िं अथवा अपनी वपतृ–ृ पररिंपरा से ह दिंसुथान का नागररक ोता ै। इस भूलम को व अपनी मातृभूलम मानता ै। अमेररका में अथवा फ्ािंस में ह दिं ूशब्द का अथ सय ी ै। ककसी ववलशष्ट धम सका अथवा सस्िंकृनत से सबिंचिंधत न

शब्द से उत्पन्न ुए अन्य शब्दों के समान ह दिं ू
र ते े ुए सव ससामान्य ह दिी-य ी अथ सव ाँप्रिलित ै। यहद लसधिं
का मिू अथ सभी य ी ककया जाता तो ह दिी शब्द जैसा ी उसका अथ सभी केवि ह दिंसुथान का नागररक - य ी

ोता।

ह दिं ूप्रथम स्वय िंअथवा अपनी वपतृ-परिंपरा सेह दिंसुथान का नागररक ोता ै। इस भूशम को व अपनी मातृभूशम मानता ै। अमेररका में अथवा फ्ांसि में ह दिं िूब्द का अथ तय ी ै। ककसी बादक्षिटिअथवा सस्कृितत से सबिंधिंत न र ते े ुए सव तसामान्य ह दिी - य ी अथ तव ाँप्रचशलत ै।

ह दिंुतुवकाप्रथमआवश्यकअलभिक्षण

ह दिं िूब्द का मूल अथ तइसी अथ तके दूसूरे िब्द ह दिी के समान केवल 'ह दिंसुथान में' तनवास करनेवाले - इस प्रकार ी ककया जाएगा तथा इसी आाि्र पर ह दिंसुथानवासी ककसी मुसलमान को ह दिी क ना प्रारिंभ ककया तो ब्दिों के काम चलाऊ व्याव ाररक अथों की इतनी खीचिंतानी करनी ोगी कक में भय लगता ै कक इन अथों से अनथ तउत्पन्न ो जाएगा।

मनेअपना सपिूंण सध्यान 'अभी क्या ो र ा ै' इसी बात की ओर िगाया ै, परिंतु 'क्या ोना सभिंव था' अथवा 'क्या ोना िाह ए' इन बातों का वविार न िींककया ै। इसका अथ सय ै कक 'क्या ोना िाह ए' इसपर. िािसिकरना आवश्यक न ी िं ै, ऐसा क ना उचित न िींोगा। ऐसी िािस स्फूनतदसायक भी ोती ै। परिंतु इसे ेऔर अच्छी तर से समझने ेतु प्रारिंभ में 'क्या ो र ा ै' इसका ननक्श्ति रूप से वविार करना आवश्यक ो जाता ै। अतः ह दिंुतुव के प्रमुख तथा आवश्यक अलभिक्षण ननक्श्ति करते ेसमय म िोगों ने वतमसान समय में इन शब्दों द्वारा प्रत्यक्ष रूप सेप्रकट ोनेविी बातें का ी वविार करनेकी दक्षता ालसि करना आवश्यक ो जाता ै। ह दिं ूशब्द का मिू अथ सइसी अथ सके दूसूरे शब्द ह दिी के समान केवि 'ह दिंसुथान में' ननवास करनेवािो-इस प्रकार ी ककया जाएगा तथा इसी आधार पर ह दिंसुथानवासी ककसी मुसिमान को ह दिी क ना प्रारिंभ ककया तो शब्दों के काम ििाऊ व्याव ाररक अथों की इतनी खिींिातानी करनी ोगी कक में भय िगता ै कक इन अथों से अनथ स

उत्पन्न ो जाएगा। ह दिं ूह दिंसुथान का एकमेव ै; अन्य कोई भी न ी िं ै। ऐसी क्स्थनत उत्पन न िींगी, ऐसा न िंक ा जा सकता। परिंतु य तभी सभिंव ोगा जब आिमण तथा स्वाथी प्रववृत्तयों को बढ़ावा देनेविो जातीय तथा सास्कृिनतक दुरालभमान नष्ट्ट ो जाएँगे तथा सारे धम सअपनी क्षुदुरता त्यागकर ववश्व के आधारभूत सनातन तत्त्वों तथा वविारों का एक जागनतक धिमिं स्थावपत करेंगे। इस सपिूंण समानव पररवार को एक ी शासन के आधीन र ते े ुए वैभवपूण सजीवन व्यतीत करने के लिए इसी प्रकार के भेद रह त दृढ़ आधार की आवश्यकता ै। परिंतु इस सत्य क्स्थनत की ओर ध्यान न देना मूखतसापूण सआिरण ोगा, क्योंकक ब ुत आतुरता तथा अपेक्षा से इस घटना की ओर सपिूंण सववश्व ध्यानपूवकस देख र ा ै। मिू प्रववृत्त से ी जो वविार युद्ध घोषणाओंमें पररवनततस ोते े ैं, उन आग्र ी मतों का जब तक अन्य धमों के अनुयायी त्याग न िींकरते,े तब तक सिांस्कृनतक तथा जातीय दृक्ष्ट्ट से समान घटकों ने क्जस नाम और ध्वज से अपार शक्क्त एव िंसाथकस ऐक्य का िाभ ोता ै उस नाम तथा

ध्वज को अक्स्थर करना उचित न िीं ोगा। कोई अमेररकी भववष्ह्य में ह दिंसुथान का नागररक बन जानेपर तथा यहद व वास्तववक अथ समें नागररक बन जाता ै, तब उसे ेभारतीय अथवा ह दिंी समझकर ी उससेउसी प्रकार का व्यव ार ककया जाएगा। परिंतु जब तक म िोगों के देश के साथ म िोगों की सास्कृिनतक तथा आचथकस

मरिंपरा तथा मसीिोमारे ककी भूवैिमा नदीं मानता, जब तक रक्त- सबिंधिीं से व मसे एकरूप न िीं

उसके केवि प्रेम का ी न िीं, उसकी ननतातिं भक्क्त का ववषय न िींबन जाती, तब तक उसे ेह दिंजूानत में एक ह दिंू के रूप में स्थान प्राप्त ोना सभिंव न िीं ै। स्वय िंअथवा वपतृ ृपरिंपरा से जो ह दिंसुथान का नागररक ोता ै व ह दिंू ै। य ह दिंतुव का प्रथम तथा आवश्यक अलभिक्षण ै। परिंतु य एकमेव अलभिक्षण न िींो सकता, क्योंकक उसमें जो भौगोलिक अथ सअलभप्रेत ै, उससेभी अचधक म त्त्वपूण सअथ सह दिंू शब्द में समाए ैं। '

ह दिं'ू िब्द 'भारतीय' अथवा 'ह दिंी' इन दो िब्दों का समानाथी िब्द न ी िं ै। केवल ह दिंसुथान का नागररक - इस अथ तसे ी उसका उपयोग न ी िंककया जा सकता। इस बात की मीमासिंा करने के पचचात् ्म स्वाभाववकतः ह दिंू इस नाम के दूसूरे आवचयक अशभलक्षर् का ववचार करनेकी अवस्था में ोते े ैं।

मसबएक ीरक्तके ैं

'आप सबका रतत एक सा ै - ऐसा आप क सकते ो ?' म लोग उन् ें ठीक से जानतैं। म लोग उनके प्रचन का उिर एक प्रततप्रचन के रूप में देंगे,े 'तया इिंष्ग्लि एक वास्तववक जातत ै ?' तया इस ववचव में इिंष्ग्लि रतत, फ्रेंच रतत, जमनत रतत, चीनी रतत जैसा कोई पदाथ तववदयमान ै ? जो लोग ववदेशियों से ववा बद् ोकर अपनेखून में ववदिंी रतत मुतत रूप से ब नेदेते े ैं।

'ह दिं'ू शब्द 'भारतीय' अथवा 'ह दिंी' इन दो शब्दों का समानाथी शब्द न िीं ै। केवि ह दिंसुथान का नागररक - इस अथ ससे ी उसका उपयोग न िींककया जा सकता। इस बात की मीमासिंा करने के पश्ाति् ्म स्वाभाववकतः ह दिंू इस नाम के दूसूरे आवश्यक अलभिक्षण का वविार करने की अवस्था में ोते े ैं। ह दिंू

ह दिंसुथान के केवि नागररक की न िीं, मातृभूलम के प्रनत प्रेमभाव ोनेके बधिंन के कारण ी न ी िंअवपतु रक्त सबिंधिीं के कारण भी उनमें परस्पर एकरूपता उत्पन्न ो िुकी ै। वे केवि एक राष्ट्र ी न िीं ैं, एक जानत भी ैं। 'जा' धातु से उत्पन्न ुए जानत शब्द का अथ स ै एक ी स्थान पर जन्मे ेतथा एक ी रक्त और बधिंुभाव से जुडे ुए िगि मारे पूवजसों की-लसधिंुओिं की परिंपरा को जीववत रखकर जो परािमी जानत उत्पन्न ुई, उसी का रक्त मारी धमननयों में प्रवाह त ो र ा ै, ऐसा र ह दिंू ब ुत अलभमानपूवकस क ता ै। ब ुत बार कुछ िोग स्वाथ ससे प्रेररत ोकर कुछ ननरथकस प्रश्न पूछते ैं, 'क्या सिमुि आप िोग एक ी जानत के ो ?'

'आप सबका रक्त एक सा ै- ऐसा आप क सकतो?' म िोग उन् ें िीक से जानते े ैं। म िोग उनके प्रश्न का उत्तर एक प्रनतप्रश्न के रूप में देंगे,े 'क्या इिंक्ग्िश एक वास्तववक जानत ै ?' क्या इस ववश्व में इिंक्ग्िश

रक्त, फेंरिक्त, जमनस रक्त, िीनी रक्त जैसा कोई पदाथ सववद्यमान ै? जो िोग ववदेलशयों से ववा बद्ध ोकर अपने खून में ववदेशी रक्त मुक्त रूप से ब नेदेते े ैं। वे क्या ऐसा क सकते ैं कक वे एक ी रक्त व वशिं के ैं ? यहद वेऐसा क सकते ैं तो ह दिंू ूभी उसी तर जोर देकर ऐसा क सकते ैं। क्जस जानत-भेद का यथाथ स स्वरूप अज्ञानवश अपनी समझ में न ी िंआता, उसी जानत-भेद के कारण एक ी प्रकार का रक्त म िोगों की नसों में प्रवाह त न िींोता- ऐसा आप आग्र पूवकस क ते े ों परिंतु वास्तववकता य ै कक ककसी प्रकार का रक्त म िोगों के रक्त से न िींलमिना िाह ए। यहद ऐसा जातीयता का अलभप्राय ै तो इसका अथ स ै कक ववदेशी रक्त पर प्रनतबधिं िगाया जाना। इसके अनतररक्त आज जो जानत सस्थिा अक्स्तत्व में ै, व ी इस बात का प्रमाण ै कक ब्राह्मणों से िाडिंाि तक के शरीर में प्रवाह त ोनेविाा खून एक सा ै।

ह दिंूजानत की रक्तगिंगा का प्रिडिंदात्त प्रवा

मारी ककसी भी स्मृतृत पर केवल दृष्टिपात करने से में य बात स ज रूप ज्ञात ो जाएगी कक उस समय में भी अनुलोम व प्रततलोम ववा सस्थिा रूढ़ तथा सुप्रततष्टठत थी। उसी के फलस्वरूप आज की अधिकिां जाततयाँ ँ उत्पन्न ुई ैं। ककसी िूद्र स्त्री को ककसी क्षबत्रय दवारा पुत्र- प्राष्प्त ोनेपर उग्र जातत का नामाथा।

मारी ककसी भी स्मृनृत पर केवि दृक्ष्टपात करनेसे ी में य बात स ज रूप से ज्ञात ो जाएगी कक उस समय में भी अनुिोम व प्रनतिोम ववा सस्थिा रूढ़ तथा सुप्रनतक्ष्ित थी। उसी के फिस्वरूप आज की अचधकाशिं जानतयाँ ँउत्पन्न ुई ैं। ककसी शूद्र स्त्रीको ककसी क्षत्रिय द्वारा पुि-प्राक्प्त ोनेपर उग्र जानत का नामाथा। उसी उग्र जानत सेक्षत्रियों का सबिंधिं ो जानेपर ोनेविाी सतिंान की जानत श्वपि क िाती तथा ब्राह्मण स्त्री तथा शूद्र वपता सेउत्पन्न सतिंनत को िाडिंाि क ा जाता। सत्यकाम जाबिांलि की वैहदक कथा से म ादजी लशदिं" तक के मारे इनत ास में िगभग प्रत्येक पृष्ठ् पर ऐसा दृक्ष्टगोर ोगा कक म िोगों की जानत के रक्त की य गगिां वैहैदक िाि के उत्तुगिं चगरर-पवतसों से उद्गम पाकर वतमसान के इनत ास तक अनेक समति क्षेत्रों से अनेक भू-भागों को सिींचती ुई, ववशिा प्रवा को अपनेमें लमिाती ुई, अनेक पनतत आत्माओ िं का उद्धार करती ुई तथा मरुस्थि में िुप्त ोनेका खतरा टािती ुई आज प िे ेकी तुिना में ब ुत द्रुत गनत व उत्सा से अग्रसर ो र ी ै। म िोगों की जानत-भेद व्यवस्था ने जो वीरान तथा अनुपजाऊ क्षेत्र को उपजाऊ तथा सपिंन्न बनाकर और जो समृद्ध तथा फिने-फूिने की ी क्स्थनत में थे,े उन् ें ानन न प ँुँिुाते ुए जो माग स म िोगों के साधुवृत्त के स्मृनत-शास्त्रकारों ने तथा देशालभमानी राज्यश्रेष्ठी ने अत्यचधक योनय प्रकार से बताया या उसी माग सपर अग्रसर ोते े ुए म िोगों की जानत की रक्तगगिां का उदात्त प्रवा अखडिं रूप से प्रवाह त ोता र े, इस बात की व्यवस्था की।

मान्यता प्राप्त अिंतरजातीय ववावा

मारी चार प्रमुख जाततयों में ोनेवालेअतिंरजातीय ववावा ों के माध्यम से या कफर चार प्रमुख जाततयों व सष्म्मश्र उपजाततयों में ुए ववावा ों के माध्यम से उत्पन्न जाततयों के शलए ी न िीं, अवपतुप्राचीन इतत ास के काल में जो समाज व जाततयाँ ँथीं, उनके शलए भी य बात उतनी ी सत्य थी कक मारी जातत की रतत गगिंा कई वविाल प्रवा ों को अपनेमें समाते ुए ब र ी थी, अध्क सपिंन्न ो र ी थी।

मारी िार प्रमुख जानतयों में ोनेविोअतिंरजातीय ववावा ों के माध्यम से या कफर िार प्रमुख जानतयों व सक्म्मश्र उपजानतयों में ुए ववावा ों के माध्यम से उत्पन्न जानतयों के लिए ी न िीं, अवपतु प्रिीन इनत ास के किा में जो समाज व जानतयाँ ँथीं, उनके लिए भी य बात उतनी ी सत्य थी कक मारी जानत की रक्त गगिंा कई ववशिा प्रवा ों को अपनेमें समाते े ुए ब र ी थी, अचधक सपिंन्न ो र ी थी। नेपिा अथवा मिाबार में जो प्रथाएँ ँआज तक प्रयोग में आ र ी ैं, उनका अविोकन करना उचित ोगा। व ाँकी गैर-आय समिू वनवासी क्स्रयों से उच्विणीय पुरुषों को ववावा करने की अनुमनत दी गई ै। अब ये स्वनिंि वनवासी जानतयाँ ैं ैं - य क ना सि भी मान लिया जाए, तब भी ह दिंू ूसस्कृिनत का रक्षण करते ेसमय क्जस सा स तथा प्रेम का पररिय उन् ोंनेहदया, इससे उन् ें मारी जानतयों में ी समाववष्ट ककया जाता ै। इसके अनतररक्त वे समान रक्त तथा

सापिेक्षों में बोध के लिए सबिंद्धि ो गई ैं। नागवशिं क्या ककसी द्रववड वशिं का नाम ै ?

अब अक्ननवशिं के युवकों ने नागकन्याओंको अगिंीकार ककया तथा िद्रिंवशिं व सूयवसशिं-दोनों वशिों ने अपनेदोनों वशिं के युवकों को अपनी कन्याएँअवपतस की,ि तब परस्पर भेदभाव िुप्त ो गया। उस समय य प्रतीत ोनेिगा था कक जानतभेद की सस्थिा कुछ लशचथि पडकर अतिंतः िुप्त ो जाएगी। य भय बौद्ध धम सके उत्कष सका कुछ शतकों का किा छोडकर ष सके समय तक अतिंरजातीय ववावा राजमान्य ोनेके कारण लमट गया। उदा रण के लिए पाडिंवों के ी पररवार की बात िीक्जए। पराशर ऋवष ब्राह्मण थे। ककसी मछुआरे की सुदिंर कन्या से उनका प्रेम ो गया। उस सबिंधिं से जगद्ववख्यात व्यास मुनन उत्पन्न ुए। भववष्ट्य में व्यास को भी अबिंा तथा अबिंालिका नाम की दो क्षत्रिय राजकन्याओं से दो पिु प्राप्त ुए, उनमें एक पडिंु था। उसनेननयोग पद्धनत से पिु प्राप्त करने की अनुमनत अपनी क्स्रयों को प्रदान की। भववष्ट्य में ववलभन्न, परिंतु अज्ञात जानतयों के पुरुषों से प्रेमाराधन करते े ुए उन् ोंनेववख्यात म ाकाव्य के नायकों को जन्म हदया। कण,स बब्रुवा न," घटोत्कि," ववदरुु" आहद उस समय के इतने ववशेष व्यक्क्तयों का आधुननक उल्िेख न करते ुए म िद्रिंगुप्त का आधुनुनक उदा रण पिाकों के सम्मुख प्रस्तुत करते े ैं।

~~भववटय में व्यास को भी अबिंा तथा अबिंाशलका नाम की दो क्षबत्रय राजकन्याओंसे दो पुत्र प्राप्त ुए, उनमें~~ एक पडिंु था। उसनेतनयोग पद्तत से पुत्र प्राप्त करने की अनुमतत अपनी ष्स्त्रयों को प्रदान की। भववटय में ववशभन्न, परिंतु अज्ञात जाततयों के पुरषों सेप्रेमारान् करते े ुए उन् ोंने ववख्यात म ाकाव्य के नायकों को जन्म हदया।

िआारिं कु िमुच्यते

~~**यहद कोई पुरष अथवा स्त्री अपने वैयष्ततक आचरर् के कारर् अपनी जातत से अलग ोकर अन्य जातत में गई**~~

ोगी तो "िद्रौ ब्राह्मर्तामेतत ब्राह्मर्चैतत िद्रताम्।् " "न कुल िकुलाशमत्या ुराचारिं कुलमुच्यते । आचार किुलो राजन् ्ए चामुत्र नदिंते े।। उपासते ेयेन पूवी दववजा सध्यिा िन पष्चचमा।िं सवांस्तान् धाशमकसो राजा ुद्रकमाखतर् योजयेत् ्॥"

~~द्रिंगुप्त ने ब्राह्मण कुमाररका से वववा ककया और अशोक के वपता को जन्म हदया ऐसा-क ा जाता ै।~~ अशोक जब राजकुमार था, तब उसनेककसी वैश्य कन्या से वववा रिाया। वैश्य ोते े ुए भी ष सने अपनी कन्या का वववा क्षत्रिय राजपुि से कर हदया। व्याधकमा सव्याध का पुि था, उसकी माता एक ब्राह्मण कन्या थी। व्याध से उसका प्रेम ो गया। उसने व्याध से वववा ककया। इन दोनों के सबिंधिं से वविमाहदत्य के 'यज्ञाािय'स का जन्म ुआ। सूरदास कृष्णभट एक ब्राह्मण था, परिंतु ककसी िाडिंा किन्या से उसका प्रेम ो गया, उसनेउससे सावजसननक रूप से वववा ककया तथा अपनी गृ ृस्थी प्रारिंभ की। व 'मातगिंी पथिं' नामक धालमकस पथिं के सस्थिापक के रूप में ववख्यात ुआ। मातगिंी पथिं के िोग स्वय िंको ह दिं ूक ते े ैं। उन् ें य अचधकार भी प्राप्त ै, परिंतु य ी िंय बात खत्म न िीं ोती। यहद कोई पुरुष अथवा स्त्ि अपनेवैयक्त्तक िआरण के कारण अपनी जानत से अिग ोकर अन्य जानत में गई ोगी तो "शुद्रौ ब्राह्मणतामेनत ब्राह्मणर्श्िनेति शूद्रताम्।् " "न किु िं किुलमत्या ुरिाारिं किुमुच्यते। िआार कुशिो राजन् ्ए िामिु नदिंते॥ उपासतेयेन पूवी द्ववजा सध्यिा िंन पक्श्मिा।िं सवांस्तान् ्धालमकसो राजा शुद्रकमाखसण योजयेत् ्॥" य आज्ञा केवि भय उत्पन्न करने ेतु न िींप्रसृत की गई थी। अनेक क्षत्रियों ने कृवष तथा अन्य व्यवसाय अपना लिये। इस कारण क्षत्रिय के रूप में उनके प्रनत आदर कम ो गया और उनकी गणना अन्य जानतयों में की जानेिंगी। कुछ शूर िोग य ाँ ाँतक कक कुछ वनवासी जानतयाँ ाँअपनेशौय सतथा परिम के कारण क्षत्रियों जैसी योनयता प्राप्त करती थिीं, क्षत्रियों के ववलशष्ट्ट अचधकारों के योनय ो जानेपर कुछ उपाचधयों का उपयोग भी कर सकते थे। िोग भी उनका क्षत्रियत्व स्वीकार करते। जानत से बह ष्ट्कृत ोना ननत्य की बात ो गई थी। अथात्स ्अन्य ककसी जानत में इन बह ष्ट्कृत िोगों को स्थान लमि जाता था।

अवैहदकजानतसेवैहदकोंकेवववा -सबिं धिं

अवैहदक जाततयों में वैहदकों के वववा की प्रथा वैहदक म् तदवारा प्रस्थावपत जातत सस्थिा पर ववचवास रखनेवाले े ह दिं ूलोगों में ी केवल प्रचशलत न िींथी बष्ल्क ह दिंओिं में जो अवैहदक जाततयाँ ाँथीं उनमें भी इस प्रकार की घिनाएँ ोती थी।िं एक ी पररवार में वपता बौद्, माता वैहदक तथा पुत्र जैन ोतेथे- य बौद् के समय प्रचशलत था।

अवैहदक जानतयों में वैहदकों के वववा की प्रथा वैहैदक धम सद्वारा प्रस्थावपत जानत सस्थिा पर ववश्वास रखनेविो ेह दिंू िूोगों में ी केवि प्रिलित न िींथी बक्ल्क ह दिंुओंुमें जो अवैहदक जानतयाँ ँथीं उनमें भी इस प्रकार की घटनाएँ ोती थी।िं एक ी पररवार में वपता बौद्ध, माता वैहदक तथा पुि जैन ोतेथे–े य बौद्ध के समय प्रिलित था। वैसा आज भी हदखाई देता ै। गुजरात में तो वैष्णव तथा जैनों में वववा -सबिंधिं ोते े ैं। पजिंाब व लसधिं में लसख तथा कट्टर सनातननयों में वववा ोते ेथे। आज का मानभाव अथवा लिगिंायत या सनातनी आज का ह दिंू ू ै तथा आज का वैहैदक ह दिंू ूकि का लिगिंायत अथवा लसख ोनेकी सभिंावना ै।

अत: ह दिंू ूके नाम के समान अन्य कोई भी नाम म िोगों की जातीय तथा वालिंशक एकता का यथाथ स प्रदशनस न िींकर सकती। म िोगों में कुछ आय सथेतो कुछ अनाय सथे; परिंतु आयर तथा नायर भी म िोगों जैसे े ह दिंू ू ी थेऔर रक्त की दृक्ष्ट से भी एक ी थे। म िोगों में कुछ ब्राह्मण ैं तो कोई नामशूद्र अथवा पिंिम भी ैं, परिंतु ब्राह्मण ो या िाडिंाि, म सभी ह दिंू ू ैं, एक ी रक्त के ैं। म िोगों में कुछ दाक्षक्षणात्य ैं तो कुछ गौड, परिंतु गौड तथा सारस्वत-सभी ह दिंू ू ी ैं। म िोगों में कुछ राक्षस थेऔर कुछ यक्ष भी थे,े कफर भी म सभी ैं तथा म सभी िोगों की नसों में प्रवाह त ोनेविाा रक्त भी एक सा ी ै। म िोगों में सारे ह दिंू ू ी ैं, एक ी रक्त ै। म िोगों में कुछ जैनै ैं तो कुछ जगिंम, परिंतु जैन ो या जगिंम, म सभी ह दिंू ू ी ैं तथा एक ी रक्त के ैं- म िोगों में कोई एकेश्वरवादी ै तो कोई सवेश्वरवादी और कोई ननरीश्वरवादी ै, परिंतु सभी ह दिंू ू ी ैं तथा एक ी रक्त के ैं। म िोग केवि एक राष्ट्र ी न ी िं ैं, जानत भी ैं, जन्मलसद्ध बधिुंभाव का नाता म िोगों में ववद्यमान ै। म िोगों को ककसी भी अन्य वस्तु की आवश्यकता न िीं ै। य प्रश्न अपनेमन का तथा अतिं:करण का ै। में य ननक्श्ति रूप से प्रतीत ोता ै कक राम और कृष्ट्ण, बौद्ध तथा म ावीर, नानक और ैतिन्य, बसव" तथा माधव," रोह दास तथा नतरुवेल्ल्र" आहद की धमननयों में ब नेविाा प्रािीन रक्त आज के समस्त 'ह दिंओु'िं की सभी धमननयों में प्रवाह त ो र ा ै। हृदय-स्पदिंन ो र ा ै। कारण- म सभी रक्त के प्रेम-सबिंधिंों के फिस्वरूप एक जानत ैं।

वस्तुतः ववचार करने पर प्रतीत ोता ै कक इस ववचव में एक ी जातत ै और व ै मानवजातत। एक ी प्रकार के मानवी रतत के प्रवाह त ोने के काररर् य ववचव में आज तक जीववत ै। इसके अततररतत दूसूरा कोई भी कथन केवल कामचलाऊ और सापेक्षतः सत्य ी क लाएगा।

वस्तुतःमानवजानत ी ववश्व की एकमेव जानत ै

ईचवर का अष्स्तत्व स्वीकार करनेवाले अथवा न करनेवालेककसी भी म्मतत अथवा तत्त्वज्ञान, सामाष्जक पद्तत पर ववचवास करनेवाला यहद कोई ह दिंू ू ोगा और व म्मतत, तत्त्वज्ञान अथवा सामाष्जक पद्तत तनववववताद रूप से म लोगों के राटर में उपजी ुई तथा एकमेव रूप से ह दिंू ूप्रणीत ो तो वी ह दिंू ूअपने उस ववशिटि पथिं का त्याग कर सकेगा"

वस्तुतः वविार करने पर प्रतीत ोता ै कक इस ववश्व में एक ी जानत ै और व ै मानवजानत। एक ी प्रकार के मानवी रक्त के प्रवाह त ोनेके कारण य ववश्व में आज तक जीववत ै। इसके अनतररक्त दूसूरा कोई भी कथन केवि कामििाऊ और सापेक्षतः सत्य ी क िाएगा। जानत- जानतयों के बिी जो कृत्रिम दीवारें आप गिि खडी कर देते े ैं, उन् ें चगराकर नष्ट करने का प्रयास प्रकृनत अववरत रूप से करती र ती ै। ववलभन्न िोगों में परस्पर रक्त-सबिंधि न ोने देने ेतु प्रयास करना रेत की नीविं पर कोई इमारत खडी करने जैसा ी ै। स्त्री-पुरुषों का परस्पर आकषणस ककसी भी धमिासाय सकी आज्ञा से प्रबितर लसद्ध ो िुका ै। अदिंमान के वनवासी गिगों के रक्त में तथाकचथत आय सरक्त के त्रबदिं ुलमिे े ुए ैं (अथात्स ्य ी बात आयों के बारे में भी क ी जा सकती ै। उनके रक्त में अदिंमान के आहदवालसयों का रक्त ै) । अतः य ी सि ै कक प्रत्येक के रक्त में व ी पुरानी जानत का रक्त ी प्रवाह त ो र ा ै। य बात कोई भी क सकता ै अथवा इनत ास का अध्ययन करने पर उसे े ऐसा क ने का अचधकार प्राप्त ोगा। उत्तरी ध्रुव से दक्षक्षणी ध्रुवु तक के मानवों में जो एकता मूिरूप से ववद्यमान ै, व ी एकमिा सत्य ै-अन्य सभी सापेक्षतः समझनेकी बातें ैं।

ह दिंतुव का दूसूरा आवश्यक अलभिक्षण

सापेक्षतः क ना ोगा कक ह दिंू ूतथा य ूदी िोगों के अनतररक्त कोई भी ऐसा न िीं क सकता कक व एक ी जानत का ै तथा उसका य कथन न्यायोचित ै। ककसी ह दिंू ूसे ववा -सबिंधि बनानेवािा दूसूरा ह दिंू ूअपनी जानत के लिए पराया ो सकता ै, परिंतु व अपनेह दिंतुव से कभी दूरू न िीं ो पाता। ईश्वर का अक्स्तत्व स्वीकार करनेवािो अथवा न करनेवािो ककसी भी धममसत अथवा तत्त्वज्ञान, सामाक्जक पद्धनत पर ववश्वास करनेवािा यहद कोई ह दिंू ू ोगा और व धममसत, तत्त्वज्ञान अथवा सामाक्जक पद्धनत ननववववसाद रूप से म िोगों के राष्ट्र में उपजी व [illegible] सकेगा;
परिंतु अपना ह दिंतुव त्यागने का वविार भी उसके मन में न िींउिगा ! क्योंकक ह दिंतुव का सबसे प्रमुख और आवश्यक ै िक्षण रक्त से ह दिंू ू ोना। इसी कारण लसधिुंसे सागर तक फैिी ुई इस भूलम में वपतृभूलम के रूप में क्जन् ें प्रेम ै तथा क्जस जानत ने दूसूरों को अपनाकर, नया सबिंधि बनाकर ब ुत प्रािीन समय से सप्तलसधिुं ुके समय से अब तक उन्ननत की ै उस जानत का रक्त उन् ें आनुवलंिशक रूप से प्राप्त ुआ ै। ह दिंतुव के दो प्रमुख अलभिक्षणों को वे प्राप्त कर िुके ैं- ऐसा समझना ी उचित ोगा।

समान सस्कृिनत

कुछ ववचार करने पर म लोगों को य प्रतीत ोगा कक एक राटर तथा एक जातत केवल ये दो अशभलक्षर् ी

ह दिंतुव के सव तअशभलक्षर् न ैंिअज्ञानमूलक दुरुग्र ों का यहद मुसलमान त्याग कर देंगे ेतो ह दिंसुथान में तनवास करनेवाले अध्कतर मुसलमान म लोगों की इस भूशम से वपतृभूशम की तर प्रेम करने लगेंगे।

कुछ वविार करने पर म िोगों को य प्रतीत ोगा कक एक राष्ट्र तथा एक जानत केवि ये दो अलभिक्षण ी ह दिंतुव के सव सअलभिक्षण न िीं ैं। अज्ञानमूिक दुरुग्र ों का यहद मुसिमान त्याग कर देंगे ेतो ह दिंसुथान में ननवास करनेविोअचधकतर मुसिमान म िोगों की इस भूलम से वपतृभूलम की तर प्रेम करने गिेंगे। उनमें से जो स्वदेशालभमानी तथा उदार अतिःकरणविैं, उन् ोंनेआज तक इस प्रकार प्रेम ककया ै। लखों िोगों के उदा रणों से ऐसा ज्ञात ोता ै कक उनका धमांतरण ककए जानेके समय बि प्रयोग अथवा जबदरस्ती ुई ै। उनके इस धमांतरण का इनत ास इतना नया ै कक उनकी नसों में ह दिं ूरक्त का अलभसरण ो र ा ै - य बात िा ने पर भी वे भिू न िींसकेंगे,े परिंतु म िोग केवि सत्य की खोज करने में िगैं। व सत्य क्या ै, य ननक्श्ित करने का क्जन िोगों का जरा भी ेतुन िीं ै, वे मुसिमानों को ह दिं ूमिू के क्यों क ें भि ?

कश्मीर व अन्य स्थानों के मुसिमान तथा दक्षक्षण भारतीय ईसाई अपने-अपनेननयमों का पािन इतनी कट्टरतापूवकस करते े ैं कक अपनी जानत-धम सके अनतररक्त अन्य ककसी के साथ वे ववा -सबिंधिं न िींबनाते। इस कारण उनके मिू ह दिं ूरक्त में पराई जानत के रक्त की लमिावट न िीं ुई ै। इसके पश्िात् ्भी उन् ें उस अथ समें ह दिं ून ी िंक ा जा सकता, क्जस अथ समें म िोग 'ह दिं'ू सबिंोधन का प्रयोग करते े ैं। समान ह दिं ूभूलम के लिए जो प्रेम मारे मन में ववद्यमान ै तथा जो रक्त म िोगों के हृदय के स्पदिंनों को कायरसत रखता ै, व ी रक्त म िोगोंकी नसोंमेंभी प्रवा ह्त ोता ै। इसी कारण म ह दिं िोग एक-दूसरे से बद्ध न िीं

सस्कृिनत का म सभी िोग भक्क्तभाव पूवकस आदर करते े ैं, क्जस सस्कृिनत से म िोगों के मन में समान रूप से प्रेम ै, उसी प्रेम के कारण म सब ह दिं िोग एक ैं। म िोगों की ह दिं ूसभ्यता को (Civilization) सस्कृिनत क ना अचधक यथाथ स ै, क्योंकक इस शब्द में सस्कृित भाषा का अनायास उल्िेख ककया गया ै। म िोगों की ह दिंजूानत के भूतकाि में जो-जो उत्कृष्ट सरा नीय तथा सग्रिं णीय था, उसे े मारी म ान् ्सस्कृिनत को भी शब्दरूप देकर, उन सभी का जतन करने का अमूल्य साधन सस्कृित भाषा ने में हदया ै। म िोगों का एक राष्ट्र ै तथा जानतयाँ ँभी एक ैं। इसलिए म िोगों की सस्कृिनत भी एक ै। इस कारण म िोग एक ैं।

अपनी ष्जस म ान् ्सस्कृितत का म सभी लोग भष्ततभाव पूवकत आदर करते े ैं, ष्जस सस्कृितत म लोगों के मन में समान रूप से प्रेम ै, उसी प्रेम के कारर् म सब ह दिं ूलोग एक ैं। म लोगों की ह दिं ूसभ्यता को (Civilization) सस्कृितत क ना अध्क यथाथ त ै, तयोंकक इस िब्द में सस्कृित भाषा का अनायास उल्लेख ककया गया ै।

सस्क्रिनतकाअथसक्या ै?

राटर की सस्क्रितत का इतत ास उसके ववचारों, आचारों तथा उपलष्ब्यों का इतत ास ोता ै। वाङ्मय तथा कलाओ िसे राटर की वैचैाररक ऊँचाई की कल्पना की जा सकती ै, इतत ास तथा सामाष्जक रीतत-ररवाजों, उनके रूढ़ आचारों, पराक्रम तथा हदष्ववजयों की जानकारी प्राप्त ोती ै।

परिंतु सस्क्रिनत ककसे क ते े ैं ? सस्क्रिनत मानवी मन का आववष्कार ै। 'सस्क्रिनत' का अथ स ै मानव द्वारा इस भौनतक सृकूष्ट पर ककए गए सस्किारों क्का इनत ास। यहद परमेश्वर को इस भौनतक सृकूष्ट की रिना करनेवािा माना जाए, तो 'सस्क्रिनत' मानव द्वारा ननलमतस दूसूरी सृकूष्ट ी मानी जाएगी। सस्क्रिनत का सवोच्ि ववकास, मनुष्य की आत्मा द्वारा भौनतक वस्तुओंतथा मनुष्यों पर पाई ुई ववजय में प्रकट ोता ै। ज ाँ ँतक मनुष्य को, अपनी आत्म को सुख की अनुभूनत हदिाने के लिए भौनतक सृकूष्ट की रिना में यश लमिता र ा ै, व ींसस्क्रिनत का स ी रूप में प्रारिंभ ुआ ै। उस सस्क्रिनत की परमोच्ि राष्ट्र की सस्क्रिनत का ववजय और ववकास तभी ोता ै, जब मनुष्य समृद्ध व सपूंण सजीवन का उपभोग करता ै और सामथ्य,स सौंदय सव प्रीनत के उपभोग की आक्त्मक इच्छाओंकी पूनत सकरके अपार आनदिं प्राप्त करनेके सभी साधनों को व स्तगत करता ै।

राष्ट्र की सस्क्रिनत का इनत ास उसके वविारों, आिारों तथा उपिक्ब्धयों का इनत ास ोता ै। वाङ्मय तथा किाओ िसे राष्ट्र की वैिाररक ऊँिाई की कल्पना की जा सकती ै, इनत ास तथा सामाक्जक रीनत-ररवाजों, उनके रूढ़ आिारों, पराम तथा हदक्नवजयों की जानकारी प्राप्त ोती ै। इन सबमें से मनुष्य को अिग न ी ि हदखाया जा सकता, व तो राष्ट्र की प्रत्येक उपिक्ब्ध का अिग ोता ै। अदिंमान के आहदवालसयों द्वारा िकडी तराशकर जैसे–तैसेबनाई गई टेढ़ी-मेढ़ी डुगिी का ी सुधाररत रूप ै। अमेररकी बनावट की आधुननक युद्धनौकाओ िया ववनालशकाओं का पेररस की युवनतयों की आधुननक दे भूषा का मूि देखने को लमिता ै, आहदवासी 'पातुआ' स्त्री अपने कमरपट्टे में जो पत्तों का गुच्छ खोंसती ै - और मि इतने करने भर से क्जसकी दे भूषा व सौंदय सप्रसाधन पूरी ो जाती ै, उस पातुआ स्त्री के पण सगुच्छों में ! '

तथावप 'डुगिी' डुगिी ी बनी र ी तथा ववनालशका नौका भी ववनालशका नौका ी ै। उनमें साम्यता से अचधक लभन्नता अचधक ै। ह दिंओु िने भी दूसूरों की अनेक बातें स्वीकार की ैं तथा अपनी भी बातें अन्य िोगों को दी ैं। कफर भी उनकी सस्क्रिनत इतनी वैलशष्ट्ट्यपूण स ै कक अन्य ककसी सस्क्रिनत का बाह्य रूप उसके समान र ना सवथसा असभिंव ै। उनमें परस्पर लभन्नत्व ोते े ुए वे लभन्न न र कर, समान ो गए ैं। समान सस्क्रिनत, वाङ्मय तथा इनत ास के कारण ववश्व में जो उस समय की अन्य सस्क्रिनतयाँ अक्स्तत्व में ैं, उनमें से एक स्वतिंत्र सस्क्रिनत के रूप में ह दिंू सस्क्रिनत का जो स्थान ै, व स्थान प्रिार िोग प्रिार पर पड य ै। का अन्य ककसी सस्क्रिनत को प्राप्त ोगा- ऐसा प्रतीत न ीं ोता।

मीगोंकीउज्ज्विसिंस्कृनतकाउत्तराचधकार

ह दिंुओ िंका इतत ास न िीं ै' - इस प्रकार के पक्षपाती तथा अज्ञानमूलक के कारर् ववचव के प्रभाववत ो र े ैं। इस का प्रभाव ष्जन लोगों चुका ै, उन् ें मारा कथन आचचयकतारक तथा ववपरीत प्रतीत ो सकता ै कक ह दिंुओ िं ने लगभग अकेले े ी ीक व जलप्रवा ों के कारर् उत्पन्न ुई भीषर् आपवियों का सामना ककया ह दिंूजातत के इतत ास प्रारिंभ वेदों से ोता ै।

म ैंमैक्जनी का िररि पढ़ता ँू, तब क ता ँू कक वे ककतने देशालभमानी ैं। माधविााय सका िररि अपने आप मेरे मुँ से शब्द ननकितैं, ' म ककतने स्वदेशभक्त ैं।' पृथूवीराज का पतन याद करने पर तथा मृतूयु को गिे िगानेविो गोववदिंलस िंजी के दोनों पुिों का बलिदान याद करने पर म ाराष्ट्रीय ो या बगिंिी, दोनों ी शोक करते े ैं।

'ह दिंुओ िंका इनत ास न िीं ै' - इस प्रकार के पक्षपाती तथा अज्ञानमूिक प्रिार के कारण ववश्व के िोग प्रभाववत ो र े ैं। इस प्रिार का प्रभाव क्जन िोगों पर पड िुका ै, उन् ें मारा य कथन आश्ियिकसारक तथा ववपरीत प्रतीत ो सकता ै कक ह दिंुओ िंने िगभग अकेि े ी धरणीक व जिप्रवा ों के कारण उत्पन्न ुई भीषण आपवत्तयों का सामना ककया ै। ह दिंूजानत के इनत ास का प्रारिंभ वेदों से ोता ै। प्रत्येक ह दिं ूिडकी झूिे में क्जस िीरि को रोज सुनती ै, व साध्वी सीता पर रि गया ै। श्रीरामििंद्र को ममें से कुछ िोग अवतार मानते े ैं तो कुछ उन् ें एक िोकोत्तर रणवीर क कर पूजते ैं; परिंतुसभी िोग उनसे भक्क्तपूवकस प्रेम करते े ैं। मारुनत, राम तथा भीमसेन प्रत्येक ह दिं ूयुवक के लिए सवकसिीन बि या प्रथम स्फूनतस्सथान बन िुके ैं। उसी प्रकार साववत्री तथा दमयनिंत प्रत्येक ह दिं ूकन्या के लिए एकननष्ट् तिथा पवि प्रेम की आदशभूसत सती-साक्ध्वयाँ ँप्रतीत ोती ैं। गाय िरानेविो उस हदव्य गोपिा से राधा नेजो प्रेम ककया ै, उसी प्रेम का प्रत्यय र ह दिं ूप्रेमी को अपनी वप्रयतमा का िुबिंन िेते समय ोता ै।

कौरवों के साथ ुए भीषण सग्रिंाम, अजुनस, कण,स भीम और दु:शासन- इनमें ुए िुनौतीपूण सद्वद्वि जारों वष सपूव सकुरुक्षेि में ुए थे, तथावप प्रत्येक कुटीर में अथवा राजप्रासादों में भावनाओिंका क्षोभ करनेविो गीत उन सभी रसपूण सघटनाओिंके साथ आज भी गाए जाते े ैं। अलभमन्यु अजुनस को क्जतना वप्रय था, उतना ी व म िोगों को भी वप्रय िगता ै। उस राजीव नेि सुकुमार के रणक्षेि में ुए ननधन की वात्तास सुनते ी शोक से ववह्वि ोकर आिंद करनेविो उसके वपता ने अश्रुओ िंसे अलभषेके ककया ोगा। उसी तर प्रेमे तथा शोक से ववह्वि ोकर िकिा व कश्मीर तक सारा ह दिंुस्थान अश्रुलभषिंिन करता ै। इससे बढ़कर और क्या उदा रण ो सकते ैं? इससे अचधक म कुछ न िीं क सकते। मुट्ठी भर बािूको सब ओर फेंक हदया जाए, उसी तर यहद म सबको दश हदशाओ िंमें त्रबखेर हदया जाए, तब भी, रामायण व म ाभारत - ये दोनों ग्रिंथ में एकत्रित करने की क्षमता रखते े ैं। म ैंमैक्जनी का िररि पढ़ता ँू, तब क ता ँू कक वे ककतने देशालभमानी ैं। माधविााय सका िररि पढ़ पर अपने आप मेरे मुँ से शब्द ननकिते े ैं, ' म ककतनेस्वदेशभक्त ैं।' पृथूवीराज का पतन याद करने पर तथा

ह दिंतुव 73 मृतूयु को गि िगानेविो गोववदिंलस िंजी के दोनों पुिों का बलिदान याद करने पर म ाराष्ट्रीय ो या बगिंगिि, दोनों

ी शोक करतैं। देश के उत्तरी कोनेमें र नेविो आयसमाजी इनत ासकार को ऐसा िगता ै कक देश के दक्षक्षणी छोर में क्स्थत ववजयनगर साम्राज्य के सस्िथिपक रर र व बुक्का मारे लिए ी तो दुशुमनों से िडे थेतथा दक्षक्षणी छोर के सनातनी इनत ासकार को भी ऐसा िगता ै कक उत्तर के गुरु तेगब ादुरु ने भी मारे लिए मृतूयु का आलिगिंन ककया। म सबके राजा एक ी थे। मारे राज्य भी एक ी थे। मनेसमृदूचध व सपिंन्नता का भी एक समान उपभोग ककया। म सबने अपनेपरिम सेहदक्नवजय प्राप्त ककए। ववजय ुई, तब तो म सब एक साथ थे े ी, पराजय व आपवत्तयों को भी मनेएकसाथ र कर झेिा। ज ाँ ँमोका बसाय्या, सूयाजसी वपसिा, जयिदिं तथा किाा प ाड" नामक बगिंगिि ब्राह्मण, क्जसको मुसिमान युवती से ववुवा रिने के कारण ह दिंू ूधम स से बा र कर हदया गया, क्जससिेोचधत ोकर उसनेमुसिमान धम सको स्वीकार ककया व कई महिंदर नष्ट कर हदए, िोगों को धमभ्सष्ट कराया-इन सबके नाम का उच्िारिण करना भी में पातक सा िगता ै, व िींअशोक, पाखणनन और कवपिमुनन के नामों के उच्िारिण के साथ अपने शरीर में नविेतना जाग उिती ै और आत्मगौरव का अनुभव ोता ै।

कौरवों के साथ ुए भीषर् सग्रिंाम, अजुनत, कर्,त भीम और दु:ुसिन- इनमें ुए चुनौतीपूर् तदवदिंव जारों वष तपूव त कुरक्षेते्र में ुए थे, तथावप प्रत्येक क्िुीर में अथवा राजप्रासादों में भावनाओिंका क्षोभ करनेवालेगीत उन सभी रसपूर् तघिनाओिंके साथ आज भी गाए जाते े ैं। अशभमन्युअजुनत को ष्जतना वप्रय था, उतना ी व म लोगों को भी वप्रय लगता ै।

कि और युद्ध क्या आप िोगों में निंं ोते ?

ह दिंओु िंमें जो परस्पर युद् ुए, उस ववषय में तया क ना चाह ए। म इसके प्रत्िुर में क ते ैं, 'इग्लिडैं के यॉकत और लकिंस्रि घरानों६ ४ में ुए युद्-ध्वजधचह्न गुलाब ोनेके कारर् इन युदो् को 'गुलाबों का युद्' नाम से जाना जाता ै, उनके बारे में तया क ा जाए ?' इिली, जमनती, फ्रांसि, अमेररका में कई सस्िथिाओिंके बीच ववशभन्न पथिों के बीच या कफर समाज के वगों के बीच आपसी लडाइयाँ ुई.

ह दिंओिंमें जो परस्पर युद्ध ुए, उस ववषय में क्या क ना िाह ए। म इसके प्रत्युत्तर में क ते े ैं, 'इंनिडैं के यॉकस और िकिंस्टर घरानों" में ुए युद्ध- ध्वजचिह्न गुिाब ोनेके कारण इन युद्धों को 'गुिाबों का युद्ध' नाम से जाना जाता ै, उनके बारे में क्या क ा जाए ?' इटिी, जमनसी, फ्रांसि, अमेरेरका में कई सस्िथाओिंके बिी ववलभन्न पथिों के बिी या कफर समाज के वगों के बिी आपसी िडाइयाँ ँ ुईं, कई बार तो एक पक्ष ने अपनी देश में र नेविो ववपक्षी बधुिंओिं का नामोननशान लमटानेके लिए ववदेशी स ायता भी प्राप्त की, उन सब के बारे में क्या क ा जाए ? इतना सबकुछ ो जानेके पश्ात् ्भी सभी एक राष्ट्र तथा एक समान इनत ास के धनी ैं। तब

ह दिं ूभी उसी प्रकार सेएक राष्ट्र तथा एक ी जानत ैं, यहद इसी प्रकार ह दिंओु िंका कोई समान इनत ास न िीं ै तो ववश्व के अन्य राष्ट्रों का भी इस प्रकार का इनत ास न िीं ोना िाह ए !

सस्ंकृित ी म िोगों के देश की भाषा ै

मारे ईचवरों के सभिंषर् की भाषा य ी देववार्ी थी। म लोगों के कववयों ने सस्ंकृित भाषा में ी काव्य-रचना की। म लोगों के अत्यिुम ववचार, अत्यिुम कल्पना अथवा काव्य-रचना अनायास ी सस्ंकृित में प्रकि ककए गए ैं। लाखों लोग आज भी उसे े'देवभाषा' ी मानते े ैं।

क्जस प्रकार इनत ास का अध्ययन करने से ी म िोगों को अपनी जानत के परिाम एव िंहदक्नवजय का बोध ोता ै, उसी प्रकार अपने वाङ्मय का सपिूंण सवविार करने के पश्िात् ् ी म िोगों को अपनी जानत की ैंवास्तवि- सपिंवत्त का इनत ास ज्ञात ोता ै। ऐसा क ते े ैं कक वविार व शब्द कोई दो पृथृक् िीजें न िीं ेकस्संस्कृत, वि दोनों अलपक्ष्मय तथा सभी िोगों की समान भाषा-सस्ंकृित - पृथृक् न िीं मेंारी वस्तुतः भृषा ै। मारी माताएँ ँइसी भाषा का प्रयोग करती थीं तथा इसी भाषा से म िोगों की आज की प्राकृत भाषाएँउत्पन्न ुई ैं। मारे ईश्वरों के सभिंाषण की भाषा य ी देववाणी थी। म िोगों के कववयों ने सस्ंकृित भाषा में ी काव्य-रिना की। म िोगों के अत्युत्तम वविार, अत्युत्तम कल्पना अथवा काव्य-रिना अनायास ी सस्ंकृित में प्रकट ककए गए ैं। िाखों िोग आज भी उसे े'देवभाषा' ी मानते े ैं। उसी की शब्द-सपिंवत्त ने गुजराती तथा गुरुमुखी, लसधिंी एव िंह दिंी, तलमि तथा तिेुगु, म ाराष्ट्री तथा मियािम, बगिंािी और लसधिंी आहद भाषा भचगननयों ने अपनी भाषा समृदृ्ध की। सस्ंकृित म िोगों की भावनाओंतथा आशा-आकाक्षिंाओंको एक प्रकार का मयाहसदत सुसवंाद प्रदान करनेवािी केवि एक भाषा ी न िीं ै, अनेक ह दिंओु िंको व ककसी िमिं के समान मुनध कर देती ै। सभी को व सगंीत के समान मोह त करती ै।

ह दिं ओु िं की वाङ्मय सपिं वत्त

कला तथा कलाशिल्प भी म लोगों की जातत की समान सपिंवि ै। कफर व कला व शिल्प ककसी भी वैहैदक अथवा अवैहैदक म्मतत का पुरस्कार तयों न करता ो। ष्जन शिष्ल्पयों ने ये कला कौिल्य के जो आदि त स्थावपत ककए, ष्जन् ोंनेतज्ञ मागदतिनत ककया, ष्जन् ोंने कर के रूप में य तनमार्त करने ेतु न् की आपूतत तकी तथा ष्जन राजाओंने ये शिल्प बनाने में प्रेरर्ा देनेका काय तककया, वे सभी वैहदक ों या अवैहदक, परिंतु सभी ह दिं ू ी थे।

वेद जैन िोगों के प्रमाणभूत ग्रथिं न िींबन सकते, परिंतु म िोगों की जानत के अत्यतिं प्रािीन इनत ास ग्रथिंों के रूप में म िोगों के समान वे जैनों के भी ग्रथिं ैं। 'आहदपुराण' ककसी सनातनी द्वारा न िींरिा गया ै,

ह दिंतुव 75 परिंतु 'आहदपुराण' को सनातनी व जैन दोनों ी मानते े ैं। 'बसवपुराण' लिगिंायतों का वेद ै, परिंतु व लिगिंायत

तथा लिगिंायेतर ह दिंओु िंका भी ै। कानडी भाषा का सबसेप्राीन तथा ऐनत ालसक दृक्ष्ट से अत्यतिं म त्त्वपूण स उपिब्ध वाङ्मय व ी ै। गुरुगोववदिंजी द्वारा रचित 'वर्वाचि नाटक' को बगिंाािकै ह दिं ूअपनी वाङ्मय सपिंवत्त मानते े ैं। उसी प्रकार 'ैतन्य ि ररिामृत' को लसख ब ुत मूल्यवान समझते े ैं। कािीदास तथा भवभूनत रिक"

और सुश्रुत," आयभसट्ट" एविं वरा लमह र," भास और अश्वघोष," जयदेव" और जगन्नाथ आहद ने म िोगों के लिए लिखा। उनके वाङ्मय से म िोगों को आनदिं प्राप्त ोता ै तथा उनका वाड्मय एक अमूल्य सपिंवत्त ै। तलमि कवव किंब तथा ाकफज - इन दोनों का काव्य ककसी बगिंािाािी व्यक्क्त के सम्मुख एक साथ रखा गया और उससेपूछा गया कक इनमें सेतुम् ारा कौन ै? तब व क ेगा कक किंब कवव मेरा ै। रवीद्रिंनाथ तथा शेक्ेसवपयर का वाङ्मय देखकर म ाराष्ट्रीय ह दिं ूतत्किा बिो उिेगा-'रवीद्रिं ! रवीद्रिं मेरा ै!'

किा तथा किालशल्प

किा तथा किालशल्प भी म िोगों की जानत की समान सपिंवत्त ै। कफर व किा व लशल्प ककसी भी वैहदक अथवा अवैहदक धममसत का पुरस्कार क्यों न करता ो। क्जन लशक्ल्पयों ने ये किा कौशल्य के जो आदश स स्थावपत ककए, क्जन् ोंनेतज्ञ मागदसशनस ककया, क्जन् ोंने कर के रूप में य ननमाणस करने ेतु धन की आपूनत सकी तथा क्जन राजाओंने ये लशल्प बनाने में प्रेरणा देनेका काय सककया, वे सभी वैहदक ों या अवैहदक, परिंतु सभी ह दिं ू ी थे। आलसधिंुलसधिंुपयंता की भूलम की म ान् ्जानत के - ह दिंजूानत के ी थे। जो सनातनी क िातें, उन् ोंनेउस समय के बौद्ध स्तूपों के तथा किा लशल्पों के काय समें स्वयिंकष्ट स ते े ुए तथा द्रव्य देकर पूरे ककए ैं तथा उस समय के बौद्धों ने आज के सनातननयों की महिंदर तथा स्मारकों के एव ंकिा-कौशि के काय सद्रव्य देकर तथा प्रत्यक्ष अपनेश्रम सेपूरे ककए ैं।

ह दिं ूननबंधं ववधान

गौर् बातों में य ाँ–व ाँकुछ मतभेद ोते े ुए भी रीतत-ररवाज तथा समाज तनयमन के नीतत तनबं् म सभी के शलए समान ैं। वे ी म लोगों की एकता का कारर् ैं; उसका परररा्म तथा प्रयोजन ैं। ह दिं ूम् तके ास्त्रों की मूलभूत नीविं पर आ्ररत तनबं्- ववा्नों (Hindu law) के सबर्ाि मेंं ककतने भी गौर् मतभेद ों तथा य ाँ-व ाँ ँ परस्पर ववरो्ी् कुछ बातें भी समाववटि की गई”

गौण बातों में य ाँ-व ाँकुछ मतभेद ोते े ुए भी रीनत-ररवाज तथा समाज ननयमन के नीनत ननबंधं म सभी के लिए समान ैं। वे ी म िोगों की एकता का कारण ैं; उसका पररणाम तथा प्रयोजन ैं। ह दिं ूधम सके शास्रािकी मिूभूत नीविं पर आधाररत ननबंधं- ववधानों (Hindu law) के सबिंधिं में ककतने भी गौण मतभेद ों तथा

य ◌ाँ-व ◌ाँ ◌ँपरस्पर ववरोधी कुछ बातें भी समाववष्ट की गई ◌ों, तब भी उसकी रिना इतनी योनय प्रकार से की गई ◌ै कक उसकी ववशेषता स्पष्ट रूप से बनी र ◌ेगी। अमेररका के ववलभन्न राज्यों में तथा त्रब्रहटश प्रजासत्ताक राज्य में नए-नए ननबंधं ववधान (कानून) तैयार करने तथा उनको स्पष्ट रूप देने ◌ेतु ननबंधं ननलमतसासभा (ि◌ोकसत्ता आहद) का काय सभी गनत से िि◌ता ◌ो, परिंतु धमशसास्द्विारा व्यव ◌ार में पिान के लिए नीनत-ननयमों के जो लसद्धातिं बनाए गए तथा उन लसद्धातिों का ननबधिं-ववधान की पद्धनत को म का ◌ी आधार मानकर िि◌ं तो ववकास ◌ोकर सपिूंण सअवस्था को प्राप्त ◌ुई। आज भी स्वीकार करते ◌े ◌ैं। मिूभूत समानता अग्रिेंजी ननबधिं-ववधान का कोई वैलशष्ट्ट्यपूण सप ि◌ू उजागर करने ि◌ायक शब्द भी याद न िि◌ंआता। अन्य मुसिमान जानत की तर कई बार, ववशेषतः उत्तराचधकारों के मामिों में ह दिंू–ूननबंधं ववधान का आधार खोजा अथवा बो री ि◌ोगों ने लिया ◌ै; परिंतु इन ववरि तथा घातक अपवादों के ◌ोते ◌े ◌ुए भी मुसिमानी कानून ने अपनी ववशेषता बनाए रखी ◌ै। म ◌ाराष्ट्र अथवा पजिंाब के ह दिंओु ि◌ंके रीनत-ररवाज बगिंाि अथवा लसधिं के ह दिंओुंके रीनत-ररवाजों से अल्पत लभन्न ◌ोनेकी सभिंावना ◌ै, परिंतु अन्य गौण व्यव ◌ारों में इतना साम्य ◌ै कक म ◌ाराष्ट्र में रूढ़ नीनत व्यव ◌ार बगिंाि अथवा लसधिं के व्यव ◌ार ननबंधं शास्ि के अनुसार ◌ी ◌ोते ◌े ◌ैं। ऐसा प्रतीत ◌ोता ◌ै अथवा बगिंाि कै व्यव ◌ार म ◌ाराष्ट्र के समान ◌ी ◌ोतैं ऐसी धारणा बन सकती ◌ै। म ि◌ोगों की ककसी एक जानत के आिार-वविार, रूहढ़यों अथवा रीनत- ररवाजों को एकि ककया जाए, तब ऐसा प्रतीत ◌ोगा कक युद्ध म ि◌ोगों के ह दिं ◌ूनीनत-व्यव ◌ार न्याय-शास्ि का एक पृथक् तथा लिसिंनन अध्याय ◌ै। यहद इस अध्याय को इस ननबधिं ववधा में सक्म्मलित न करने के प्रयास ककए जाते ◌े ◌ैं तथा ब ◌ुत बुद्चधमानी का पररिय देनेके पश्िात् ◌्ये प्रयास सफि भी

ोते ◌े ◌ैं, तब भी इस अध्याय की पृथक्त्ता नछपाना सभिंव न िि◌ं ◌ोगा।

म ◌ाराटर अथवा पजिंाब के ह दिंओु ि◌ंके रीतत-ररवाज बगिंाल अथवा शस्ि के ह दिंओुंके रीतत-ररवाजों से अल्पत शभन्न ◌ोनेकी सभिंावना ◌ै, परिंतु अन्य गौर् व्यव ◌ारों में इतना साम्य ◌ै कक म ◌ाराटर में रूढ़ नीतत व्यव ◌ार बगिंाल अथवा शस्ि के व्यव ◌ार तनब्ि ि◌ास्त्र के अनुसार ◌ी ◌ोते ◌े ◌ैं। ऐसा प्रतीत ◌ोता ◌ै अथवा बगिंाल के व्यव ◌ार म ◌ाराटर के समान ◌ी ◌ौतेंऐसी ◌्रर् बन सकती ◌ै।

त्यो ारतथायिाम ◌ोत्सव

म सभी लोगों के त्यो ◌ार तथा उत्सव एक समान ◌ै। म लोगों के ◌्शमकत सस्किारों तथा ◌्शमकत आचारों में समानता ◌ै। ज ◌ाँ–ज ◌ाँ ◌ँह दिंू ◌ूवास करते ◌े ◌ैं, उन सभी स्थानों पर दि रा, दीपावली, रक्षाबिंन् एव ि◌ं ◌ोली आहद त्यो ◌ार अत्यतिं आनदिंायक मानेजाते ◌े ◌ैं। शसख तथा जैन, ब्राह्मर् एव ि◌ंपचिंम आहद सपिूंर् तह दिंू ◌ूववचव दीपावली का आनदिं उठाने में मग्न र ता ◌ै।

म सभी ि◌ोगों के त्यो ◌ार तथा उत्सव एक समान ◌ै। म ि◌ोगों के धालमकस सस्किारों तथा धालमकस आिारों में समानता ◌ै। ज ◌ाँ-ज ◌ाँ ◌ँह दिंू ◌ूवास करते ◌े ◌ैं, उन सभी स्थानों पर दश रा, दीपाविी, रक्षाबधिंन एव ि◌ं ि◌ोि आहद त्यो ◌ार अत्यतिं आनदिंायक मानेजाते ◌े ◌ैं। लसख तथा जैन, ब्राह्मण एव ि◌ंपिंम आहद सपिूंण सह दिंू ◌ूववश्व

ह दिंतुव 77 दीपाविी का आनदिं उिने में मनन र ता ै। केवि ह दिंसुथान में ी ऐसा न िीं ोता, ववश्व के अन्य खडिों में भी

ज ाँ–ँज ाँ ँबृ ृत्तर भारत का ववकास शीघ्र गनत से ो र ा ै, उस बृ ृत्तर ह दिंसुथान में भी ऐसा ी ोता ै। तराई-
जगिंमें एक भी झोंपडी ऐसी न िीं ोती, ज ाँ ँएक छोटा दीप जिाकर (लमट्टी का छोटा दीया) उस रात अपने द्वार पर न िींरखी जाती ! रक्षाबधिंन के हदन पजिंाब की ककसी अल् ड, वषतस युवती से िेकर मद्रास के ककसी स्नानसध्यिा शिी कमिस ब्राह्मण तक प्रत्येक ह दिं,ू 'एक देश, एक भगवान्, एक जानत, एक मनः प्राण। भाई-भाई का एक ी ननश्यि। भेद न ी िैं ै, भेद न िीं॥' इस भावना से रेशमी राखी बधिंवा र ा ै। ह दिंओुंमें जो सामान्य धालमकस वविार ैं, उनका मनेअभी तक उल्िेख न िींककया ै। इतना ी न िीं, अभी तक मनेधालमकस स्वरूप के ककसी भी रीनत-ररवाज का अथवा प्रसगिं का या सस्थिाओं का भी उल्िेख न िींककया ै, क्योंकक ह दिंतुव के प्रमुख अलभिक्षणों का वविार में जातीय दृक्ष्टकोण से ी करना था। ककसी धालमकस वविारों के अनुसार न िीं, कफर भी राष्ट्रीय तथा जातीय दृक्ष्ट से भी ववलभन्न तीथक्षेत्रि तथा व ाँिगनेवािी यािाएँह दिंजूानत की परिंपरागत सपिंवत्त ैं। जगन्नाथ का रथ-म ोत्सव, अमृतसर की वैशाखी, (बैसाखी), कुिंभ तथा अधकुसिंभ आहद म ायािाएँम िोगों की राष्ट्रदे में जीवतिंता तथा वविारों का अववरत प्रवा बनाए रखनेवािे ववराट् राष्ट्रीय सम्मिेन ी ैं। इन यािाओ िंतथा मेिों में जो िोकवविक्षण रीनत-ररवाज, ववलभन्न समारो तथा सस्किारों का दशनस ोता ै, उनमें कुछ िोग आवश्यक धालमकस कतव्सय से, तो कई अन्य िोग उत्सववप्रय ोनेके कारण व ाँमौज-मजा करने ेतु उपक्स्थत र ते ैं। व ाँउपक्स्थत र नेवािे प्रत्येक व्यक्क्त को य बात ठीक से समझ में आ जाती ै कक यहद उसे अपनी जीवन-यािा उत्तम प्रकार से पूरी करनी ै, तब उसे ह दिंजूानत के सामुदानयक जीवन से समरस ोना पडेगा।

सक्षिंप में म िोगों की सस्कृिनत का य प्रमुख भाग ै तथा इसी कारण म िोगों की सस्कृिनत एक स्वतिं सस्कृिनत के रूप में जानी जाती ै। प्रस्तुत ववषय पर वविार करते ुए इस बात पर समग्र वविार करना ैं सिंभव िगा क एकवंशता श्ट्रजाितहभिंदू ैं तथामजन केवि एक राष्ट्र ी न िीं
दोनों के लमिाप सेम िोगों की एक सस्कृिनत बन गई ै। इस सस्कृिनत का आववष्टकार तथा सरिंक्षण प्रथमतः और प्रमुख रूप से म िोगों की मातृभाषा द्वारा ी ककया गया ै, जो-जो स्वय िंको ह दिं ूमानता ै, व प्रत्येक व्यक्क्त इस सस्कृिनत का उत्तराचधकार प्राप्त कर जनमा ै तथा क्जस प्रकार इस भूलम से तथा पूवजसों के रक्त से उसकी दे बनी ै, उसी प्रकार उसका मन भी वास्तववक रूप में इसी सस्कृिनत से जनमा ै।

ह दिंतुव का तीसरा प्रमुख अलभिक्षण

ह दिं ूउसे े ी क ा जाता ै, ष्जसे ेशस्िुिे से समुद्र तक फैली ुई य भूलम अपनी मातृभूलम के रूप में अत्यध्क वप्रय ोती ै। वैहदक सप्तशस्िुिु के ह माियीन उच्च प्रदेश में, ष्जसके प्रारिंभ ोनेका स्पष्ट प्रमार् उपलब् ै और

नए-नए प्रदिंों से आगे बढ़ती ुई, ष्जनको उसनेस्वीकार ककया, उसे अपनेमें समाववटि करके उसे आत्मसात् ककया”

ह दिंू उसे ी क ा जाता ै, क्जसे लसधिंु से समुद्र तक फैी ुई य भूलम अपनी मातृभूलम के रूप में
के न मिमीन ज्ञप्रदेश में, कौसके प्रसिंभ ोनेका स्पष्ट प्रमाण
अत्यंयधक वप्राय् ोती ै। वैहदक सप्तसिंधु
उपिब्ध ै और नए-नए प्रदेशों से आगे बढ़ती ुई, क्जनको उसनेस्वीकार ककया, उसे अपने में समाववष्ट करके उसे आत्मसात् ककया, उसे िरमोत्कष सतक प ँुँिाकर जो जानत- ह दिंू नाम से क्जसने उत्कष सककया, उस म ान् जानत का रक्त ह दिंू नाम के लिए योनय प्रमाखणत ोनेविो प्रत्येक व्यक्क्त के शरीर में प्रवाह त ोता र ता ै।
ह दिंओु िंका तीसरा प्रमुख अलभिक्षण ै समान इनत ास, समान वाङ्मय, समान किा, एक ी ननबधिं ववधान, एक ी धम सव्यव ार शास्,ि एक साथ लमिकर मनाए गए उत्सव, एक साथ की गई यािाएँ, आिारववचध, त्यो ार तथा एक जैसे सस्कािर। साराशिंतः वे, जो ह दिंू सस्ंकृनत अपनी प्रतीत ोती ी ै। ऊपर ननहदसष्ट सभी अलभिक्षण प्रत्येक ह दिंू के पास हदखाई देंगे, य सभिंव न ीं ै, परिंतुह दिंू बाधिंवों में जो परस्पर समानता हदखाई देती ै, व अन्य ककसी अरब अथवा इंक्निश व्यक्क्त सेहदखाई देनेविाी समानता से ननक्श्ति रूप में अचधक ोगी। इसी प्रकार ह दिंओु िंके ये अलभिक्षण ककसी अह दिंू में न ींहदखाई दे सकते, य बात भी सि न ीं ै; परिंतु तब भी इन दोनों में समानता की तुिना में असाम्यता अचधक ोगी। अतः जो ईसाई अथवा मुसिमान समुदाय अभी तक ह दिंू ी था और धमातिंरत प्रथम पीढ़ी दुःखी व िोधपूण सधालमकस जीवन जी र ी थी, उन मुसिमान तथा ईसाई जानतयों को ह दिंूजानतयों का शुद्ध रक्त उत्तराचधकाररयों के रूप में प्राप्त ुआ ै। उन् ें भी अब ह दिंू क िाना सभिंव न ी ि ै, क्योंकक क्जस हदन उनपर थोपे गए धम ससे उनका प्रत्यक्ष सबिंधिं ुआ उसी हदन वे जानतयाँ ह दिंू सस्ंकृनत के उत्तराचधकार से वचिंति ो गईं। ह दिंओु िंसे सवथसा लभन्न सस्ंकृनत ै - ऐसा उन् ें प्रतीत ोता ै। इस कारण उनके आदश सवीर और इन वीरों के प्रनत उनकी भक्क्त- भावना, उनके उत्सव तथा यािाएँ, उनके ध्येय तथा जीवन ववषयक दृक्ष्टकोण इनमें तथा म िोगों की कल्पनाओंमें कोई भी समानता अब शेष न ीं ै।
प्रत्येक ह दिंू अपनी जानत की ववलशष्ट सस्ंकृनत से असामान्य प्रेम करता ै तथा ननतातिं भक्क्तभाव दरशाता ै।
इस अत्यतिं आवश्यक अलभिक्षण के कारण ह दिंत्व का शुद्ध स्वरूप ननक्श्ति करना मारे लिए सभिंव ो सका।

प्रत्येक की ह दिंू अपनी जातत ववशिटि सस्ंकृतत से असामान्य प्रेम करता ै तथा ततातिं भष्ततभाव दरिाता ै। इस अत्यतिं आवचयक अशभलक्षर् के कारर् ह दिंत्व का िुद् स्वरूप तनष्चचत सभिंव करना मारे शलए ो सका।

क्या बो री तथा खोजेको 'ह दिंू' क सकते ?

ह दिंओु िंकी कुछ उपजाततयों में कुछ पृथक् रीतत-ररवाजों का पालन ककया जाता ै। कई बार तो इन रीतत-ररवाजों में परस्पर ववरोी् ोनेकी बात भी देखी जाती ै। तब भी व ाँसभी उपजाततयाँह दिंू ी क लाती ै, तब ह दिंू म् त

हिंदुत्व 79 **के तीन ऊपर वर्णित अभिलक्षण जिनमें विद्यमान हैं, उन बोहरों को अथवा खोजों को हिंदू कहने में क्या**

कठिनाई हो सकती है?

अब हम उस बोहरी तथा खोजे व्यक्ति का उदाहरण देते हैं, जो हम लोगों के यहाँ रहता है। हिंदुस्थान से वह पितृभूमि के रूप में प्रेम करता है, क्योंकि यह निर्विवाद रूप से उसके पूर्वजों की भूमि है। उसमें और कुछ अन्य लोगों के शरीर में निश्चित रूप से हिंदू रक्त भी विद्यमान है। यदि उसकी पीढ़ी में वही प्रथम होगा, जो मुसलमान हुआ होगा, तब उसके शरीर में उसके हिंदू माँ-बाप का ही रक्त होगा। किसी समझदार तथा जानकार व्यक्ति के समान वह हिंदू इतिहास से एवं ऐतिहासिक पुरुषों से प्रेम करता है। बोहरे तथा खोजे हमारे दशावतारों की पूजा ईश्वर मानकर करते हैं, परंतु इनमें ग्यारहवाँ नाम मोहम्मद का भी जोड देते हैं। वह बोहरी अथवा खोजा उसकी संपूर्ण सजाति जैसा ही, अपने पूर्वजों के हिंदू निर्बंध विधान को ही आधार मानते हैं। इस प्रकार राष्ट्र, जाति तथा संस्कृति - ये तीन आवश्यक अभिलक्षणों का विचार किया जाए तो उसे हिंदू ही कहना होगा। उसके कुछ त्योहार तथा उत्सव हम लोगों से भिन्न हो सकते हैं तथा अपनी देव-देवताओं और सत्पुरुषों की पंक्ति में वह एक- दो अतिरिक्त व्यक्तियों का समावेश कर सकता है। इन एक-दो मतभेदों के कारण उसे हिंदू संस्कृति को माननेवालों से बाहर नहीं किया जाता है। हिंदुओं की कुछ उपजातियों में कुछ पृथक् रीति-रिवाजों का पालन किया जाता है। कई बार तो इन रीति-रिवाजों में परस्पर विरोधी होने की बात भी देखी जाती है। तब भी वह सभी उपजातियाँ हिंदू ही कहलाती हैं, तब हिंदू धर्म के तीन ऊपर वर्णित अभिलक्षण जिनमें विद्यमान हैं, उन बोहरों को अथवा खोजों को हिंदू कहने में क्या कठिनाई हो सकती है ?

वस्तुतः इस प्रकार उन्हें हिंदू कहने में कोई दोष नहीं है, परंतु हिंदुत्व के एक अभिलक्षण के प्रति उनका जो दृष्टिकोण है, उसी कारण उन्हें हिंदू नहीं कहा जा सकता। यह अभिलक्षण संस्कृति शब्द में ही समाविष्ट हो जाता है। फिर भी अन्य विशेषणों में उसे गौण मानकर उसपर ध्यान न देना उचित नहीं होगा, अर्थात् विचारों की दृष्टि से वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। अतः उसका स्वतंत्र विवेचन तथा विश्लेषण करना आवश्यक है। इस बात की चर्चा अभी तक इसलिए नहीं की गई क्योंकि उसपर यथोचित विचार करने के पश्चात् सदा के लिए निश्चित एवं परिणामकारक निर्णय लेने का हमारा विचार हिंदुत्व तथा हिंदू धर्म-इन दो शब्दों का महत्त्व तथा उनसे व्यक्त होनेवाला अर्थ सुनिश्चित रूप से ज्ञात करने के पश्चात् हम लोग इस स्थिति में पहुँच जाएँगे कि इस शब्द का विश्लेषण करने की पूरी साधन-सामग्री हम लोगों को प्राप्त हो गई है - ऐसा कह सकेंगे।

6. ह दिंू ूधम से 'ह दिंू'ू की पररभाषा करना अनुचित

ह दुत्व तथा ह दिंू ूधम-सये दोनों ी शब्द ह दिंू ूशब्द से उत्पन्न ुए ैं। • अतः उनका अथ स'सारी ह दिंूज़ानत'

ऐसा ी ककया जाना आवश्यक ै। ह दिंू ूधम सकी पररभाषा के अनुसार, यहद कोई म त्त्वपूण ससमाज उसमें सक्म्मलित न ककया जाता ो अथवा उसे ेस्वीकारने से ह दिंअिुं के घटकों को ह दिंुत्व से बा र ककया जा र ा ो, तो व पररभाषा मूितः ी चधक्कारने योनय समझी जानी िाह ए। 'ह दिंू ूधम'स से ह दिंू िोगों में प्रिलित वववववध धममसतों का बोध ोता ै। ह दिंू िोगों के ववलभन्न धालमकस विार कौन से ैं अथवा ह दिंू ूधम सक्या ै, इसे ेननक्श्ति रूप से समझनेके लिए सवप्रसथम 'ह दिंू'ू शब्द की पररभाषा ननक्श्ति करना आवश्यक ै। जो िोग केवि 'ह दिंओु ि ं की पूरी तर सेस्वीतिं ववलभन्न धालमकस सिो-समझ' इतना ी अथ समन में िेकर, 'ह दिंू ूधम'स शब्द से दशाएस जानेविो म त्त्वपूण सअथ सकी ओर ध्यान देते े ुए ह दिंू ूधम सके आवश्यक िक्षण ननक्श्ति करने का प्रयास करते े ैं, उन् ें इसी बात को िेकेर मन में सभ्रंम उत्पन्न ो जाता कक ककन िक्षणों को आवश्यक माना जाए।

क्योंकक उन् ोंनेक्जन िक्षणों को आवश्यक माना ै, उनके स ारे वे सभी ह दिंजूानतयों का समावेश 'ह दिं'ू शब्द में न िींकर सकते। इसके कारण वे िोचधत ोकर, वे जानतयाँ ँ'ह दिं'ू कभी थीं ी न िीं, ऐसा क ने का दसुसा स करते े ैं, उनकी पररभाषा में इन जानतयों का समावेश न िींककया जा सकता, क्योंकक व सकिंीण स ै, ऐसा क ना उचित न िीं ै। क्जन तत्त्वों को ह दिं ूधम सक ना िाह ए, ऐसा ये सज्जन समझते े ैं, वे तत्त्व इन जानतयों द्वारा या तो स्वीकार न िींककए जाते ेअथवा वे उनका पािन न ी िंकरती,ं इसलिए 'ह दिं ूकौन ै'-इस प्रश्न का उत्तर देनेका य तरीका सवथसा ववपरीत ै। इसी कारण लसख, जैन, देवसमाजी जैसे ेअवैहदक मतों का पुरस्कार करनेवािे मारे बाधिंवों में और प्रगनतक तथा देशप्रेमी आयसमाक्जयों में कुछ कटुता का भाव पैदा ो गया ै।

ह दिं ूकौन ै?

ह दिं ूककसेक ना चाह ए ? जो ह दिं ूम् तके तत्त्वों का पालन करता ै उसे े ी! अब ह दिं ूम् तककसेक ना चाह ए? हउद्धेू ालोग व्याख्यातत्त्वों को मानतेसगिंत, परिंतु इसी तर से बार-बार य ी क ना कभी न खत्म ोनेवालेववववाद का वातावरर् बन जाता ै। इसी कारर् इससे कोई सतिोषप्रद तनर्यत तनकलने की सभिंावना न िीं ै।

ह दिं ूककसेक ना िाह ए? जो ह दिं ूधम सके तत्त्वों का पािन करता ै उसे े ी ! अब ह दिं ूधम सककसेक ना िाहि ए? ह दिं ूिोग क्जन तत्त्वों को मानते े ैं-उसे े! य व्याख्या ै तो न्यायसगिंत, परिंतु इसी तर से बार-बार य ी क ना कभी न खत्म ोनेवािे वववाद का वातावरण बन जाता ै। इसी कारण इससे कोई सतिोषप्रद ननणयस ननकिने की सभिंावना न िीं ै। इस प्रकार गित माग सपर िंनेवािे म िोगों के ब ुत से लमत्रों को य क ना आवश्यक ो जाता ै कक 'ह दिं ूनाम के कोई िोग ववश्व में ववद्यमान न िीं ै।' क्जस म ाववद्वान,् इंक्ग्िश व्यक्क्त ने 'ह दिंइूज्म' शब्द को प्रिलित ककया (ह दिं ूधम सइस अथ समें) उसी का अनुकरण करते ुए यहद कोई ह दिंी व्यक्क्त 'इंक्ग्िलशज्जम' शब्द का प्रयोग करते े ुए इंक्ग्िश िोगों में रूढ़ धालमकस कल्पनाओं की जडों में कुछ एकता की खोज करने का प्रयास करता ै तो ज्यू से जॅकोववनों तक तथा हरननटी" का तत्त्व माननेवािे उपयुक्ततावाहदयों तक उसे इतनेपथिं, उपपथिं, जानतयाँएव िंउपजानतयाँहदखाई देंगी कक िोध से व क ेगा, 'इंक्ग्िश क िानेवािा कोई भी व्यक्क्त इस ववश्व में ववद्यमान न िीं ै !' तथा इस ववश्व में ह दिं ूनामक कोई व्यक्क्त न िीं ै-ऐसा क नेवािे सज्जन की तिुना में व कम ास्यास्पद न िींक ा जाएगा। इस ववषय के बारे में ककतनी भ्ांनितयाँफैि िुकी ैं तथा ह दिंुव व ह दिं ूधम-सइन दो शब्दों का पृथक् ववश्िेषण करने में यश प्राप्त न ोनेके कारण इन भ्ांनितपूण सवविारों में वृद्चध ी ुई ै। इसका अनुभव करना ो तो 'नटेसन किंपनी' द्वारा प्रकालशत 'Essentials of Hinduism' नामक छोटी पुस्तक का अविोकन करना उचित ोगा।

ह दिं ूधम समें कई धम-सपद्धनतयों का अंतिभावस ै

ह दिं ूम् तका अथ त ै - ह दिंओंु का म्;त और ज ाँ ँतक शस्ुब्दि से बने 'ह दिं' ू ि ब्द का मूल अथ तशस्ुं ि से शस्ुं अथात् ्समुद्र तक फैली ुई इस भूशम में तनवास करनेवालेलोग- इस प्रकार ोता ै। इसीशलए म्तजोअथवा ववेिष रूप से जो म् तप्रारिंभ से ी इस भूशम और य ाँके तनवाशसयों के म् त ैं, व म् तअथवा वे सभी म् तह दिं ू म् त ी ैं।

ह दिं ूधम सका अथ स ै-ह दिंओु िंका धम;स और ज ाँतक लसधिंु शब्द से बने 'ह दिं' ू शब्द का मिू अथ सलसधिंु से लसधिंु ुतक अथात्् ्समुद्र तक फिैी ुई इस भूलम में ननवास करनेविो िोग- इस प्रकार ोता ै। इसीलिए जो धम स अथवा ववशेष रूप सेजो धम सप्रारिंभ से ी इस भूलम और य ाँके ननवालसयों के धम स ैं, व धम सअथवा वे सभी धम स ह दिं ूधम स ी ैं। यहद म िोगों को इन ववलभन्न तत्त्वों एविंववविारों को एक ी धम-सपद्धनत में सक्म्मलित करना सभिंव न ी िंहदखाई देता तो दसूरा माग सभी अपनाया जा सकता ै। ह दिं ूधम सइस नाम से एक ी धम सपद्धनत अथवा एक ी धम समत का बोध ोता ै - य न मानते ुए ह दिं ूधम सपरस्पर लमिते-जुिते अथवा असमान अथवा परस्पर ववरोधी भी - ऐसी अनेक धम सपद्धनतयों का समू ै। ह दिं ूधम सकी ननक्श्ति व्याख्या आप भिे न कर सकते ों; िंककन आप ह दिं ूराष्ट्र का अक्स्तत्व नकार न िींसकते अथवा इससे भी घातक बात कोई ो, तो मारे वैहदक और अवैहदक बाधिंवों की भावनाओ िंको िंस प ुँ ुिाकर उनमें से कइयों को अह दिं ूक कर दुतुकारने का अपववि कृत्य भी आप कर न िींसकेंगे।

वैहदकधमसको ह दिं धमूसमानानाएकभ्ूि ै

प्रस्तुत प्रब्ं की मयादताओंं का ववचार करने पर य प्रतीत ोता ै कक ह दिं ूम् तके आवचयक लक्षर् कौन से ैं। इसी ववषय पर य ाँसमग्र चचात अथवा वववेचन करना सभिंव न िीं ै। इससे पूव तभी मने क ा ै कक 'ह दिं ूम् त तया ै ?'

प्रस्तुत प्रबधिं की मयादसाओंका ववार करने पर य प्रतीत ोता ै कक ह दिं ूधम सके आवश्यक िक्षण कौन से ैं। इसी ववषय पर य ाँसमग्र िािसअथवा ववविेन करना सभिंव न िीं ै। इससे पूव सभी मनेक ा ै कक 'ह दिं ूधम सक्या ै ?' इस प्रश्न पर वस्तुतः िािस करना तब ी सभिंव ोगा जब ह दिंुत्व के सभी अलभिक्षणों की ननक्श्ति प िान ो जानेके पश्िात् ् ी ह दिं ूकौन ै, इस प्रश्न का उिक उत्तर देना सभिंव ोगा तथा 'ह दिं ूकौन ै' इस प्रश्न का उत्तर ननक्श्ति रूप से म दे सकेंगे। ह दिंुत्व के प्रमुख अलभिक्षणों का ी ववार य ाँमें करना ै। अतः ह दिं ूधम सके स्वरूप के ववषय में ककसी भी प्रकार की िािसय ाँ ँन िींकी जाएगी। मारे इस प्रस्तुत ववषय में यहद उसका कुछ सबिंधिं ै ऐसा प्रतीत ोगा, तब उसी सदिंभ समें उसका ववार ककया जाएगा। 'ह दिं ूधम'स शब्द इतना व्यापक ोना िाह ए कक ह दिं िोगों में ववद्यमान ववलभन्न जानतयों तथा उपजानतयों के अनतररक्त,

ववलभन्न पथिं, मत अथवा धालमकस ववािर जो ◌ैं, उन सभी का अतिंभावस उसमें ककया जा सके। सामान्यतः ह दिंू ◌ू धम सब ◌ुसख्यिक ह दिंू ◌िोूगों ने जो धम-सपद्धनत स्वीकार कर ◌िी ◌ै, उसी के लिए प्रयोग ककया जाता ◌ै। धम,स देश अथवा जानत को प्राप्त ◌ुआ नाम उस धम,स देश अथवा जानत के उत्कष सके कारण ◌ोता ◌ै। य नाम सभिंाषण के लिए, सदिंभ सतथा उल्िेखे की दृक्ष्ट सेभी अत्यचधक अनुकूि ◌ोता ◌ै। परिंतु यहद इस अनुकूि सबिोधन के कारण कोई भ्ामक, ◌ाननकारक या हदशाभ्रमू करनेवािी बात ◌ो सकती ◌ै, तो में इस बात के लिए सैत र ना ◌ोगा, क्योंकक इस कारण म ◌िोगों की ववािर-शक्क्त ◌ी ◌िुप्त ◌ो जाएगी। ह दिंू ◌िोूगों में ब ◌ुसिंख्यक ◌िोग क्जस धम-स पद्धनत को पूजनीय व लशरोधाय समानते ◌े ◌ैं, उसकी सपिूंण सववशेषता स्पष्ट रूप से दरशाने विो ककसी नाम से उसका उल्िेख करना ◌ो, तो उसे ◌े'श्रुनतस्मृनत पुराणोक्त' धम सअथवा 'सनातन धम'स य ◌ी नाम अचधक उचित ◌ोगा अथवा इसे ◌े'वैहदक धम'स क ने पर भी में कोई आपवत्त न ◌िीं ◌ोगी। परिंतु इन ब ◌ुसख्यिक ह दिंू ◌िोूगों के अनतररक्त ऐसेअनेक ह दिंू ◌ूभी ◌ैं क्जनमें सेकुछ अशिंतः अथवा पूणतसः पुराणों को तो कुछ स्मृनतयों को और कुछ प्रत्यक्ष ऋवषयों को भी न ◌िींमानते। परिंतु यहद ब ◌ुसख्यिक ह दिंुओंु का धम स ◌ी सभी ह दिंुओंुका धम स ◌ै, ऐसा मानते ◌े ◌ुए यहद उसी को ह दिंू ◌ूधम सक ना ◌िा ◌ोगेतो ह दिंू ◌ूक ◌िाने विो, ◌िेककन अन्य धालमकस मतों को माननेविो बाधिंवों को ऐसा प्रतीत ◌ोना स्वाभाववक ◌ै कक ब ◌ुसख्यिक ◌िोगों ने ह दिंुत्ुव का अप रण ककया ◌ै तथा उन् ◌ें ह दिंुत्ुव से बा र फेंक देनेका उनका य प्रयास ◌िोधकारक तथा अन्यायपूण स ◌ै। अल्पसख्यिक ◌ोनेके कारण क्या उनके धम सका कोई नाम न ◌िीं◌ोगा ? परिंतु यहद आप ◌िोग इस तथाकचथत सनातन धम सको ◌ी एकमेव ह दिंू ◌ूधम सक ने िगोगे,◌े तब ऐसा क ना अननवाय स ◌ो जाएगा कक उन अन्य मतों को धारण करनेविो ◌िोगों के नवमतवादी धम स

को ह दिंू ◌ूधम सक ना सभिंव न ◌िींग। इसके बाद वे ◌िोग ह दिंू ◌ून ◌िीं ◌ै, ऐसा क ने का सा स भी करने ◌िगोगे ◌े। परिंतु प ◌िे ◌ेमें हदए गए तकों को नापसदिं करते ◌े ◌ुए समथनस देनेके अनतररक्त उनके पास अन्य कोई माग सन ◌िींथा और क्जन् ◌ें उसे ◌ेमान्यता देनेमें कहिनाई ◌िग र ◌ी थी, कफर भी उसके अिावा ◌िारा भी न ◌िींथा, उन् ◌ें भी इस

ननष्ट्कष सके कारण धक्का ◌िगेगा। मारे ◌िाखों लसख, जैन, लिगिंायत और अन्य समाज के बधिंुओंको, क्जनके पूवजसमोंकीवसीसेकेमेंननेदेवतपीहढ़यों पूव सतक तो ह दिंू ◌ूरक्त ◌ी ब ता था, अिनक 'ह दिंू' ◌ू सज्ञिं आनेके कारण अत्यतिं दु:ख ◌ुआ, उसमें से कई ◌िोग तो ननक्श्ित रूप से मानते ◌े ◌ैं कक क्जन रीनत- ररवाजों को उन् ◌ोंनेनवीन मतों के कारण ◌िोह ए। भ्ामक मानकर त्याग हदया था, उनको या तो पुनः स्वीकार करना ◌िोह ए या कफर उनके पूवजस क्जन जानतयों में पैदा ◌ुए थे, उन जानतयों को सदा के लिए छोड देना ◌िोह ए।

ह दिंू ◌ूलोगों में ब ◌ुसख्यिक लोग ष्जस म्-तपद्तत को पूजनीय व शिरो्ाय तमानते ◌े ◌ैं,उसकी सपिूंर् तवविेषता स्पटि रूप से दरिाने वाले ककसी नाम से उसका उल्लेख करना ◌ो, तो उसे ◌े'श्रुतुतस्मृतत पुरार्ोतत' म् तअथवा 'सनातन म्'त य ◌ी नाम अ्धक उधचत ◌ोगा अथवा इसे ◌े'वैहदक म्'त क नेपर भी में कोई आपवि न ◌िीं◌ोगी।

सभीह दिंू एकू ीध्वजकेनिीएकत्रित ोंगे

य पराया भाव तथा कुिता उत्पन्न ोनेका कारर् ह दिंू ूम् तके ब ुसख्यिक वैहदक लोगों का म्,त इस अथ तसे दुरुपयोग ककया जाना ी ै। सभी ह दिंओु िके ववव्व् म्-त इस अथ तमें इसका प्रयोग ककया जाना चाह ए अन्यथा उसका प्रयोग करना बदिं ककया जाना चाह ए ।

य पराया भाव तथा कटुता उत्पन्न ोनेका कारण ह दिंू ूधम सके ब ुसख्यिक वैहदक िोगों का धम,स इस अथ ससे दुरुपयोग ककया जाना ी ै। सभी ह दिंओु िके ववववध धम-सइस अथ समें इसका प्रयोग ककया जाना िाह ए अन्यथा उसका प्रयोग करना बदिं ककया जाना िाह ए। ब ुसख्यिक ह दिंओु िके धम सका ननदेश सनातन धम सअथवा श्रुनतस्मृनत पुराणोक्त धम सया वैहदक धम-सइस प्रािीन तथा प ि ेसे स्वीकृत नामों से ी उत्तम प्रकार से ककया जाता ै। शेष अल्पसख्यिक ह दिंओु िके धम सका ननदेश भी उनके पुराने तथा सवमसान्य लसख धम,स आय सधम,स जैन धम सअथवा बौद्ध धम सआहद नामों से ी भववष्य में ककया जाना िाह ए। क्जस समय इन सभी धमों को एक साथ उर्ल्खि करने का प्रसगिं आएगा, तब ह दिंू ूधम सइस समुच्यिविाक शब्द का प्रयोग ककया जाना उचित ोगा।

...प में मान िना ककसी प्रकार से ाननकारक न िीं रूप में क ना सभिंव ोगा तथा ककसी प्रकार की गिती ोने का कोई कारण भी न िीं र ेगा। इसी से भववष्य में ह दिंओु िकी अल्पसख्यिक ह दिंूजानतयों के पथिों में मन में ववद्यमान वैर भाव नष्ट ोगा। सभी ह दिंू िोग अपनी समान जानत तथा समान सस्कृिनत का एकमेव चिह्न र े पुरातन ध्वज के निी पुनः एकत्रित ो जाएँगे।

हदिंूजानतद्धाराननलमतस समानसमक्ष्ट्टसमुदाय( )

ह दिंसुथान की ववशभन्न जाततयों के मनुटय जातत- सबर्ंिमें म् तवाड्मय में प्राचीनतम उपलब् वाङ्मय वेदे वाड्मय ी ै। सप्तशस्ुका, वैहदक परिंपरा का य राटर अनेक सर्घों, समुदायों में ववभाष्जत था। आज ष्जसेम लोग अपनी सुववा् के शलए वैहैदक म् तक ते े ैं, व उस समय के ब ुसख्यि लोगों का म् ततो था, पर शसिंओुकी अल्पसख्यिक जाततयों को वम् तकभी भी मान्य न िीं था।

ह दिंसुथान की ववलभन्न जानतयों के मनुष्य जानत-सबिंधिं में, धम सवाड्मय में प्रािीनतम उपिब्ध वाङ्मय वेद वाड्मय ी ै। सप्तलसधिुं का, वैहदक परिंपरा का य राष्ट्र अनेक सर्घों, समुदायों में ववभाक्जत था। आज क्जसे े म िोग अपनी सुववधा के लिए वैहदक धम सक ते े ैं, व उस समय के ब ुसख्यि िोगों का धम सतो था, पर लसधिुंओ िंकी अल्पसख्यिक जानतयों को व धम सकभी भी मान्य न िींथा। 'पाणी, दास, व्रात्य'" तथा अन्य अनेक गिि इस धम सेप्रारिंभ से ी अलिप्त र े थेअथवा इस धम से बा र ो गये थे, य बात बार-बार हदखाई देती ै। कफर भी जातीय तथा राष्ट्रीय रूप से म सभी एक ैं इस बात की उन् ें समझ थी। वैहदक धम सनाम का एक धम स उस समय भी अक्स्तत्व में था परिंतु उस समय उसे ेलसधिुं धम सके रूप में मान्यता प्राप्त न िींथी। लसधिुं धम सशब्द

ह दिंुत्व 85 यहद उसी समय सेरूढ़ ो जाए, तब उसका अथ ससप्तलसधिंु ुमें प्रिलित सव ससनातन अथवा तहदतर अन्य धम स

पथिंय ऐसा ी समुच्निा दशकस ी ोता। नए की समक्ष्ट कर िेनेतथा अवानिंछत को बा र फेंक देनेकी रीनत के अनुसार लसधिंुओ िंकी जानत का ह दिं ूमें तथा लसधिंुस्तान का ह दिंुसुथान में रूपातिंर ो गया। भववष्ट्य में कई बातों की खोज करके, सा सपूवकस कई बातों के बारे में ज्ञान प्राप्त करके, अणु ुसे िेकर आत्मा तक और परमाणु ुसे िेकर परब्रह्म तक के सूक्ष्म-से-सूक्ष्म और ववशिा- से-ववशिा ववश्व की खोजबीन की; साथ ी गूढ़ तत्त्वों के बारे में जानकार और परमोच्िसमाचध अवस्था में वव ार कर ब्रह्मानिंद प्राप्त करके सनातनधलमयसों और अन्य धममसतों के लशष्ट्यों ने एक ईश्वरवादी और ननरीश्वरवादी दोनों प्रकार के िोगों को समाया जा सके, ऐसी एक ववशिा समक्ष्ट (Synthesis) का ननमाणस ककया। अनिंतम सत्य की खोज करना य उसका ध्येय था तथा प्रत्यक्ष अनुभव उसका माग सथा। य समक्ष्ट केवि वैहदक अथवा अवैहदक न िीथी, परिंतु दोनों ी थी। प्रत्यक्ष धम सका अिूक शास्िय ी था। वैहदक, सनातनी, जैन, बौद्ध, लसख अथवा देवसमाजी आहद सभी धममसतों के सूक्ष्म साक्षात्कार का ननष्ट्कष स ै; उस ननष्ट्कष सका भी ननष्ट्कष स ै वास्तववक ह दिं ूधम स। सप्तलसधिंु की भूलम में अथवा वैहदककािीन ह दिंुसुथान के अन्य क्षिेत्रों की अज्ञात जानतयों में जो वैहदक अथवा अवैहदक धममसत थे, उन् िींसे साक्षात् ्ननमाणस ुए अथवा उन धममसतों में पररवतनस ोकर क्जन पथिंों का उदय ुआ, वे सभी पथिं ह दिं ूधम सके नाम से ी ज्ञात ो। ह दिं ूधम सांगम्य ककए जानेविे ह दिं ूधम सके अववभाज्य अिंग ो ो।

शसिंु मंु तिब्द यहद उसी समय सेरूढ़ ो जाए, तब उसका अथ तसप्तशसिंु ुमें प्रचशलत सव तसनातन अथवा तहदतर अन्य म तपथिंय ऐसा ी समुच्चना दिकत ी ोता। नए की समष्टि कर लेने तथा अवातिंछत को बा र फेंक देनेकी रीतत के अनुसार शसिंुओ िंकी ह दिं ूमें तथा जातत का शसिंसुतान का ह दिंुसुथान में रूपातिंर ो गया।

िोकमान्य नतिक द्वारा की गई ह दिं धमस ूकी पररभाषा

वैहदक अथवा सनातन म् त- य ह दिं ूम् तका केवल एक पथिं ै, भले ी उसम् तको माननेवाला ब ुसख्यि समाज तयों न ो। 'प्रामाण्यबुदध्वेदेषु । सान्ानामतनकता। उपास्यानामतनयमः । एतद म्स्तय लक्षर्म' अनुट्टिप छिंद में रधचत सनातन म् तकी य पररभाषा कै. लोकमान्य ततलक की बनाई ुई ै।

अतः वैहदक अथवा सनातन धम-स य ह दिं ूधम सका केवि एक पथिं ै, भिे ी उस धम सको माननेवािा ब ुसख्यि समाज क्यों न ो। 'प्रामाण्यबुद्चधवेदेषु । साधनानामननकता। उपास्यानामननयमः । एतद धमस्सय क्षिणम' अनुष्ट्टुप छिंद में रचित सनातन धम सकी य पररभाषा कै. िोकमान्य नतिक की बनाई ुई ै। िचिमयजगत् ्इस मालसक मरीी पत्रिका में एक ववद्वत्ताप्रिुर िेख, क्जसमें उनकी बुद्चधमत्ता तथा गभीर ज्ञान की झिक हदखाई देती थी, उसमें कुछ अपवाद के पररभाषा का स्पष्ट्ट अथ ससमझाते ेुए िोकमान्य ने सूचित ककया था कक सामान्यतः क्जसे ेह दिं ूधम सक ते ो ैं, उसी का वविार करने का उनका उद्देश्य था। ह दिंुत्व का वविार उन् ोंनेककया ी न िींथा। इसी के साथ उन् ोंनेय भी मान्य ककया था कक इस पररभाषा में वास्तववक रूप में जातीय दृक्ष्ट्ट सेतथा राष्ट्रीय दृक्ष्ट्ट से आयसमाजी जैसेकट्टर ह दिंुओिंका अथवा उसी प्रकार के अन्य पथिंों का

समावेश न िींककया जा सकता। य पररभाषा अपनेआप में सवोत्तम तो ै पर सत्य की कसौटी पर ह दिंू ूधम सकी पररभाषा न िींबन सकती। 'ह दिंुत्व की तो कभी भी न िीं! सनातन अथवा श्रुनुतस्मृनृत, पुराणों का धम सह दिंू ूधम समें सक्म्मलित अन्य धमों की अपेक्षा अत्यचधक िोकवप्रय ुआ तथा क्जसे ेह दिंू ूधम समानने की अयथाथ सप्रथा बन गई, उस सनातन धम सके लिए य पररभाषा उचित ै।

ह दिंू सिंस्कृनतकीचिरस्थायीछाप

ब्दि व्युत्पवि से और वास्तववक पररष्स्थतत पर ध्यान देते े ुए तथा करने पर प्रतीत ोता ै कक ह दिंू ूम् तेह दिंओु िं का ी म् त ोनेके कारर् ह दिंओुंकी जो प्रमुख ववषेिताएँ ैं ैं; वे सभी इस म् तमें हदखाई देनी आवचयक ै। म लोग देख चुके ैं कक ह दिंओुं का प्रथम तथा सव तप्रमुख अशभलक्षर् ै शस्ु ुसे सागर तक फैली ुई इस भूशमका को अपनी वपतृभूशम तथा मातृभूशम मानना।

धालमकस अगिों का ववचार शब्द व्युत्पवत्त से और वास्तववक पररक्स्थनत घर ध्यान देते े ुए तथा धालमकस अगिों का ववचार करने पर प्रतीत ोता ै कक पर ह दिंू ूधम सह दिंओुंका ी धम स ोनेके कारण ह दिंओु िंकी जो प्रमुख ववशेषताएँ ैं ैं; वे सभी इस धम समें हदखाई देनी आवश्यक ै। म िोग देख िुके ैं कक ह दिंओु िंका प्रथम तथा सव स अलभिक्षण ै लसधिंु सागर तक फिैी प्रमुख से ुई इस भूलमका को अपनी तथा मातृभूलम वपतृभूलम मानना। क्जन वैहदक अथवा अवैहैदक धममसतों अथवा पथिंों को म िोग ह दिंू ूधम सक ते े ैं, वे सभी धम सवास्तववक अथ समें उन धमों अथवा पथिंों के ववचारों के तत्त्वज्ञान की आपूनत सकरनेवािोअथवा क्जन् ें उस धम सका प्रत्यक्ष ज्ञान ुआ अथवा व ज्ञान क्जन् ें हदखाई हदया, उन द्रष्टा िोगों के समान इसी भूलम में उपजे े ैं। सव सपथिंों तथा मतों का क्जसमें समावेश ककया जाता ै, उस ह दिंू ूधम सका आववष्कार प्रथम लसधिंुस्थान में ुआ। ववष्णु ुके पदकमिों से ननकिक अथ समें लसधिंुसुथान उसकी जन्मभूलम ै। गगिंा ननकिती ै, परिंतु अत्यतिं धमश्रसद्ध व्यक्क्त अथवा ककसी गूढ़वादी म ात्माओ िंको भी मनुष्य के स्तर पर ववचार करनेपर प्रतीत ोता ै कक व ह मािय की कन्या ै। इसी के समान धालमकस दृक्ष्ट सेक्जसेह दिंू ूधम सका सबिंोधन हदया गया ै, उस तत्त्वज्ञान की य भूलम जन्मभूलम ै, अतः य मातृभूलम तथा पुण्यभूलम ै। ह दिंुत्व का दूसरा म त्त्वपूण सअलभिक्षण ै ह दिंू,ू ह दिंू ूमाँ–बाप का वशिंज ोना। प्रािीन लसधिंुओ िंका व उनसे ेजो जानत उपजी ै उस जानत का रक्त उसकी नसों में प्रवाह त ोने की बात र ह दिंू ूअलभमानपूवकस जानता ै। य अलभिक्षण ह दिंओुं के ववलभन्न धममसतों तथा पथिंों के लिए भी स ी प्रतीत ोता ै। ये धमतसत्त्व ह दिंू ूधम सके द्रष्टाओंको हदखाई हदए ुए अथवा उन् ोंने प्रस्थावपत ककए ुए तत्त्व ैं। जो अच्छा ै, उसे ेअपनेमें सक्म्मलित करके जो बुरा ै, उसेबा र फेंकनेकी किया के अनुसार वे धम सपथिं अथवा धम समत, नैनतक, सास्कृिनतक तथा आध्याक्त्मक दृक्ष्ट से सप्तलसधिंुओ िंने जो िािररक प्रगनत की, उसी से उपजे े ैं- ऐसा प्रतीत ोता ै। ह दिंू ूधम सकेवि ह दिंओु िंकी प्राकृनतक क्स्थनत से अथवा ववचार परिंपरा से पररणत न िीं ुआ ै। व ह दिंू ूसस्कृिनत का भी ऋणी ै। वैहदक काि के प्रसगिं ों अथवा बौद्ध या जैनों के इनत ास के प्रसगिं ों, इतना ी न िीं–िैतन्य, िीधर, बसव, नानक, दयानदिं या राजाराममो न जैसे ेआधुननक िोगों से सबिंचिंधत प्रसगिं ों, वे क्जस पररवेश में घटे ैं, उसपर तथा ह दिंू ूधम सकी उत्कट अनुभूनत को शब्द रूप हदानेवािी भाषा पर

और ह दिंू ूधम सके पुराणों पर, कल्पनाओंपर तत्त्वज्ञान पर ह दिंू ूसस्किृनत ने अपनी अलमट छाप छोडी ै। इस प्रकार क्जसके कई पथिं और उपपथिं, लभन्न मत प्रवा ै, व ह दिंू ूधम सह दिंू ूसस्किृनत के पररवेश में ी पिा-बढ़ा ै और ववकलसत ोकर अपना अक्स्तत्व बनाए रखता ै। ह दिंओुं का धम सह दिंओुंकी इस भूलम से इतना जुडा ै, इसी कारण य भूलम उसे ेअपनी वपतृभूलम तथा पुण्भूलम की िगती ै।

ह दिंू ू म् तकेवल ह दिंओु िंप्राकृततक ष्स्थतत सेववचार परिंपरा से पररर्त न िीं ुआ ै। व ह दिंू ूसस्कृितत का भी ऋर्ी वैहदक काल के प्रसगिं ों अथवा बौद् या जैनों के इतत ास के प्रसगिं ों, इतना ी न िीं- चैतन्य, चक्रर्, बसव, नानक, दयानदिं राजाराममो न जैसे ेआतु्नक लोगों से सबिंध्ति प्रसगिं ों, वे ष्जस पररवेि में घि े"

ऋवष-मुननयों और साधुपुरुषों की कमभूसलम

म लोगों के म् तसस्थिापकों को तथा वेदों (ज्ञान) की रचना द्रटिाओंको अथात् ्ऋवषयों को- वैहैदक ऋवष मुतनयों से लेकर म वष तदयानदिं तक, जैन मुतनयों से लेकर म ावीर तक, बौद् भगवान् ्से लेकर बसवेचवर तक, चक्रर् से लेकर चैतन्य तक तथा रामदास सेलेकर राममो न राय तक - सा्ु सतिों तथा गुरओंं को इस भूशम ने जन्म हदया तथा उन् ें पाल-पोसकर बडा ककया।

लसधिंु ुसे सागर तक फैी ुई य भारतभूलम, य लसधिंुस्थान म िोगों की करनेवािो पुण्यभूलम ी ै।

क्योंकक म िोगों के धम ससस्थिापकों को तथा वेदों (ज्ञान) की रिना करनेवािो द्रष्ट्राओं को अथात्स ्ऋवषयों को- वैहदक ऋवष मुननयों से िेकर म वष सदयानदिं तक, जैन मुननयों से िेकर म ावीर तक, बौद्ध भगवान् ्से िेकेर बसवेश्वर तक, ििधर" से िेकेर िैतन्य तक तथा रामदास से िेकर राममो न राय तक-साधु-सतिों तथा गुरुओ िं को इस भूलम ने जन्म हदया तथा उन् ें पिा-पोसकर बडा ककया। इसके मागों पर फैी ुई प्रत्येक धिूी में से मारे म ात्माओ िंतथा वदिंनीय गुरुओ िंके पद आज भी म िोगों के कानों में गूँजते ैं। य ाँकी नहदयाँपरम पववि ैं। उनके तटों पर ननमिस और पववि उद्यान खखिे र े ैं। िेंदनी रात में अचधक रमणीय बने इन नहदयों के तट पर अथवा इन् िेंउद्यानों और उपवनों के वृक्षों की छाया में बैिकर ककसी बौद्ध ने अथवा ककसी शकिंरािाय सने जीवन, जीव, जगदीश, आत्मा, मानव, ब्रह्मा व माया आहद ग न तत्त्वों पर चितिंन तथा ििास की ोगी। य ाँ ँहदखाई देनेवािी प्रत्येक गुफा और चगरर-पवतस ककसी कवपि अथवा व्यास या ककसी शकिंरािाय सअथवा ककसी रामदास की स्मृनत म िोगों की आँखों के सामने साकार कर देती ै। य ाँभगीरथ ने राज ककया। य ाँ ँ कुरुक्षेि ै। रामििंद्र ने वनवास गमन के समय प्रथम ववराम य िेंककसी जग ककया था। व ाँजानकी को सुवण स मृगृ के दशनस ुए तथा उसे ेप्राप्त करने ेतु उसने आयपुसि से पे्रेमपूवकस ि ककया। इस स्थान पर गोकुि के उस हदव्य गोपाि ने अपनी मुरिी बजाई। गोकुि में ननवास करनेवािोप्रत्येक व्यक्क्त का हृदय मोह त ोकर उस मुरिी की धुन पर नाि उिा।

ुतात्माओंकी वीरभूलम तथा यक्षभूलम

इस स्थान पर ष्स्थत बोध्वृकृष के नीचे एक मृगोदयान में म ावीर मुष्तत प्राप्त करने ेतु गए थे। भततगरों के समुदाय गुर नानक ने 'गगन रववचद्रिं दीपक बने' भजन गाया। य िींपर गोपीचदिं ने जोगी बनने के दीक्षा ग्र र् की, व भर शभक्षा माँगते े ुए अलख' क कर अपनी के दवार पर उपष्स्थत ुआ।

इस स्थान पर क्स्थत बोचधवृकृष के निी एक मृगोद्यान में म ावीर मुक्त प्राप्त करने ेतु गए थे। य िीं भक्तगणों के समुदाय में गुरु नानक ने 'गगन थिा रवविद्रिं दीपक बने' य भजन गाया। य िींपर गोपिीदिं ने जोगी बनने के लिए दीक्षा ग्र ण की, व मुट्ठी भिर लभक्षा माँगते े ुए 'अिख' क कर अपनी ब न के द्वार पर उपक्स्थत ुआ। इसी स्थान पर बदिं ब ादुरु के पुि को वपता समक्ष टुकडों- टुकडों में काटकर मार डिा गया तथा उस बािक का रक्तरिंक्जत हृदय, ह दिंू ूोनेके अपराध में उसके वपता के मुँ में जबरदस्ती ठूँस हदया गया। े मातृभूलम ! तुम् ारी भूलम का र कण वीर मृतूयु से य िीं में थिा य लिए मुट्ठी ब न पावन बना ुआ ै। य ाँ कृष्णसार जानत के मृग ववद्यमान ैं। कश्मीर से लस िंिद्वीप तक य भूलम ज्ञानयज्ञ अथवा आत्मयज्ञ से परम पववि ो गई ै। य वास्तववकतः 'यज्ञीय' भूलम ै। अतः सतिंिी से िेकर साधु तक के सभी ह दिंओुंको य भारतभूलम, य लसधिंुस्थान अपनी वपतृभूलम तथा मातृभूलम प्रतीत ोती ै।।

ईसाई अथवा बो री अथवा मुसिमान ह दिंू ूनिीं ोते

म्मारेकुछमुसलमानोंअथवाईसाई दि-बािंवों को पूव तमें जबरदस्ती अह दिंू ू ककया गया था। इसी कारर् अन्य ह दिंओु िंके समान वपतृभूशम, भाषा, तनबिं- ववा्न, रीतत-ररवाज, प्रचशलत आख्यातयका तथा इतत ास - इन सभी सेबनने वाली समान सस्कृतित का अधिकािं उिराध्कार इन् ें प्राप्त ुआ ै, परिंतु तब भी इन् ें ह दिंू ूमानना सभिंव न िीं ै। ह दिंसुथान उनकी वपतृभूशम ो सकती ै, परिंतु उनकी पुण्यभूशम कभी न ी िंबन सकती।

मारे कुछ मुसिमान अथवा ईसाई देश-बाधिंवों को पूव समें जबरदस्ती अह दिंू ूधम सको स्वीकार करने को बाध्य ककया गया था। इसी कारण अन्य ह दिंओु िंके समान वपतृभूलम, भाषा, ननबधिं-ववधान, रीनत-ररवाज, प्रिलित आख्यानयका तथा इनत ास - इन सभी सेबनने विी समान सस्क्रिनत का अचधकाशिं उत्तराचधकार इन् ें प्राप्त ुआ ै, परिंतु तब भी इन् ें ह दिंू ूमानना सभिंव न िीं ै। ह दिंसुथान उनकी वपतृभूलम ो सकती ै, परिंतु उनकी पुण्यभूलम कभी न ी िंबन सकती। उनकी पुण्यभूलम क ी िंसुदूरू अरबस्थान अथवा कफलिस्तीन में ोती ै। उनकी पौराखणक कथाएँ ँतथा उनके सतिं, सत्पुरुष, उनके धालमकस ववचार, उनके अवतारी ईश्वर आहद इस भूलम में उत्पन्न न िीं ुए ैं। और इस कारण उनकी आकाक्षिंाएँ, ँ उनके नाम आहद में एक परायेपन की झिक हदखाई देती ै। इस भूलम से

वे सपूिंणतसः प्रेम न ी िंकरते। यहद उनमें से कुछ िोग सदैव घमडिं भरी बात करते े ैं, और उन् ें ये अपनी बढ़ाइयाँ ँ सत्य प्रतीत ोती ों, तब तो उनका कुछ वविार भी न करना ी उचित ोगा। उन् ें अपनी सपूिंण सश्रद्धा तथा प्रेमे पुण्यभूलम को ी अपणस करना आवश्यक ै। वपतृभूलम का वविार तो वे उसके बाद करते े ैं। इस पर में कुछ दुःख

न िीता ै अथवा इसलिए म उनका चधक्कार न िींकरते। मनेकेवि वस्तुक्स्थनत का ी वणनस ककया ै। मनेअभी तक ह दिंतुव के जो अत्यचधक म त्त्वपूण सअलभिक्षण ननक्श्ित करने का प्रयास ककया ै, तब में य प्रतीत ुआ कक बो री तथा कुछ अन्य मुसिमानों में ह दिंतुव के एक अत्यतिं म त्त्वपूण सअलभिक्षण के लसवाय अन्य सभी अलभिक्षण हदखाई देते े ैं। उनका ह दिंसुथान को अपनी पुण्यभूलम के रूप में न स्वीकारना, य ी व अलभिक्षण ै।

परधम सअपनाए ुए बाधिंवो! पुनः ह दिं ूधम सको स्वीकार करो

ईचवर, आत्मा, मानव सबिंधिं कुछ नई खोज का तनदिे करनेवाले ककसी ववशिटि म्पतथिं को स्वीकार करनेवाले े ककसी भी व्यष्तत के ववषय में अभी म बात न िींकर र े ैं, तयोंकक में ववचवासपूवकत ऐसा लगता ै कक ह दिं ू तत्त्वज्ञान में य ाँ में ककसी ववशिटिम्मतत के ववषय में कुछ क ना न िीं ै) अज्ञेय के सबिंधिं में न िींपरिंतु आजतक जो ककसी को ज्ञात न िींो सका ै"

ईश्वर, आत्मा, मानव सबिंधिं कुछ नई खोज का ननदेश करनेविोककसी ववलशष्ट धमपसथिं को स्वीकार करनेविो ककसी भी व्यक्क्त के ववषय में अभी म बात न िींकर र े ैं, क्योंकक में ववश्वासपूवकस ऐसा िगता ै कक ह दिं ूतत्त्वज्ञान में (य ाँ में ककसी ववलशष्ट धममसत के ववषय में कुछ क ना न िीं ै) अज्ञेय के सबिंधिं में न ी िं परिंतु आजतक जो ककसी को ज्ञात न िींो सका ै, उस सबिंधिं में तथा 'तत्'् एव िं'त्वम्'् में ववद्यमान परस्पर सबिंधिं के ववषय पर क्जतना वविार करना सभिंव ै या मानवी बुद्चध के लिए सभिंव ो सकता ै, उतना सव स वविार ककया जा िुका ै।' आप कौन ो ? अद्वैती एकेश्वरवादी, सवेश्वरवादी अथवा ननरपेक्षवादी या अज्ञेयवादी ? य ाँका अनतिं अवकाश अभी ररक्त ै। े आत्माराम ! तुम कोई भी ो सकते ो। परिंतु ककसी व्यक्क्त ववशेष पर न ी,िं बक्ल्क सत्य के ववस्तृत तथा शाश्वत आधार पर खडे ेइस परम पववि और म ान् ्महिंदर में ववश्व प्रेम पाने व क्जससे ेअपार शानिंत प्राप्त ोगी, ऐसा परमोच्ि ववकास करने का पूरा अवसर तुम् ें प्राप्त ै। इस स्फहटक समान शुद्ध गगिंाप्रवा के तट पर खडे े ोकर भी तुम अपनेछोटे पाि में पानी भरने के लिए दूरू-दूरू तक के सरोवरों पर क्यों जा र े ो ? तिवार के एक ी प्र ार सेंरतापूवकस क्जन् ें मार डािा गया ै तथा इस कारण जो तुमसे सदा के लिए दूरू ो गए ैं, उस पररचित दृश्यों तथा प्रनतबधिंों की स्मृनतयों से व्याकुि ोकर, े बधिं, तुम् ारी नसों में ब नेवािा पूवजसों का रक्त क्यों आिोश न िींकरता ? बधिं ! पुनश्ि िोगों में िौट आओ। ये तुम् ारे बधिंु और भचगनी, अपने ी रक्त के परिंतु भटके ुए तुम् ारे जैसे ेव्यक्क्त का स्वागत करने के लिए इस म ाद्वार पर अपनी बाँ ें फैिाकर खडे े ैं। क्जस भूलम पर, म ाकाि महिंदर की सीढ़ी पर खडेोकर िावाकस ने भी अपनेनाक्स्तकवाद का उपदेश ककया था, उस भूलम के अनतररक्त तुम् ें स्वतिंि धालमकस वविार करने की छूट क ाँ ँ

प्राप्त ो सकेगी? क्जस ह दिं ूसमाज में उडीसा के पट्टण से िकर काशी के पडिंडत तक तथा सतिंाि से साधु तक

प्रत्येक व्यक्क्त को स्वतन्त्र प्रकार के समाज रिना-ननमाणस

प्राप्त ोता ै; उस ह दिं ूसमाज के अनतररक्त इतनी सामाक्जक स्वतिंतिंता तुम् ें क ाँ प्राप्त ो सकती ै ? य

ी

सत्य ै कक 'यहद ाक्स्त न सविस यन्ने ाक्स्त न कुिचित्'् । ववश्व में प्राप्त ोनेवािी सभी िीजें य ाँववद्यमान ैं

और यहद कोई िीज य ाँप्राप्त करना सभिंव न िीं ै तो व तीनों खडिंों में भी न िींोगी। इसलिए े बाधिंव !

एक

जानत, एक रक्त, एक सस्कृनित तथा एक राष्ट्रीयत्व-ये ह दिंतुव के सभी अलभिक्षण तुम् ारे पास ैं। अत्यािार के

लशकिंजेमें जकडकर तुम् ें पूवजसों की छिच्छाया से बिपूवकस ननकािा गया था। इसी कारण आगे िीकर, तुम अपनी

मातृभूलम को अपना प्रेमे अपणस करो। उसे ेअपनी वपतृभूलम ी न िीं, पुण्यभूलम भी समझनिेगो । य ह दिंजूानत तुम् ें भी अपना िेगी !

ष्जस भूशम पर, म ाकाल महिंदर की सीढ़ी पर ोकर चावाकत ने खडे े भी अपनेनाष्स्तकवाद का उपदिे समाज रचना-तनमार्त करने का तथा उसका ववकास करनेका अवसर प्राप्त ोता ै" ककया था,

उस भूशम के अततररतत तुम् ें स्वतत्रिं ा्शमकत ववचार करनेकी छिू क ाँ ाँप्राप्त ो सकेगी ? ष्जस ह दिं ूसमाज में उडीसा

जो मारे देशबिंधु ु ैं तथा रक्त के नाते े मारे पुराने भाई ैं, उन बो री, खोजी, मेमन और अन्य

मुसिमानों तथा ईसाइयों को इस उदार अवसर का िाभ अब उठाना िाह ए। अथात्् य सब िुद्ध प्रेम की

के पट्टण से लेकर काशी के पडिंडत तक तथा सतिंाल से साधुतक प्रत्येक व्यष्तत को ववशभन्न प्रकार की

भूलमका के अनुसार ी ककया जाना िाह ए। परिंतु जब तक वे िोग इस प्रकार वविार न ी िंकरेंगे,े तब तक उन् ें

ह दिं ून ी िंक ा जा सकता। य ाँ ाँय बात ध्यान देनेयोनय ै कक ह दिंतुव शब्द का जो कुछ प्रत्यक्ष अथ स म करते े ैं

उसी के अनुसार म ह दिंतुव के आवश्यक अगिंों का वविार तथा ववशिेषण कर र े ैं। म िोगों के पूवग्रस ों को

अथवा मारे द्वारा स्वीकार ककए ुए अथ सको में खिंीिंतान करते े ुए प्रयोग करना न्याय न िींोगा।

जो मारे दिेबिं ु ैं तथा रतत के नाते े मारे पुराने भाई ैं, उन बो री, खोजी, मेमन और अन्य मुसलमानों तथा ईसाइयों को इस उदार अवसर का लाभ अब उठाना चाह ए। अथात्् य सब िुद्ध प्रेम की भूशमका के अनुसार ी ककया जाना चाह ए। परिंतु जब तक वे लोग इस प्रकार ववचार न िींकरेंगे,े तब तक उन् ें ह दिं ून िींक ा जा सकता।

य ी ह दिंतुमूसकीयोनयतथासक्षिंक्षप्तपररभाषा ै

ह दिं ूव ी ै, जो इस भूशम को केवल अपनी वपतृभूशम ी न िींमानता। इसे ेव अपनी पुण्यभूशम भी मानता ै। ह दिंतुव के प्रथम दो प्रमुख लक्षर् ैं - राटर तथा जातत । वपतृभूशम िब्द से स्पटि हदखाई देता ै तथा ह दिंतुव का तीसरा लक्षर् ै - सस्कृितत; उसका बो् पुण्यभूशम िब्द से ोता ै, तयोंकक सस्कृितत में ी ा्शमकत आचार, रीतत-ररवाज तथा सस्किार आहद का अतिंभावत ोता ै कारर् य भूशम । इसी म लोगों की पुण्यभूशम बन जाती ै।

अब तक के ववविेन का सक्षिंक्षप्त ननष्ट्कष सय ै कक ह दिंू ूव ी ोता ै, जो लसधिंु से सागर तक फैिी ुई इस भूलम को अपनी वपतृभूलम मानता ै। इसी प्रकार वैहदक सप्तलसधिंु ुके प्रदेश में क्जस जानत का प्रारिंभ ोनेका प्रथम तथा स्पष्ट्ट प्रमाण उपिब्ध ै तथा क्जस जानत ने नए-नए प्रदेशों पर अचधकार करते े ुए िोगों को स्वीकार ककया और उन् ें अपना लिया, अपनों में समाववष्ट्ट कर लिया और उन् ें परमोच् अवस्था पर प ँुँिाया, उस जानत का रक्त ह दिंू ूनाम के लिए योनय क ानेविो मनुष्ट्यों के शरीर में ोता ै। समान इनत ास, समान वाङ्मय, समान किा, एक ी ननबंधं ववधान, एक ी धमव्सयव ार शास्, लमिे-जिुे म ोत्सव तथा यिााएँ, लमिी-जिुी धालमकस आिार ववचध, त्यो ार तथा सस्कािर आहद ववलशष्ट्ट गुणों से ज्ञात ह दिंओु िंकी सस्कृिनत का परिंपरागत उत्तराचधकार उसे ेप्राप्त ोता ै। इससे भी अचधक म त्त्वपूण स ै उसके पूजनीय ऋवष-मुनन, सतिं-म िंत, गुरु तथा अवतारी पुरुष, ज ाँ ँजनमैं तथा ज ाँ ँउनके पुण्यकारक यिाास्थि ैं, व आलसधिंु,ु लसधिंु ुभारत क्जसकी वपतृभूलम व पुण्यभूलम ै, व ी ह दिंू ू ै! य ी ह दिंतुव के आवश्यक अलभिक्षण ैं। समान राष्ट्र, समान जानत, समान सस्कृिनत-इन अलभिक्षणों को साराशिं में इस प्रकार दरशाया जा सकता ै। ह दिंू ूव ी ै, जो इस भूलम को केवि अपनी वपतृभूलम ी न िींमानता। इसे ेव अपनी पुण्यभूलम भी मानता ै। ह दिंतुव के प्रथम दो प्रमुख िक्षण ैं -राष्ट्र तथा जानत। वपतृभूलम शब्द से स्पष्ट्ट हदखाई देता ै तथा ह दिंतुव का तीसरा िक्षण ै-सस्कृिनत; उसका बोध पुण्यभूलम शब्द से ोता ै, क्योंकक सस्कृिनत में ी धालमकस आिार, रीनत-ररवाज तथा सस्कािर आहद का अतिंभावस ोता ै। इसी कारण य भूलम म िोगों की पुण्यभूलम बन जाती ै। ह दिंतुव की य ी पररभाषा

अचधक सक्षिंक्षप्त करने ेतु उसे ेअनुष्ट्टुप में ग्रचथत करनेका मनेप्रयास ककया तो व अनुचित न िीं ोगा, ऐसा में ववश्वास ै-

आशसिंशुस्पुियंतां यस्य भारतभूशमका।
वपतृभूः पुण्यभूशमचचैव स वै ह दिंरूरततस्मृतः ॥

लसधिंु ु(ब्रह्मपिु नदी को भी उसकी उपनहदयों के साथ लसधिंु क ते े ैं।) से लसधिंु (सागर) तक फैिी ुई य भारतभूलम, क्जसकी वपतृभूलम (पूवजसों की भूलम ै' तथा पुण्यभूलम, कम सके साथ सस्कृिनत की भूलम) ै—व ी ह दिंू ू ै!

6. कुछ प्रत्यक्ष उदा रण

प्राचीन वैहदक समय से वे लोग भारतवष तका एक अववभाज्य तथा प्रमुख भाग के रूप में प चाने ेजाते े ैं। 'रामायर्' तथा 'म ाभारत' में भी शस्ु िशिवव सौवीर म ान् ्शस्ु िसाम्राज्य के अध्कृत घिक ोनेका उल्लेखे ककया गया ै। वे मारे राटर के, म लोगों की जातत के तथा सस्कृितत के ी लोग ैं। इसशलए व ह दिंू ू ी ैं। इस दृष्टि से म लोगों की पररभाषा सवस्तवी यथाथ त ै।

गत पररच्छेदों में मनेह दिंदुत्व की कल्पना का स्थूि रूप से जो वववेचन ककया ै, उससे ह दिंदुत्व के

प्रमुख अलभिक्षणों का अतिंभावस करनेवािी, ह दिंदुत्व की कायपूसनत सकरनेवािी पररभाषा की ै। अब य व्याख्या कसौटी पर ककस प्रकार खरी उतरती ै इसे देखेंगे। इस व्याख्या की क्जस कारण तीव्र आवश्यकता प्रतीत ुई, उनमें से कुछ ववलशष्ट उदा रणों का वविार करेंगे। इस प्रकार से सवव्सयापी, अस्पष्ट व हदशाभ्रि करनेविो े वगीकरण करते े समय जो पररभाषा म िोगों ने बनाई, उसमें अनत व्याप्ती का दोष न र जाए इस कारण मने समय-समय पर उचित सावधानी बरती ै। अब कुछ उदा रण िेकर उन् ें इस कसौटी पर परखेंगे। यहद इस पररभाषा के लिए ये पयाप्सततः योनय लसद्ध ोते े ैं, तो इस पररभाषा में सकिंकीणतसा का दोष भी न ीिं ै, ऐसा ननक्श्ित रूप से क ा जा सकेगा। उसमें अनतव्याप्ती का दोष न ोनेकी बात म िोगों को ज्ञात ै, अतः अब केवि अव्याप्ती न ीिं ै, इसी देखने ेकी आवश्यकता ै।

म िोग इस बात को प्रारिंभ में ी समझ जाएँगेंकक ह दिंओु िंमें जो भौगोलिक ववभाग म िोग देखते ैं, वे सभी इस पररभाषा के अथ ससेसुसगिंत ैं। इस पररभाषा की प्रथम मान्यता ै कक आलसधिुंलसधिुंपयंतां, य म ािगोंकी ी भूलम ै। मारे अनेक बधिुं ुववशेषतः वे िोग जो प्रािीन लसधिुंओिंके वशिंज ैं तथा अभी तक क्जन् ोंने अपनी जानत तथा भूलम का नाम पररवनततस न ीिंककया ै तथा जो पाँि जार वषों के पूव ससमय के समान आज भी स्वय िंको लसधिुं अथवा लसधिुं ुदेश की सतिंान मानते े ैं, वे िोग लसधिुं के दोनों तटों पर बसे ुए ैं। इससे एक बात समझना आवश्यक ो जाता ै। जब लसधिुंनदी का उल्िेख ककया जाता ै तब उसके दोनों ी ककनारों का समावेश र ता ै। लसधिं प्रातिं का जो भाग लसधिुं के पक्श्िम तट पर बसा ै, व भी ह दिंसुथान का एक प्राकृनतक भाग ै तथा म िोगों की पररभाषा में इस पक्श्िम भाग का भी समावेश ोता ै। एक अन्य बात य ै कक प्रमुख देश से जो भूलम जुडी ुई र ती ै, उसे भी उस प्रमुख देश का नाम हदया जाता ै। तीसरी बात य ै कक लसधिुं के उस पार र नेविो ह दिं ूिोग प्रािीन इनत ासकाि से इस सपिूंण सभारतवष सको ी अपनी वास्तववक वपतृभूलम तथा पुण्यभूलम मानते ेआ र े ैं। क्जस लसधिुं ुके क्षेत्र में वे ननवास करते े ैं उसी क्षेत्र को अपनी वपतृभूलम तथा पुण्यभूलम मानकर मातृ ृघातकता के दोष के वे कभी भागीदार न ी िबने ैं। इसके अनतररक्त बनारस, गगिंाािं आहद तीथ स क्षेत्रों को वे अपनी तीथक्षेत्रसि मानते ेआ र े ैं। प्रािीन वैहदक समय से वे िोग भारतवष सका एक अववभाज्य तथा प्रमुख भाग के रूप में प िानेजाते े ैं। 'रामायण' तथा 'म ाभारत' में भी लसधिुं ुलशवव सौवीर म ान् ्लसधिुं साम्राज्य के अचधकृत घटक ोनेका उल्िेख ककया गया ै। वे मारे राष्ट्र के, म िोगों की जानत के तथा सस्कृिनत के ी अगिं ैं। इसलिए व ह दिं ू ी ैं। इस दृक्ष्ट से म िोगों की पररभाषा सवस्सवी यथाथ स ै।

ह दिंदुत्वकीभौगोलिकमयासदाएँ

यहद ककसी को ऐसा सदिंे जाता ै कक कोई एक नदी म लोगों की ै इसका अथ तय कदावप न ीिं ैक्योंकक उस नदी के दोनों ति ककसी स्पष्ट तनदि के अभाव में म लोगों की सीमा में ोते े ैं। इस कारर् भी मारी पररभाषा

में कोई न्यूनता उत्पन्न न ी िं ोती, तयोंकक म लोगों के शसिं्ु बिंओ्ु िंके शलए अन्य अनेक काररों् से य पररभाषा उधचत ै, ऐसा प्रतीत ोता ै।

यहद ककसी को ऐसा सदिें ो जाता ै कक कोई एक नदी म िोगों की ै इसका अथ सय कदावप न ी िं ोता कक उस नदी के दोनों तट ककसी स्पष्ट ननदेश के अभाव में म िोगों की सीमा में ोते े ैं। इस कारण भी मारी पररभाषा में कोई न्यूनता उत्पन्न न िीं ोती, क्योंकक म िोगों के लसधिी बधिुंओिंु के लिए अन्य अनेक कारणों से य पररभाषा उचित ै, ऐसा प्रतीत ोता ै। कुछ समय के लिए लसधिुं के उस पार ननवास करनेविो लसधिी बधिुंओ िंके उदा रण पर वविार न िींककया जाए, तब भी ववश्व के सभी क्षिेीं में ह दिूं िोग िाखों की सखि्या में फै े ुए ैं। एक समय ऐसा भी आएगा कक दूसूरे स्थानों पर र नेविो िोग, जो व्यापार, बुद्चध, कायक्षसमता तथा सखि्या की दृक्ष्ट से ज ाँ ँननवास कर र े ैं, व ाँके िोगों से श्ऱेष्ि्ैं, वे िोग उन प्रदेशों में अपना अचधराज्य स्थावपत करते े ुए एक स्वतिंं राष्ट्र का ननमाणस करेंगे। क्या ह दिंसुथान के बा र दूसूरे क्षिेीं में वे ननवास करते े ैं, इस कारण उन िोगों को अह दिूं ूसमझना िाह ए? ननक्श्ति रूप से 'न िीं' क ना िाह ए, क्योंकक ह दिूं ूह दिंसुथान के बा र के प्रदेश, ऐसा हनदिंतुव के प्रथम अलभिक्षण का अथ सकदावप न ी।िं ोता। कोई भी व्यक्क्त ववश्व के ककसी भी क्षिे में र ने विाा ो। उसने तथा उसके वशिंजों ने, लसधिंुसुथान ी उसके पूवजसों की भूलम ै, इस बात का स्मरण रखना आवश्यक ै। य ी ह दिंतुव के प्रथम अलभिक्षण का अथ स ै। य प्रश्न केवि स्मरण रखने ेमि से जुडा ुआ न िीं ै। यहद उसके पूवजस ह दिंसुथान से ी व ाँगए ोंगेतो ह दिंसुथान ी उसकी वपतृभूलम ननक्श्ति ोती ै। इसके अनतररक्त उसके लिए कोई अन्य पयायस न िीं ै। इसी कारण ह दिंतुव की य पररभाषा, ह दिूं िोगों का ककतना भी दूरू तक प्रसार ोने के बाद भी उनके लिए । उचित प्रतीत ोती ै। मारे उपननवेशवासी परद्वीपस्थ िोगों को (ह दिंओ्ु िंने) म ाभारत अथवा बृ त्तर भारत स्थावपत करने के अपनेप्रयास प िे ेजैसे े ी अववरत रूप में, अपनी सारी शक्क्त का उपयोग करते े ुए जारी रखना िाह ए। म िोगों के जो उत्तम, उदात्त, उन्नत तथा मधुर गुण ैं उनको सव समानवजानत के उद्धार के लिए उपयोग में िाना िाह ए। आध्रुवध्रुवपयंतं ववस्तृत इस भूलम में वास करनेविी अखखि मानवजानत की उन्ननत के लिए उन् ें अपने सद्गुणों का उपयोग करना िाह ए तथा इसी के साथ ववश्व में जो-जो सत्य, लशव तथा सुदिंर ोगा उसे ेआत्मसात् ् करते े ुए अपनी जानत तथा मातृभूलम को सकि, श्रीसयिुंत, सकेिश्वय समडिंडत करना िाह ए। ह मिाय के चगररर लशखरों पर उडान भरनेविो गरुड के पखिं काट डिाने का काम ह दिंतुव को न िींकरना ै। उसकी उडानें अचधक गनत से ोनेके लिए ह दिंतुव चितिंा करता ै। े ह दिूं ूबधिंुओ ! जब तक आप िोग इस बात का स्मरण रखतैं कक ह दिंसुथान म िोगों के वपतृपूवजसों की तथा सतिं-म ात्माओिंकी पावन वपतृभूलम तथा पुण्यभूलम ै तथा उनकी सस्क्ृिनत का तथा रक्त का अनमोि उत्तराचधकार म िोगों को प्राप्त ुआ ै, तब तक आपका ववकास अवरोचधत करनेविी कोई भी शक्क्त इस ववश्व में न िीं ै, ऐसा स्पष्ट रूप से समझ िीक्जए। ह दिंतुव की वास्तववक

मयादसाएँ ँइस भिूोक की सीमाएँ ी ैं!

आवु वुपयंतं ववस्तृतृ इस भूशम में वास करनेवाली अखखल मानवजातत की उन्नतत के शलए उन् ें अपने सदगुरुों का उपयोग करना चाह ए तथा इसी के साथ ववचव में जो-जो सत्य, शिव तथा सुदिंर ोगा उसे ेआत्मसात् ्र करते े ुए अपनी जातत तथा मातृभूशम को सकल, श्रीसयुिंत, सकलेचवय तमडिंडत करना चाह ए। ह मालय के धगरर शिखरों पर उडान भरनेवाले गरड के पर्खिंका डालनेका काम ह दिंतुव को न िींकरना ै।

ह दिंू ूरक्त तथा ह दिंू ूसस्कृिनत का समान उत्तराचधकार

मारे पररभाषा ववषयक ववचारों में सत्यासत्यता सबिंधि् कोई गभीर आक्षेप लेनेवाला भूलकर भी कोई व्यष्तत ोगा, ऐसा में प्रतीत न िीं ोता। इग्लिडैं में इबेररयन, केल्ट्, अँगल्स, सैतैसनस, डसें, नॉरमनस लोगों में जातत-भेद ोते े ुए भी वे आज अतिंरजातीय ववावा ों के कारर् एकरूप तथा एक राटरीय ो चुके ैं।

मारे पररभाषा ववषयक वविारों में सत्यासत्यता सबिंधिी कोई गभीर आक्षेप िेनेविाा भिूकर भी कोई व्यक्तत ोगा, ऐसा में प्रतीत न ीं ोता। इग्िडैं में इबेररयन, केल्ट, अँगल्स, सैक्सनस, डसें, नॉरमनस िोगों में जानत- भेद ोते े ुए भी वे आज अतिंरजातीय ववावा ों के कारण एकरूप तथा एक राष्ट्रीय ो िुके ैं। उसी प्रकार आयनस, कोलिररयन, द्रवीडीयन तथा अन्य िोगों में जानत ववषयक तीव्र मतभेदे ैं, ऐसा आज क ा जाता ोगा, परिंतु ननकट भववष्य में वे कदावप न िींमानेजाएँगे। इस सबिंधि में मनेपूव सके पररच्छेद में यथावत् ्ििा सकरते े ुए य स्पष्ट कर हदया था कक मारे धमशसास्त्रों से मान्यता प्राप्त अनिुोम तथा प्रनतिोम ववावा पद्धनत से ननक्श्ित रूप से प्रमाखणत ो िुका ै कक उस समय भी म िोगों के राष्ट्र-शरीर में समान रक्त का प्रवा , तेजस्वी तथा शक्तपूण सरूप सेब र ा था; क्योंकक जानतयाँ ँपरस्पर एकजीव तथा एकरूप ो िुकी थी।िं पररवतशसीि किागनत सेबदिती रूहढ़याँज ाँ–ज ाँ ँस्वीकार न िींकी गईं, व ाँ-व ाँप्रिलित रूहढ़यों द्वारा खडी की गईं भेदाभेद की दीवारें प्रबि प्राकृनतक शक्क्त के कारण अस्त समय ी ढ गईं। ककसी ह डडबिंा से प्रेम करने विाा भीमसेन कोई प िा या अनिंतम आय सन िींथा। क्जसका म प िे ेभी उल्िेख कर िुके ैं। उस व्याधकमा स की माता-ब्राह्मण कन्या-युवा व्याध सेप्रेम करनेविी अकेिी आयकसन्या न िींथी। दस-बीस भिी, मच्छीमार अथवा सतिंिीि का कोई पिु अथवा कन्या को ककसी श र की पिाशिाा में िे जाकर बिैा दो, तब भी उसकी कद-काठी या आिरण से व ककसी ववलशष्ट जानत से ै ऐसा ननश्ियपूवकस क ना कहिन ोगा। क्जनका रक्त स्वय िं एक-एक स्वतिंि जानत थी, ऐसे ेआयों, कोलिररयनों, द्रववडों के और मारे सारे पूवजसों के रक्त के लमश्रण से जो सक्म्मश्र रक्त ननमाणस ुआ व िाभदायक लसद्ध ुआ। उससेनई जानत का जन्म ुआ, उसे ेआयनस, कोलिररयन, द्रववडयन ऐसा कोई भी नाम न िींहदया गया। उसे ेह दिंूजानत ी क ा जाता ै। आलसधिंुलसधिंु तक य भारतभूलम पुण्यभूलम ै तथा जो इस मातृभूलम की सतिंान ोकर य ाँवास करते े ैं, उन िोगों के लिए य नाम रूढ़ ुआ ै। इसीलिए सतिंािा, बुनकर, भिी, ििंिम नामशूद्र तथा अन्य जानतयाँ ँह दिंू ू ी ैं। इस लसधिंुस्थान पर

उन तथाकचथत आयों का क्जतना अचधकार ै, उतना ी अचधकार सतिंाि तथा उनके पूवजसों का भी ै। उनमें भी ह दिं ूरक्त ी ै तथा ह दिं ूसस्किृनत उनमें बस गई ै, क्जन जानतयों में, क्जनपर पुराणवादी ह दिं ूसस्किारों का प्रभाव न िीं ै, वे जानतयाँ ँआज भी अपनेप्रािीन ईश्वर तथा साधु-सतिों की ी पूजा करती ैं तथा अपने पुराने धम सपर उनकी श्रद्धा र ती ै। इस भूलम से वे प्रेम जरूर करते े ैं। इस कारण य भूलम उनकी वपतृभूलम तथा पुण्यभूलम भी बन िुकी ै।

इस शस्सिंुथान पर उन तथाकधथत आयों का ष्जतना अध्कार ै, उतना ी अध्कार सतिंाल तथा उनके पूवजतों का भी ै। उनमें भी ह दिं ूरतत ी ै तथा ह दिं ूसस्कृितत उनमें बस गई ै, ष्जन जाततयों में, ष्जनपर पुरार्वादी ह दिं ूसस्किारों का प्रभाव न िीं ै, वे जाततयाँ ँआज भी अपने प्राचीन ईचवर तथा सा्ु सतिों की ी पूजा करती ैं तथा अपने पुराने म् तपर उनकी श्रद्ा र ती ै।

ह दिंतुव और ह दिंधूम,स इन दो शब्दों में जो समानता ै तथा इस कारण जो भ्ानंतयाँ फैिी ुई ैं, वे यहद अक्स्तत्व में ी न िींोती िंतो ह दिंतुव के ककसी भी अिंग के लिए कोई ववशेष प्रकार की आपवत्त न िींोती। ह दिंतुव तथा ह दिं ूधम सशब्दों का जो दुरुपयोग ककया जाता ै उस पर भी मनेअपनी तीव्र नाराजगी दरशाई ै। ह दिंतुव तथा ह दिं ूधम सये दो पृथक् वविार ैं। उसी प्रकार ह दिं ूधम सतथा 'ह दिंदूज्म' (वैहदक धम सइस अथ समें) ये दो शब्द भी ैंसमानिाथी न ीं। ह दिंतुव तथा ह दिं ूधम सशब्दों को समानाथी शब्द मानकर उन दोनों को सनातनी धममसतों से जोड देना इस दो री भिू के कारण असनातनी िोगों को िोध आना स्वाभाववक ै। उनमें के कुछ गुट इस कल्पना का खडिंन न करते े ुए इसके ववरोध में आगे ेबढ़कर ' म ह दिं ू ी न िीं ैं' ऐसा क ना प्रारिंभ करते े ैं। य एक बडी आत्मघात की भिू व करते े ैं। में आशा ै कक म िोगों की पररभाषा के कारण इस प्रकार का मनोमालिन्य उत्पन्न ोने की सभिंावना नगण्य ै। ह दिं ूसमाज के सभी सज्जन और वविारवतिं िोग इस कथन से स मत ोंगे। इसी उद्देश्य से य पररभाषा सत्य पर आधाररत ै।

ह दिंतुव तथा ह दिं ूम् तकी ये दो पृथक् ववचार ैं। उसी प्रकार ह दिं ूम् ततथा 'ह दिंदूज्म' (वैहदक म् तइस अथ तमें) ये दो िब्द भी समानाथी न िीं ।ैं ह दिंतुव तथा ह दिं ूम् तिब्दों को समानाथी िब्द मानकर उन दोनों को सनातनी म्मततों से जोड देना इस दो री भूल के काररर् असनातनी लोगों को क्रो् आना स्वाभाववक ै। उनमें के कुछ गिु इस कल्पना का खडिंन न करते े ुए इसके ववरो् में आगे ेबढ़कर ' म ह दिं ू ी न िीं ैं' ऐसा क ना प्रारिंभ करते े ैं।

मारेलसखबधिंुओंकाउदा रण

म ाराटरीय अथवा बगंिाशलयों की नसों में आय तरतत के अततररतत उन सभी अन्य प्राचीन लोगों का रतत भी ै, जो इस भूशम में तनवास करते ेथे। इस दृष्टि से शसख वास्तववक रूप से शसिंओु िंके प्रत्यक्ष विंिज ैं। इस काररर्

ह दिंजूातत की य जीवनगगिंा समतल प्रदिें से प्रवाह त ोनेसे पूव तउसके उत्पवि स्थान से उन् ोंनेउसका जीवनदुग्ु प्रिान ककया ै, ऐसा क ने का अध्कार केवल शसखों को ी प्राप्त ै।

प्रस्तुत ववषय पर सवसामान्य प्रकार से िासकरते ेसमय क्जन ववलशष्ट बातों पर पूरी तर से वविार करना मारे लिए सभिंव न था उन् िंका सपिूंण सवविार म अभी करने वािे ैं। प्रारिंभ में मारे लसख बधिुंओिंका उदा रण ितैं। लसधिुंस्थान अथवा आलसधिुंलुसधिुंतक की भारतभूलम ी उनकी वपतृभूलम थी, पुण्यभूलम थी। इस कथन से अस मत ोनेकी िष्टा करनेवािा व्यक्क्त आज ववद्यमान ोगा, ऐसा में न िींिगता। लिखखत ऐनत ालसक उपिब्ध प्रमाणों के अनुसार इसी भूलम में उनके पूवजसों का पािन-पोषण ुआ। इसी भूलम से उन् ें प्रेम था तथा य िंपर उन् ोंने अपनी पूजा-अिनसा, उपासना एव िंप्राथनसाएँ ँकिंीं। मद्रास के अथवा बगिंाि के ककसी ह दिं ूके समान उनकी नसों में भी ह दिं ूरक्त का ी प्रिसिंर ो र ा ै। म ाराष्ट्रीय अथवा बगिंालियों की नसों में आय सरक्त के अनतररक्त उन सभी अन्य प्रािीन िोगों का रक्त भी ै, जो इस भूलम में ननवास करते ेथे। इस दृक्ष्ट से लसख वास्तववक रूप से लसधिुंओ िंके प्रत्यक्ष विंशज ैं। इस कारण ह दिंजूानत की य जीवनगगिंा समति प्रदेशों से प्रवाह त ोनेसे पूव सउसके उत्पवत्त स्थान से उन् ोंने उसका जीवनदुग्ुध प्राशन ककया ै, ऐसा क ने का अचधकार केवि लसखों को ी प्राप्त ै। तीसरी बात य ै कक ह दिं ूसस्क्ृनत में उन् ोंने भी म त्वपूण सयोगदान देकर उसे ेवृदृ्चधगिंत ककया ै। अतः वे भी ह दिं ूसस्क्ृनत के उत्तराचधकारी व स योगी ैं। प्रारिंभ में सरस्वती पजिंाब की एक नदी का नाम था। बाद में उसे ेववद्या एव िंकिा की अचधष्ट्ठािी देवता समझा जाने िगा। क्जस नदी के तटों पर अपनी सस्क्ृनत और सभ्यता के बीज प्रथम समय बोए गए, उस नदी का, े लसख बाधिंवो ! आप िोगों के

पूवजसों ने अथास् ्ह दिंओु िंने कृतज्ञतापूवकस गुणगान ककया तथा उसकी मह मा का वणनस ककया। उनके सुरों में आज के ह दिंसु्थान के िाखों िोग अपना भी सुर लमिा देते े ैं तथा मारे वेदों के अनुसार 'अत्रिंबतमे नदीतमे े! देववतमेसरस्वनत।' इस प्रकार गायन करते े ैं। वे वेद क्जस प्रकार म िोगों के ैं, उसी प्रकार लसखों के भी ैं। वेदों की रिना उनके गुरुओ िंद्वारा न िींकी गई ै, कफर भी आदरणीय ग्रथिंों के रूप में उन् ें भी वेद मान्य ैं। उसी प्रकार क्जस अज्ञाननतलमर के कारण िोगों अमृतकुिंभ के लिए अप्राप्य बन गए थेतथा मानव की सुप्त आत्मा को जाग्रत् ्करनेवािे ज्ञान सूय सकी ककरण भी उन तक प ँुँििने में बाधा उत्पन्न ुई थी, अज्ञान के उस ग रे नतलमर से प्रकाश का जो प्रथम भीषण सग्रिंाम ुआ, उसका इनत ास भी वेदों में ुआ ै। लसखों की कथा का प्रारिंभ मारी तर वेदों से ी ुआ ै। व कथा राम के अयोध्या के प्रासाद से ननकिकर वनवास जानेवािे क्षण की साक्षी ै। िकिंा के रणसग्रिंाम की साक्षी ै। िा ौर की नीविं रखते ुए िव की, दुःखी मनुष्ट्य का दुःख िका करने के लिए कवपिवस्तु से ननकिे लसद्धाथ सकी साक्षी ै। पृथ्वीराज के दुःखदायक अतं के लिए मारे साथ लसख भी अत्यचधक व्यचथत ुए। ह दिंओु को जो-जो दुःख भोगने पडें, जो अपमान उन् ें स ने पडें, वे सभी उन् ोंनेभी अनुभव ककए ैं। ह दिं ूक िाते ुए अन्य िोगों के साथ ककसी भी प्रकार का त्याग करने में वे पीछे न िंर ते। उदासी, ननमिस, ग न गभिंीर तथा लसधिी पथिंों के िाखों लसख सस्क्ृत भाषा को अपने पूवजसों की भाषा के अनतररक्त इस भूलम की पववि भाषा के रूप में पूज्य मानते ैं। उनके अनतररक्त अन्य लसख, अपनेपूवजसों की

तथा जो गुरुमुखी व पजिंाबी भाषाएँबाल्यावस्था में सस्ंकृति का स्तनपान करती ुई वृद्चधगिंत ो र ी ैं, उनकी जननी के रूप में सस्ंकृति को गौरवाक्न्वत करते े ैं। अित में य आलसधिंुलसधिंु ुतक की भूलम उन िोगों की केवि वपतृभूलम न ीं ै, य उनकी पुण्यभूलम भी ै। गुरु नानक तथा गुरु गोववदिं, श्री बदिंा तथा रामलस ि आहद इसी भूलम के पिु ैं और इसी भूलम ने उनको पिा-पोसकर बडा ककया ै। ह दिंसुथान के सरोवरों का वे अमृत तथा मुक्क्त के सरोवर (अमृतसर और मुक्तसर) के रूप में आदर करते े ैं।

शसखों की कथा का प्रारिंभ मारी तर वेदों से ी ुआ ै। व कथा राम के अयोध्या के प्रासाद से तनकलकर वनवास जानेवालेक्षर् की साक्षी ै। लकिंा के रर्सग्रिंाम की साक्षी ै। ला ौर की नीविं रखते ुए लव की, दु:खी मनुटय का दु:ख लका करने के शलए कवपलवस्तुसे तनकले शसद्ाथ तकी साक्षी ै। पृर्थवीराज के दु:खदायक अिंत के शलए मारे साथ शसख भी अत्यध्क व्यधथत ुए।

ह दिंसुथान की य भूलम उनके गुरुओ िंकी तथा गुरुभक्क्त की भूलम ै अथात्स ्उनके गुरुद्वार तथा गुरुगृ ृ य ीं। क्जन पर सदिं ोने का कोई कारण न ीं ै। इस ह दिंसुथान में कोई ह दिंू ूक िाने योनय ोंगे ेतो वे म गिगों के लसखबधिंु ु ी ैं, वे ी सप्तलसधिंुके सबसे प्रािीन तथा व ी आद्य उपननवेश स्थावपत करनेविो िोग ैं और लसधिंुओ िंके अथवा ह दिंुओिं के प्रत्यक्ष वशिंज ैं। आज का लसख कि का ह दिंू ू ै। कदाचित् ्ह दिंू ूभववष्य में लसख बन सकता ै। रोज के व्यव ार रीनत-ररवाज तथा प नावे ेमें फकस ो सकता ै, पररिंतु इस कारण रक्त अथवा बीज में कोई फकस न ीं आता ै अथवा इनत ास को सपिूंणतस: लमटाकर नष्ट न ीं ककया जा सकता।

मारे लसख बधिंुओिं का ह दिंुत्व स्वयलिंसद्ध ै। स जधारी, उदासी, ननमिस तथा लसधिी लसख स्वय िंको जानत के तथा राष्ट्रीयता की दृक्ष्ट से ह दिंू ूक ते े ैं तथा उन् ें इस बात पर गव स ै। उनके गुरु मिूत: ह दिंुओ िंकी सतिंान ोनेसे ककसी ने उन् ें अह दिंू ूनाम सेसबिोचधत ककया तो उन् ें िोध न आता ोगा, पररिंतु वे इस बात से कुछ वविलित ो जाते े ैं। गुरुग्रथिं को पववि मानकर उनका पिन लसखों के समान सनातनी भी करते े ैं। दोनों के उत्सव यािाएँतथा त्यो ार एक समान ै। 'सत्खािसा' पथिी लसख उनका सख्ंयाबि ध्यान में रखते े ुए 'अपने ह दिंू'ू इस जानतनाम से प्रेम करते ैं तथा ह दिंुओ िंके साथ ह दिंुओिंजैसा ी व्यव ार करते े ैं। यहद आप िोगों को भववष्य में ह दिंू ून ीं क ा जाएगा, ऐसा उन् ें क ा गया तो इस अकस्मात् ्ननणयस से उन् ें ग रा धक्का िगेगा। म िोगों का जातीय ऐक्य इतना असहिंदनध तथा इतना पररपूण स ै कक लसख और सनातननयों में परस्पर अतिंरजातीय वववा रूढ़ ो िुके ैं।

ह दिंसुथान की य भूशम उनके गुरओ िंकी तथा गुरभष्तत की भूशम ै अथात् ्उनके गुरदवार तथा गुरगृ ृ य ीं ै।

[illegible]रर् न ीं ै। इस ह दिंसुथान में कोई ह दिंू ूक लानेयोग्य ोंगे ेतो वे म लोगों के शसखबधं्ु ु ी ैं, वे ी सप्तशसधं्ुके सबसे प्राचीन तथा व ी आदय उपतनवेि स्थावपत करनेवाले लोग ैं और शसधं्ुओ िंके अथवा ह दिंुओ िंके प्रत्यक्ष विंज ैं।

लसखवास्तववकरूपमेंहदिंू ीू ै

कुछ शसख नेताओंको बार वे क्रोध्त ो जाते े ैं। य कुछ शसख नेताओंको ह दिंू ूक कर सबिोध्त ककया जाता ै, तब कई बार वे क्रोध्त ो जाते े ैं। य एक वास्तववकता ै। परिंतु ह दिंू ूम् ततथा सनातन म् तइन दोनों िब्दों को समानाथी िब्दों के रूप में प्रयोग करने की भूल म लोग न िींकरते ेतो उनके शलए क्रो् का कोई कारर् न ी िं र ता। इन दो िब्दों के एक ी अथ तसे प्रयोग ककए जानेकी भूल इसके सभ्रिंम तथा असगिंत ववचारों का मूल ै।

ह दिंू ूक कर सबिोचधत ककया जाता ै, तब कई एक वास्तववकता ै। परिंतु ह दिंू ूधम सतथा सनातन धम स इन दोनों शब्दों को समानाथी शब्दों के रूप में प्रयोग करनेकी भिू म िोग न िींकरते ेतो उनके लिए िोध का कोई कारण न िींर ता। इन दो शब्दों के एक ी अथ ससे प्रयोग ककए जानेकी भिू इसके सभ्रमि तथा असगिंत ववचारों का मिू ै। ह दिंू िोगों की उपजानतयों में क्जस प्रकार के भाईचारे के सबिंधिं थे, उनमें बाधा उत्पन्न करने में इस घातक प्रववृत्त का बडा योगदान र ा ै। ह दिंुत्व ककसी एक पथिं की धालमकस कसौटी पर परखा न िींजाना ाहि ए, य बात म स्पष्ट रूप सेक िुके ैं। परिंतु य ाँ ँएक बार पुनः य बताना मारे लिए आवश्यक ो जाता ै कक सनातन धम सकी जो बातें लसख िोग अज्ञानमिूक तथा अधिंववश्वासमिूक मानते े ैं उन् ें लसखों को त्याग देना ाहि ए। यहद वेदों को अपौरुषेय ग्रथिं के रूप में वे मानते े ोंगे ेतो वेदों के प्रनत ववश्वास दरशाना भी उनके लिए बधिंनकारक न िीं ोगा। इससे ह दिंुओंको ववश्वास ो जाएगा कक म िोगों की पररभाषा के अनुसार लसख भी ह दिंू ी ैं। वैष्णव क्जस प्रकार वैष्णव बने ुए ैं उसी प्रकार लसख भी लसख बने र ने ाहि ए। जैन, वैष्णव या लिगिंायत भी अपने को उसी प्रकार अिग समझते े ैं। परिंतु सास्िंकृनतक, जातीय अथवा राष्ट्रीय अथ समें म सभी िोग एक ैं और अलभन्न ैं तथा ऐनत ालसक एव िंप्राीन समय से म िोगों की यथाथ सप ान ह दिंुओ िं के रूप में ी ोती र ी ै। इस शब्द के अनतररक्त अन्य कोई भी शब्द म िोगों के जातीय ऐक्य को इतनी स्पष्टता से न िींहदखाता ै। 'भारतीय' य शब्द भी पयाप्सत रूप से य काम न िींकर सकता, इसका अथ सभी 'ह दिंी' ी ोता ै तथा य शब्द अचधक व्यापक ै, परिंतुह दिंुओंकी जातीय एकता इस शब्द से प्रकट न िीं ोती। म िोग लसख ैं, ह दिंू ू ैं तथा भारतीय भी ैं, इन दोनों का समन्वय म िोगों में ववद्यमान ै तथावप म िोगों को स्वतिंत्र अक्स्तत्व प्राप्त न ी िं ै।

सास्िंकृततक, जातीय अथवा राटरीय अथ तमें म सभी लोग एक ैं और अशभन्न ैं तथा ऐतत ाशसक एव िंप्राचीन समय से म लोगों की यथाथ तप चान ह दिंुओ िंके रूप में ी ोती र ी ै। इस िब्द के अततररतत अन्य कोई भी ब्दि म लोगों के जातीय ऐतय को इतनी स्पटिता से न िीं हदखाता ै।

स्वतिंप्रिनतननचधत्वऔरलसखसमाज

~~**म लोग (ह दिंू)ू सेउसे ेह दिंुसुथान की ककसी भी अह दिंूजातत की तुलना में वास्तववक रूप से अध्क म त्त्वपूर् त**~~ **मानते े ैं। जातीय तथा स्वतत्रिं प्रततततनध्त्व के काररु् जो ोनी ोती ै, व जातीय पृथृततावादी वृवृ के काररु् ोनेवाली ातन से अध्क न िीं ोती। शसख, जैन, शलगिंायत, ब्राह्मर्ों के अलावा अन्य तथा ब्राह्मर्ों ने भी अपनी जातत ववशिटि और स्वतत्रिं प्रततततनध्त्व की माँगँ करते े ुए सघिंष तकरना चाह ए।**

में सनातन धम सके ी अनुयायी मान लिया जाएगा-इस भय के अनतररक्त लसखों का उत्सा बढ़ाने में एक और बात कारण बन गई ै। इसीलिए में ह दिंुओंुसेपृथृक् अक्स्तत्व प्राप्त ोना िाह ए–इस बात पर वे अडे र े, य केवि राजनीनतक कारण था। स्वतिंि प्रनतननचधत्व प्राप्त ोना उचित ै अथवा अनुचित, इस बात की िीसिय ाँ ँन िींकरनी िाह ए। लसखों को, अपनी जानत का स्वतिंि रूप से कल्याण ोना आवश्यक ै, ऐसा प्रतीत ुआ। 'यहद मुसिमानों को पृथृक् जातीय प्रनतननचधत्व हदया जा सकता ै तो ह दिंुसुथान की ककसी भी म त्त्वपूण स अन्य जानत को इसी प्रकार की सुववधा माँगने का अचधकार क्यों न िीं ै, इसे े म िोग न िींसमझ सकते।' म िोगों को य प्रतीत ोता ै कक इस प्रकार स्वतिंि प्रनतननचधत्व की माँग करना तथा ह दिंुओंुसे वे िोग सवस्सवी लभन्न ैं इस आत्मघातक स्वरूप की तथा अल्प समय तक हटकनेविी भूलमका िेकर इस माँग को उिाना उचित न ी िंथा। अपनी जानत की ह त रक्षा करने ेतु जातीय प्रनतननचधत्व की माँग अल्पसख्यिक तथा म त्त्वपूण स जानत के समान लसखों को अपने जन्मलसद्ध ह दिंुत्व का त्याग न करते े ुए करना सभिंव था। इस तर वे सफि भी ो जाते। लसख बधिुंओ िंकी जानत मुसिमानों से कम म त्त्वपूण सन िीं ै। म िोग (ह दिंू)ू से उसे ेह दिंुसुथान की

कककसी भी अह दिंूजानत की तिुना में वास्तववक रूप से अचधक म त्त्वपूण समानते

प्रनतननचधत्व के कारण जो ोनी ोती ै, व जातीय पृथृक्तावादी वृवृत्त के कारण ोनेविी ानन से अचधक न ी िं ोती। लसख, जैन, लिगिंायत, ब्राह्मणों के अिावा अन्य तथा ब्राह्मणों ने भी अपनी जानत ववलशष्ट्ट और स्वतिंि प्रनतननचधत्व की माँग करते े ुए सघिंष सकरना िाह ए। परिंतुयहद अपनी ववलशष्ट्ट जानत की उन्ननत के लिए य आवश्यक ै ऐसा ववश्वास उन् ें ोता ो तब ी ऐसा करना उचित ोगा। उन् ें इस सूि का स्मरण रखना ोगा कक उनकी जानत का उत्कष सय ी ह दिंू ूधम सउत्कष सभी ै। प्रािीन समय में भी मारी िार प्रमुख जानतयों को राजसभा में तथा ग्रामसस्थाओिं में जातीयता के आधार पर स्वतिंि प्रनतननचधत्व प्राप्त ोता था। परिंतु सपिूंण स समाज में ववीन न ोकर स्वतिंि अक्स्तत्व बनाए रखने ेकी और ह दिंुत्व के अचधक ववस्तृत वगीकरण से म िोगों को वक्जतस करना िाह ए, ऐसी उनकी धारणा कभी न िींर ी। लसखों की धालमकस अथ समें लसखों के रूप में स्वतिंि प िान ोना उचित ै। तथावप सास्कृिनतक, जातीय तथा राष्ट्रीय दृक्ष्ट्ट से उन् ें ह दिंू ूमानना ी आवश्यक ै।

ह दिंओंुसेअिगसमझनालसखोंकेलिएभयकिंर ाननकारक ोगा

ष्जन ि ूरवीरों ने अपनेगुर का शिटयत्व अस्वीकार न करने के कारर् व् करनेवाले जल्लाद की कुल् ाडी के नीचे े अपनेशसर रख हदए 'म् त ेत िाका ष्जन ककया। शिर हदया पर शिर न हदया। वे वीर तया चदिं िुकडों के शलए अपना बीज अस्वीकार कर देते े?' अपनेपूवजतों की झूठी िपथ लेकर ऐसा क ेंगे ेअथवा जन्मशसद् अध्कारों का सौदा करेंगी ?

क्जन शूरवीरों ने अपनेगुरु का लशष्यत्व अस्वीकार न करने के कारण वध करनेविो ेजल्ादि की कुल् ाडी के निी अपनेलसर रख हदए 'धम स ेत शाका क्जन ककया। लशर हदया पर लशर न हदया। वे वीर क्या िदिं टुकडों के लिए अपना बीज अस्वीकार कर देते े?' अपने पूवजसों की झ्ठिी शपथ िेकर ऐसा क ेंगे ेअथवा जन्मलसद्ध अचधकारों का सौदा करेंगी? लशव ! लशव ! म िोगों की अल्पसख्यिक जानतयों को य स्पष्ट रूप से समझ िेना िाह ए कक यहद समथतसा में एकता का बीज ोगा तो ह दिंतुव में भी परस्परों को एकि करनेविी प्रेम कीचिंसिी प्रकी शक्तेिनीवह्वमकिशी ै एकमाइसमेंशक्त से ननमाणस ोनेविी ै। अिग र कर आप िोगों को ऐसा प्रतीत ोगा कक य म िोगों के लिए अचधक ह ताव ै, परिंतु म िोगों की प्रािीनतम जानत, ससक्ृनत एव िंआप िोगों को ब ुत बडी ानन ोगी। क्योंकक आप िोगों के ह त आपके अन्य ह दिं ूबधिंुओं के ह तों से ब ुत ननकट रूप से जुडे ुए ैं। ववगत ऐनत ालसक प्रसगिं के समान यहद भववष्य में यहद ककसी ववदेशी आिमणकारी ने ह दिं ूसस्क्ृनत के ववरोध में अपनी तिवार उिाई तो य आपके लिए ध्यान देनेयोनय ोगा कक अन्य ह दिंजूानतयों के समान आप पर भी उस तिवार का प्राणघातक प्र ार ननक्श्ति रूप से ोगा। जब कभी भववष्य में य ह दिंजूानत पुनः अपनत्व प्रस्थावपत करेगी तथा ककसी लशवाजी या रणक्जत के, ककसी रामिदिं अथवा धम सके; ककसी अशोक या अमोघवष सके आचधपत्य में नवितेना एव िंशौय-सपरािम से उत्साह त ोकर तथा जाग्रत् ् ोकर वैभव और उन्ननत के लशखर पर आरूढ़ ोगी। उस हदन की अपूव सववजय की प्रभा क्जस प्रकार ह दिं ूराष्ट्र के प्रत्येक अन्य व्यक्क्त के मुख पर शोभा देगी उसी प्रकार आपके मुखों को भी शोभायमान कर देगी। अतः बधिंुओ ! इस प्रकार के अल्प िाभ से फ्िकर, कुछ गित ऐनत ालसक ननष्ट्कष सननकािकर अथवा अपलसद्धातिं बनाकर उनसे ेप्रभाववत न ोइए। म िोगों की भेंट ग्रथिंी क िानेविो ककसी लसख से ुई थी। इस व्यक्क्त ने अपने ब्राह्मण सा ूकार के घर डाका डािकर उसकी त्या. की थी। इसलिए उसे ेसजा भी दी गई थी। उसनेक ा, 'लसख ह दिं ून िीं ै तथा गुरु गोववदिं लस िं के पुत्रिं को ब्राह्मण रसोइए ने धोखा हदया था, इस कारण ब्राह्मण की त्या करनेमें कोई दोष न िीं ै।' सौभानय से उसी समय एक ववद्वान् ्तथा सच्िा ग्रथिंी लसख व ाँउपक्स्थत था। इस व्यक्क्त ने तत्काि ववरोध ककया और क ा, 'क्जन िोगों ने लसख गुरुओ िंको आश्रय हदया तथा प्रसगिं उत्पन्न ोनेपर उनके लिए प्राणों की बाजी भी िगा दी, ऐसेमनतदास आहद ब्राह्मणों के उदा रणों से उसे ेननरुत्तर भी कर हदया। लशवाजी के जानत के ी िोगों ने क्या ववश्वासघात न ी िं ककया ? उसके पौते से असत्य आिरण करनेविा वपसिा क्या अह दिं ूथा? परिंतु इस कारण लशवाजी ने अथवा उसके राष्ट्र ने अपनी जानत या ह दिंतुव से सबिंधिं ववच्छेद न िींककए थे। वीर बदिंा से अिग ोते ेसमय ब ुत से

लसखों का आरिंभ में उसके प्रनत ववश्वासघातक क्षिारण था। तत्पश्िात् ◌ककसी अन्य समय जब खिासा लसखों का अग्रिंजों के साथ युद्ध ◌ुआ तब भी लसखों का क्षिारण इसी प्रकार का था। भयकिंर युद्ध ◌ो र ◌ा था, उस समय अनेक लसखों ने गुरु गोववदिंलस ◌िं का साथ छोड हदया। लसखों के इस ववश्वासघात की तथा भीरुतापूण सक्षिारण के कारण म ◌िोगों के लस ◌िं जैसेपरिामी गुरु को शिुक्षिों का घेरा तोडकर बा र आनेके लिए ब ◌ुत कडेप्रयास करने पडे। इसी प्रसगिं के कारण ब्राह्मण को गुरुपुिों का ववश्वासघात करने का अवसर प्राप्त ◌ुआ। इस नििी कृत्य के कारण म ◌िोगों को ह दिंू ◌ूक ◌िानेमें ◌िज्जा का अनुभव ◌ोता ◌ै, तब लसखों को नििी क्षिारण के कारण लसख क ◌िाने में ◌िज्जा का अनुभव क्यों न ◌िीता?

ववगत ऐेतत ◌ाशसक प्रसगिंों के समान यहद भववटय में यहद ककसी ववदिंी आक्रमर्कारी ने ह दिंू ◌ूसस्कृितत के ववरो् में अपनी तलवार उठाई तो य आपके शलए ध्यान देनेयोग्य ◌ोगा कक अन्य ह दिंूजाततयों के समान आप पर भी उस तलवार का प्रार्घातक प्र ◌ार तनष्चचत रूप से ◌ोगा।

ह दिंुक्षिुंकी अल्पसख्यिक तथा ब ◌ुसख्यिक जानतयाँआकाश से क्षिानक पृथ्वी पर अवतीण सन ◌िीं ◌ुई ◌ै। एक ◌ी सस्कृिनत तथा एक ◌ी भूलम में क्जसकी जडेंग री प ◌ँ◌ुँ◌िकर जम ◌िकी ◌ै ऐसेककसी म ◌ान् ◌वृक्ष के समान उनका ववकास ◌ुआ ◌ै। ककसी बकरी के बच्िेको कच्छा तथा कृपाण बाँधकर उसे ◌ेलस ◌िं न ◌िींबनाया जा सकता ◌ै। गुरु गोववदिंलस ◌िं ने वीर और ◌ुतात्माओ ◌िंकी एक टोिी सफितापूवकस बना कारण य सभिंव ◌ो सका। कभी य क सकता ◌ै कक जडों सेक्या सबिंधिं ◌ै ? उस रक्त अस्वीकार न ◌िींकर ◌िी। व जानत ◌ी तेजस्वी व परिामी थी इसी लस ◌िं के बीज सेलस ◌िं ◌ी उपजता ◌ै। क्या फ़ू क्जस डािी पर व खखिा ◌ै, उसका उस पौधे की फ़ू के समान म ◌िोग भी अपना बीज अथवा सकते। जब आप ककसी ऐसेलसख का उल्िेखि करतैं जो अपनेगुरु के प्रनत ववश्वास रखता ◌ै, तब आप ककसी ऐसेह दिंू ◌ूका उल्िेखि करते ◌ े ◌ैं जो अपनेगुरु का सच्िा लशष्य ◌ै, क्योंकक लसख बनने से पूव सतथा आज भी व एक ह दिंू ◌ू ◌ी बना ◌ुआ ◌ै। जब तक म ◌िोगों के लसख बधिंु ◌ुअपनेलसख पथिं के सच्िेअनुयायी ◌ोंगे,◌े तब तक ह दिंू ◌ूबने र ना ◌ी उनके लिए आवश्यक ◌ै। तब तक य आलसधिंलसधिं ◌ुतक भारतभूलम उनकी वपतृभूलम तथा पुण्यभूलम भी बनी र ◌ेगी। क्जस समय वे स्वय ◌िंको लसख क ◌िाना बदिं कर देंगे ◌े उसी समय उन् ◌ें ह दिंू ◌ून ◌िींक ◌ा जाएगा।

ह दिंुओ ◌िंकी अल्पसख्यिक तथा ब ◌ुसख्यिक जाततयाँ ◌ँआकिा से अचानक पृृ्थवी पर अवतीर् तन ◌िीं ◌ुई ◌ै। एक ◌ी सस्कृितत तथा एक ◌ी भूशम में ष्जसकी जडेंग री प ◌ँ◌ुँचकर जम चुकी ◌ै ऐसेककसी म ◌ान् ◌वृक्ष के समान उनका ववकास ◌ुआ ◌ै। ककसी बकरी के बच्चे को कच्छा तथा कृपार् बाँक्र उसे ◌ेशस ◌िं न ◌िींबनाया जा सकता ◌ै।

अब तक मनेअपने लसख बधिंुओ ◌िंका उदा रण देकर प्रदीघ ◌िसिा सकी ◌ै। मारी पररभाषा के अनुसार य ववविेन और ववाि लसखों के समान म ◌िोगों के अन्य अवैहदक जानतयों तथा धमपसथिों के लिए भी उचित ◌ै। उदा रण के लिए देवसमाजी स्वय ◌िंअज्ञेयवादी ◌ै, परिंतु ह दिंुतुव का अज्ञेयवाद अथवा ननरीश्वरवाद से कोई सबिंधिं

न िीं ै। देवसमाजी इस भूलम को अपनी वपतृभूलम तथा पुण्यभूलम मानते े ैं, अत: वे ह दिं ू ी ैं। इस िििसके पश्िात् ्आयसमाजी बधिुंओं का वविार करना आवश्यक न ी िििगता, क्योंकक इन िोगों में ह दिंुत्व के सभी िक्षण इस प्रकार अत्यचधक स्पष्ट रूप में ववद्यमान ैं कक ये कट्टर ह दिं ू ैं ऐसा ी अनुभव ोगा। इस प्रकार ककसी कारण से म िोगों की पररभाषा में अव्याक्प्त का दोष ै, य दरशानेवािा एक भी उदा रण प्राप्त न िीं ोता।

जब आप ककसी ऐसेशसख का उल्लेख करते े ैं जो अपने गुर के प्रतत ववचवास रखता ै, तब आप ककसी ऐसेह दिं ू का उल्लेख करते े ैं जो अपने गुर का सच्चा शिटय ै, तयोंकक शसख बनने से पूव ततथा आज भी व एक ह दिं ू ी बना ुआ ै। जब तक म लोगों के शसख बिुअपने शसख पथिं के सच्चे अनुयायी ोंगे, तब तक ह दिं ूबने र ना ी उनके शलए आवचयक ै।

एकनाजुकअपवाद

ह दिंुत्व का प्रथम अशभकरर् मयाहतदत रूप में इस सबंि में प्रयुतत ककया जा सकता ै। इस उदा रर् में ह दिंुत्व का दूसूरा अशभलक्षर् - ह दिं ूमाता- वपता का रतत िरीर में ववदयमान ोना कदावप न िीं शमल सकता। ककसी ह दिं ू से वववा करने के पचचात् ् ी य न्यूनता िा देना सभिंव ै, तयोंकक वववा बिंन् के कारर् स्त्री-पुरष परस्पर एकरूप ो जाते े ैं।

परिंतु एक उदा रण ऐसा ै कक उससेककसी सतीोषजनक माग सका पता न िीं िििता। य उदा ण ै भचगनी ननवेहदता का। अपवाद के कारण ननयम प्रमाखणत ोता ै, य यहद सत्य ो, तो इस अपवाद के कारण ऐसा मानना पड़ेगा कक यह अपवाद भी इस ननयम की पुक्ष्ट करता है। भचगनी ने ी

लसधिंु से लसधिंु तक भूलम को अपनी वपतृभूलम के रूप में स्वीकारा था। व इस भूलम से ननतातिं प्रेम भी करती थी। यहद म िोगों का देश स्वतिंि ोता, तो म िोगों ने इस देवतुल्य व्यक्क्त को अपने राष्ट्र के नागररकत्व के अचधकार अवपतस ककए ोते। ह दिंुत्व का प्रथम अलभकरण मयाहसदत रूप में इस सबिंधि में प्रयुक्त ककया जा सकता ै। इस उदा रण में ह दिंुत्व का दूसूरा अलभिक्षण - ह दिं ूमाता-वपता का रक्त शरीर में ववद्यमान ोना कदावप न िींलमि सकता। ककसी ह दिं ूसे वववा करने के पश्िात् ् ी य न्यूनता टा देना सभिंव ै, क्योंकक वववा बधिंन के कारण स्िी-पुरुष परस्पर एकरूप ो जाते े ैं। सपिूंण सववश्व में भी इस माग सको मान्यता लमिी ै, परिंतु य दूसूरा अलभिक्षण उनमें ककसी कारणवश ववद्यमान न ी िथा। तथावप तीसरे अलभिक्षण के अनुसार वे ह दिं ू क िाने की अचधकारी थी। उन् ोंने म िोगों की ससकृ्िनत को स्वीकार ककया था तथा इस भूलम से व पुण्यभूलम के रूप में प्रेम करती थी।ि' म ह दिं ू ी ैं' ऐसा वास्तववक रूप से उन् ें प्रतीत ोता था। ह दिंुत्व की अन्य सभी शास्िीय कसौहटयों पर वविार न भी ककया जाए तब भी य एक ी वास्तव तथा म त्त्वपूण सकसौटी ै, ऐसा मानना ककसी प्रकार से अनुचित न िीं ोगा। परिंतु व्यव ार में ब ुसख्यिक िोग ह दिंुत्व शब्द का क्जस अथ समें

प्रयोग करते े ैं, उसी पर ववार करने के पश्ाति् ् ी म िोगों को ह दिंतुव के अलभिक्षण ननक्श्ति करने ैं। इस

बात इसी वक्तव्य अह दिंू ूमितानवपतीं की सतिांन को ह दिंू ूक िाने का
अचधकार तभी हदया जाएगा जब व व्यक्क्त म िोगों के देश को अपना देश मान िेगा और ककसी ह दिंू ूसे
वववा करने के पश्ाति् ्इस देश सेवपतृभूलम के रूप में प्रेम करने िगेगा और ननत्य के व्यव ार में म िोगों की
सस्कृिनत को स्वीकार करते े ुए इस देश को पुण्यभूलम के रूप में पूजनीय मानने िगेगा। इस नए दापिंत्य की
सतिांनों को भी अन्य बातें समान ोनेके कारण नन:सदिं रूप से ह दिंू ूक ा जाएगा। इससेअचधक क नेका
अचधकार मारा न िीं ै।

ह दिंतुव की अन्य िास्त्रीय सभी कसौहियों पर ववचार न भी ककया जाए तब भी य एक ी वास्तव तथा

मात्रपूर्ण कसौटी, के समान ह दिंतुव अनुधचत व्यव ार में ककसी प्रकार न िीं
ब्दि का ष्जस अथ तमें प्रयोग करते ेववचार करने म लोगों को ैं, उसी पर के पचचात् ् ी ह दिंतुव के अशभलक्षर् तनष्चचत करने ैं।

ननदोष पररभाषा

ह दिंओुके ककसी भी धमपसथिं के तत्त्वज्ञान पर क्जसकी श्रद्धा ै ऐसे ककसी भी नवागत को सनातनी,
लसख अथवा जैन नाम सेी प िाना जाएगा,क्योंकक ये सभी धम सअथवा पथिं ह दिंओु िंद्वारा ी स्थावपत ककए गए
ैं अथवा ह दिंओु िंके ी ववार की उपज ैं तथा इन सभी को साधारण ह दिंू ूसबिोधन ी प्राप्त ुआ ै। परिंतु इस
ववदेशी अनुयायी को केवि धालमकस अथ ससे ी ह दिंू ूक ा जाता ै। य ाँइस बात को ध्यान में रखना आवश्यक ै
कक इन ववदेशी अनुयानययों में जो धालमकस अथवा सास्कृिनतक दृक्ष्ट से ह दिंू ूक िाते ैं, केवि एक ी िक्षण
हदखाई देता ै। इसी कमी के कारण जो मारी जानत के धालमकस पथिं का अथवा मतों का अनुयायी अपनेआपको
समझता ै, उसे िोग 'ह दिंू' ूक ने के लिए तैयार र ते े ।ै मारी मातृभूलम की ब ुमिो सेवा क्जस भचगनी
ननवेहदता अथवा ऐनी बेसटें' द्वारा की गई ै, उनके लिए म िोगों के मन में कृतज्ञ भाव र ता ै। एक स्वतिं
जानत के रूप में म ह दिंू िोग मृद ुतथा सविेंदनशीि ैं कक प्रीनत के स्पश ससे पुिककत ो जाते े ैं। जो व्यक्क्त-स्त्री
या पुरुष-कोई भी म िोगों के राष्ट्रीय जीवन में अपना व्यक्क्तगत जीवन एकरूप करता ै, उसे िगभग त्रबना
ैं परिंतु क्या अपवाद स्वरूप नीतीं में स्वय मानता करि ि ेते। में
ववश्वास ै कक क्जन ववलभन्न उदा रणों द्वारा म िोगों ने ह दिंतुव की जो पररभाषा बनाई ै तथा उसका परीक्षण
ककया ै, व दोनों दृक्ष्ट से सतिोषप्रद ै और 'अव्याक्प्त' व 'अनतव्याक्प्त' के दोषों से मुक्त ै।

7. प्रकृनत की हदव्य करागिंुलियों द्वारा रेखखत राष्ट्र के सरिंक्षक सीमातिं

गागर और मिककयों से आप लोग चरों में पानी भरते ैं तथा इसे ेआप खाई क ते ैं, परिंतु प्रत्यक्ष वरर् ने भूखडिंों को दूरू िाते ुए इस ररतत स्थान को अपनेदूसूरे ाथ सेपानी से भर हदया ै। य ह दिंी म ासागर, खाडडयाँऔर उपसागर के साथ एक वविाल चर या खदिंक की भूशमका तनभा र ा ै।

अभी तक की ििास में उपयुक्ततावादी दृक्ष्ट्कोण को कुछ भी स्थान अभी न िींहदया गया था। परिंतु ाासिअब समाप्त ोनेको ै, इसलिए ह दिंतुव के जो िक्षण मनेननरूवपत ककए ैं, वे ककस प्रकार उपयोगी ैं, इसका वविार करना अप्रासचिंगक न िीं ोगा। क्जस प्रकार की भूलमका िेकर ह दिंू ूराष्ट्र को स्वय िंका भववष्ट्य सुननक्श्ति करने का तथा जब-जब ववरोध में तूफान उिेगे ेऔर आिमण ोंगे,े उनका सामना करते े ुए उन् ें

असफि बनाने का सामथ्य सउत्पन्न करने की शक्क्त इन मिू तत्त्वों में ववद्यमान ै अथवा न ीं, या ह दिंूजूानत लमट्टी की खोखिी नीविं पर खडी ोकर केवि डीगेंं मार र ी ै, इसका वविार करना ोगा।

कुछ प्रािीन राष्ट्रों ने अपनेदेश को एक सुरक्षक्षत ककिा बनाने ेतु अपने देश के िारों ओर दीवारें खडी की थी।ि आज वे मजबूत व प्रििंड दीवारें लमट्टी में लमि िुकी ैं तथा व ाँ ँपडेलमट्टी के ढेर देखने ेपर ी उनके अक्स्तत्व का पता िता ै। आश्ियि सइस बात का ै कक क्जन िोगों की सुरक्षा करने ेतु ये दीवारें खडी की गई थीं, वे िोग भी िुप्तप्राय ो िुके ैं। म िोगों के अनत प्रािीन पडोसी देश िीन की कई पीहढ़यों ने मे नत करके सपूिंण सिीनी साम्राज्य को पररवेक्ष्टत करनेवािी एक ववशाि, ऊँिी तथा मजबूत दीवार बनाई थी। व ववश्व का एक आश्ियि सबन गई। पररिंतु व भी मानवी आश्ियिकृसनतयों के समान अपनी भार से ढ गई। पररिंतु प्रकृनत की बनाई ुई ये दीवारें देखखए। वे सपूिंणतसः तृपूत बने ुए ककसी ऐश्वय-ससपिंन्न व्यक्क्त के समान गव ससे खडी हदखाई देती ैं। वैहदक समय में प्रकृनत के स्रोतों की रिना करनेवािे ॠवषयों को भी वे ऐसी ी हदखाई देती थीं तथा आज म िोग भी उन् ें उसी स्वरूप में देखते े ैं। ह मािय की प्रििंड पक्क्तियाँ ी म िोगों की सरिंक्षक दीवारें ैं। इन् ीं के कारण मारा देश सुरक्षक्षत दुगु सदृश बन गया ै।

गागर और मटककयों से आप िोग िरों में पानी भरते ैं तथा इसे ेआप खाई क तैं, पररिंतु प्रत्यक्ष वरुण ने भूखिंडों को दूरू टाते े ुए इस ररक्त स्थान को अपनेदूसूरे ाथ से पानी से भर हदया ै। य ह दिंी म ासागर, खाडडयाँऔर उपसागर के साथ एक ववशाि िर या खदिंक की भूलमका ननभा र ा ै।

ये म िोगों के देश की सीमाएँ ैं ैं। इस कारण म िोगों को सागरतट व भूलम दोनों का ी िाभ प्राप्त ुआ ै।

परमेश्वर की अत्यचधक िाडिी बेटी ै मारीमातृभूलम

म लोगों के पास ल, मोर, कमल, ाथी तथा गीता ै, इसशलए ीत कहिबिं में तनवास करने से जो सुख प्राप्त ोते े ैं, उन् ें त्यागनेके शलए भारतभूशम तैयार ै। सभी चीजें अपनी सेवा करने ेतु ी बनी ैं, य बात उसे ेज्ञात ै। उसके वन तथा उपवन सदा रे- भरे व ीतल छायायुतत र ते े ैं। उसके खादयान्न भडिंार सदैव अन्न-ान्य से सुख शमलता ै। म लोगों के पास ल, भरे ोते े ैं।

सकि सौभानय से अिंककृत म िोगों की य भूमाता ईश्वर की अत्यचधक िाडिी कन्या ै। उसकी नहदयाँअथा तथा अववरत रूप से प्रवाह त ोनेवािजि से पररपूण स ैं। र वष सय ाँखाद्यान्नों का ववपुि उत्पादन ोता ै। उसकी प्राकृनतक आवश्यकताएँअत्यल्प ैं तथा केवि सकिंत करने पर इन् ें पूरा करने ेतु प्रकृनत दोनों ाथ जोडकर सदैव तत्पर र ती ै। नाना प्रकार के पशु-पक्षी, वन्य पशु तथा ववववध प्रकार के फि-फूिों के वृकूष इस भूलम पर ववद्यमान ैं। इन सभी के लिए में सूरज से प्रकाश और गरमी उचित मािा में प्राप्त

ोती ै। बफस के नीि कई म ीनों तक दबे ेर नेविो प्रदेश उन् ें ी िाभकारी ों। शीत जिवायु में कष्टदायक काम करने के लिए उत्सा वधकस वातावरण बना र ता ै, परिंतु य ाँकी उष्ण जिवायु के कारण अचधक कष्ट उिाने की आवश्यकता न िीं पडती। सदैव शुष्क गिे सेर ने की तुिना में अपनी तृषूट्णा शीत मधुर जि पीकर बुझाना में अचधक अच्छा िगता ै। उन िोगों के पास मूितः जो न िीं ै, उसे ेकष्टपूवकस प्राप्त करने के आनदिं का उन् ें सुखकर उपभोग करनेदीक्जए, परिंतु क्जन् ें अनायास ी कुछ िीजें प्राप्त ो र ी ों तो उनका उपभोग

[illegible] पर वा न की सवारी करने का ककतना भी सुख क्यों न ो, परिंतु मारी भारतमाता को घाटों पर िाँदँनी रात में गगिंा के रुप िे ेजि-प्रवा में कौमुदी वव ार करनेविाी नौकाएँ ँदेखने ेमें अचधक मोर, कमि, ाथी तथा गीता ै, इसलिए शीत कहटबधिं में ननवास करने सेजो सुख प्राप्त ोते े ैं, उन् ें त्यागनेके लिए भारतभूलम तैयार ै। सभी िीजें अपनी सेवा करने ेतु ी बनी ैं, य बात उसे ज्ञात ै। उसके वन तथा उपवन सदा रे-भरे व शीतिि छायायुक्त र ते े ैं। उसके खाद्यान्न भडिंार सदैव अन्न-धान्य सेभरे ोते े ैं। य ाँका पानी स्फहटक के समान ननमिस ै, फूि सुगचिंधत और फि रसदार ैं। वनस्पनतयाँ ँऔषचध गुणों से युक्त ैं। ऊषा के हदव्य रिंगों में व अपनी तूलिका डुबोती ै तथा गोकुि में गायन के आिाप उसकी बाँसुरी सेउत्पन्न ोते।ै ननःसदिं मारी सकि सौभानय से अिंकिंत भूदेवी ईश्वर की अत्यचधक िाडिी कन्या ी ै।

समानवसनतस्थान

इंग्लिडैं अथवा फ्रािंसि ी न िीं, ववचव के अन्य दिेंो को, चीन तथा अमेररका अपवाद के अततरररतत ककसी भी दि को,

ह दिंसुथान जैसी प्राकृततक से सुरक्षक्षत और सपिंन्न भूशम प्राप्त न िीं ुई ै। समथ तराटरीयत्व का प्रथम तथा अत्यतिं म त्त्वपूर् तअशभलक्षर् ै - सभी को एक समान प्रतीत ोनेवाली स्वदिेभूशम तथा सामान्य वसततस्थान।

इंग्लिडैं अथवा फ्रािंसि ी न िीं, ववश्व के अन्य देशों को, िीन तथा अमेररका के अपवाद के अनतररक्त ककसी भी देश को, ह दिंसुथान जैसी प्राकृनतक रूप से सुरक्षक्षत और सपिंन्न भूलम प्राप्त न ी िं ुई ै। समथ सराष्ट्रीयत्व का प्रथम तथा अत्यतिं म त्त्वपूण सअलभिक्षण ै-सभी को एक समान प्रतीत ोनेविाी स्वदेशभूलम तथा सामान्य वसनतस्थान। दूरूदृक्ष्ट सेववश्व के सभी देशों का ववािर ककया जाए तो प्रतीत ोता ै कक एक म ान् ्जानत के ववकास के लिए अत्यचधक सुयोनय भूलम अपणस करने में मारे राष्ट्र ने क्जस उदारता का पररिय हदया ै, व ककसी अन्य देश में हदखाई देना असभिंव ै। ऐसी वपतृभूलम के लिए ननतातिं प्रेम म ह दिं िूोगों का राष्ट्रननष्िा का प्रथम और अत्यतिं आवश्यक अलभिक्षण ै। उस प्रेम का प्रभाव मारे राष्ट्र को अचधक समृद्ध व बिशिाी बनाने में स ायक ोता ै। इससे म िोगों को 'न भूतो न भववष्यनत' ऐसा पररिम करने की स्फूनत स ोती ै तथा शक्क्त का िाभ ोता ै। के रूप

म िोगों का सख्यिोबि

ह दिंतुव के दूसूरे अलभिक्षण के कारण ममें अनजानेमें एकता और राष्ट्रीय म ानता की जो जन्मजात प्रववृत्तयाँ ववद्यमान ै उनका मूल्य बढ़ जाता ै। ववश्व के ककसी भी अन्य देश में िीन का अपवाद छोडकर, इतनी एकववध, इतनी प्रिीन और कफर भी सख्यिोबि तथा जीवतिंता से समथतसा प्राप्त करनेविी जानत क ी िंभी वास न ी िंकरती। राष्ट्रीयत्व के मूिाधार के रूप में जो भौगोलिक क्षि म िोगों का प्राप्त ुआ ै उसी प्रकार की मूतिःओमेरिकितु के पास मेरे का परिंतु स्थान निी ी ै। मुसिमान अथवा खिश्नि एकजानत न ी िं ै। वे धालमकस रूप में एक भिे ी ोते े ैं परिंतु राष्ट्रीयता अथवा जातीयता में वे लभन्न ैं। इन तीनों बातों का वविार करने पर ज्ञात ोता ै कक म ह दिंू िोग अपनेएक ी अनत प्रिीन छि के निी अखडिं रूप से र ते े ैं। म िोगों का सख्यिोबि एक म ान वैलशष्ट्ट्य ै।

समान सस्कृिनत

अब सस्कृितत का ववचार! ितसपीयर इंग्ष्िि तथा अमेररकन - दोनों के ोनेके कारर् वे एक-दूसूरे को भाई क ते े ैं। परिंतु केवल काशलदास अथवा भास ी न िींतो े ह दिंू ूबिांव्ो! रामायर् तथा म ाभारत के अततररतत वेद भी आज सभी लोगों के ।ै अमेररका में बच्चों को जो राटरगीत शसखाया जाता ै उसकी पाचवभूतशम ोती ै, अमेररका के ववगत दो ितकों का इतत ास ।

अब सस्कृिनत का वविार ! शेक्सपीयर इंग्लिश तथा अमेररकन- दोनों के ोने के कारण वे एक-दूसूरे को भाई क ते े ैं। परिंतु केवि कालिदास अथवा भास ी न िींतो े ह दिंू ूबाधिंवो ! रामायण तथा म ाभारत के अनतररक्त वेद भी आज सभी िोगों के ैं। अमेररका में बर्च्ों को जो राष्ट्रगीत लसखाया जाता ै, उसकी पेमिश्वभूसअमेररका के ववगत दो शतकों का इनत ास। इस कारण अमेररका भववष्ट्य में यावतिद्रिंहदवाकरौ म ान् ्वैभव सेअपनेउच् स्थान पर बना र ेगी, इस प्रकार का भावनोद्दीपक वणनस ककया जाता ै। परिंतु ह दिंू ूइनत ास केवि कुछ शतकों का इनत ास न िीं ै। उसकी गणना युगों से की जाती ै ऐसा करते ेसमय ह दिंू ूके मुख से ये शब्द साश्रि सननकि पडते े ैं-'रघुपतेः गता मथुरा पुरी ॥ ह दिंू ूलमथ्या गौरव को कोई म त्त्व न िींदेता। सारासार वविार तथा सापेक्षता य ी वास्तववक रूप से अनिंतम सत्य ै, य बात व मानता ै। इसी कारण व रॅमसिे अथवा नेबिुाडनेझार से अचधक चिरिंजीव बन गया। क्जस राष्ट्र का कोई भूतकाि न िीं ै उसका भववष्ट्य िा भी न िीं ोता।' ऐसा क ने में यहद कुछ तथ्य ोगा तब क्जस राष्ट्र ने परािमी तथा अवतारी पुरुषों की और उनके भक्त- पूजकों की एक अखडिं परिंपरा ननमाणस की तथा क्जस शिु ने अपनेबि से ग्रीस व रोम, परो ा तथा इनकस िोगों को तथा राष्ट्रों को पूणतसः नाम शेष ककया था, उसी शिु से

ह दिंतुव 108 युद्ध करते े ुए उसपर ववजय पाई थी। उस राष्ट्र के इनत ास में ववश्व के ककसी भी अन्य राष्ट्र के इनत ास की

तुिना में उज्ज्वि भववष्य की ामी हदखाई देती ै।

मातृभू ल म की तुि ना में पुण् यभूल म के प्रनत प्रेम श्रेष्ट्तिरोता ै

सस्कृितत के साथ ी समान पुण्यभूशम के प्रतत प्रेम मातृभूशम के प्रेम से अध्क िष्तितािी ोता ै। मुसलमानों का उदा रर् लीष्जए। हदल्ली अथवा आगरा की तुलना में वे मतका से ी अध्क प्यार करते े ैं।

सस्कृिनत के साथ ी समान पुण्यभूलम के प्रनत प्रेम मातृभूलम के प्रेम से अचधक शक्क्तशिी ोता ै। मुसिमानों का उदा रण िीक्जए। हदल्िी अथवा आगरा की तुिना में वे मक्का से ी अचधक प्यार करते े ैं। उनमें से कुछ िोग प्रकट रूप में क ते े ैं कक इस्िाम की उन्ननत के लिए अथवा अपने धम ससस्थापकों की पुण्य भूलमका रक्षण करने ेतु प्रसगिं आनेपर वे सभी ह दिंी बातों की आ ुनत देनेके लिए कहटबद्ध ैं। य ूदी िोगों का भी य ी वविार र ता ै। क्जन देशों में उन् ें आश्रम लमिा तथा अनेक शतकों तक उत्कष सपूव सजीवन का उपभोग ककया, उस भूलम के प्रनत उन् ोंनेकृतज्ञतापूवकस प्रेम कभी प्रकट न िींककया। उनकी जन्मभूलम के प्रनत उनका आकषणस न िींोगा। दूरू ोते े ुए भी उनकी स्वाभाववक स ानुभूनत उनकी पुण्यभूलम के लिए ोगी तथा यहद

य ूदी राष्ट्र व इन देशों में, क्जन् ें वे अपना मानते े ैं, युद्ध का प्रसगिं उत्पन्न ोता ै। तब ज्यू राष्ट्र से ी उनकी स ानुभूनत र ेगी। इस प्रकार से ववरोधी पक्षों का साथ देने के इतनेउदा रण इनत ास में ववद्यमान ैं कक उनका मिानुसार तथा सख्यिा देना ननरथकस ोगा। ववलभन्न समय पर जो 'िुसेड्स' ुए (धमयुसद्ध) उनसे ेइस बात की पुक्ष्ट ो जाती ै कक राष्ट्रीयत्व व भाषा द्वारा लभन्न जानत के िोगों को भी एकत्रित करने में पुण्यभूलम ववषयक प्रेम वविक्षण प्रभावी ोता ै।

राष्ट्र में सपिंूण सक्स्थरता तथा एकता का भाव ननमाणस ोनेमें यहद कोई आदश सक्स्थनत ोती तो व ै व ाँ के ननवालसयों का उस भूलम के प्रनत भक्क्तभाव ोना। उनके वपतरों तथा पूवजसों की भूलम ी उनके ईश्वरों-देवताओिंकी, ऋवषयों तथा धम ससस्थापक साधुपुरुषों की भी भूलम ोनी िाह ए। इसी भूलम में उनके इनत ास की घटनाएँ घटी ुई ोनी िाह ए तथा उनके पुराण भी व िींननमाकककए गए ोनेिाह ए।

ह दिंू ूऐसी एकमेव जानत ै क्जसे ेइस प्रकार की आदश सक्स्थनत प्राप्त ुई ै। उसी के कारण राष्ट्रीय क्स्थरता व एकता की भावना तथा कीनत ससपिंादन करने ेतु एक ननक्श्ति स्फूनतस्सथान उन् ें प्राप्त ो िुका ै। ििंनी िोग भी म िोगों जैसेभानयशिी न िींैं। केवि अरेत्रबया और कफलिस्तीन को ी और भववष्य में अपना राष्ट्र स्थावपत करने का यहद य ूहदयों को अवसर प्राप्त ोता ै तब उन् ें इस क्वचित् ् ी हदखाई देनेवािी युनत का िाभ प्राप्त ोनेकी सभिंावना ै। परिंतु म ान् ्राष्ट्र स्थावपत करने ेतु प्राकृनतक, सास्कृिनतक, ऐनत ालसक तथा सख्यािबि आहद आवश्यक घटकों का वविार करना पूणतस: गौण प्रतीत ोता ै। तथावप कफलिस्तीन य ूदी

ागिों का स्वप्न कफलिस्तीन राष्ट्र के रूप में साकार ुआ भी, तब भी उपररननहदसष्ट घटकों की कमी उनके लिए सदैव बनी र ेगी।

राटर में सपिंूर् तष्स्थरता तथा एकता का भाव तनमार्त ोनेमें यहद कोई आदि तष्स्थतत ोती तो व ै व ाँ के तनवाशसयों का उस भूशम के प्रतत भष्ततभाव ोना। उनके वपतरों तथा पूवजतों की भूशम ी उनके ईचवरों-देवताओ िं की, ऋवषयों तथा म् तसस्थिापक सा् ुपुरषों की भी भूशम ोनी चाह ए।

भानयशिाी भारतभूलम

भौगोशलक, सास्कृिततक, ऐतत ाशसक तथा समाजववषयक आवचयक बातों में वे म लोगों के समान भाग्यिाली न िीं ैं। इसके अततररतत पुण्यवान मातृभूशम प्राप्त करनेका दुलुभत सौभाग्य भी उन् ें प्राप्त न िीं ुआ ै। रूस अमेररका - भौगोशलक अथ तसेववस्तृत् भूप्रदि ुए ैं, परिंतु राटरीयत्व के जो अन्य आवचयक अशभलक्षर् ैं, उनका सपिंूर् तअभाव य ाँहदखाई देता ै।

इिंनिडैं, फ्ािंसि, जमनसी, इटिी, तुकसस्थान, जापान, अफगाननस्तान आज का इक्जप्त (पुटिी को प्रािीन वशिंज तथा उनका इक्जप्त ब ुत समय पूव स ी। नष्ट ो िुका ै) तथा अन्य सस्थिान, मेक्क्सको, पेरु, चिचिी (इनसे े छोटे देशों का उल्िेखि भी करना आवश्यक न िीं ै) आहद सारे देश कुछ सीमा तक एकात्म तथा एकरूप हदखाई देते े ैं, परिंतु भौगोलिक, सास्कृिनतक, ऐनत ालसक तथा समाजववषयक आवश्यक बातों में वे म िोगों के समान भानयशिाी न िीं ैं। इसके अनतररक्त पुण्यवान मातृभूलम प्राप्त करने का दुिभस सौभानय भी उन् ें प्राप्त न िीं ुआ ै। रूस तथा अमेररका - भौगोलिक अथ ससे ववस्तृत् भूप्रदेश प्राप्त ुए ैं, परिंतु राष्ट्रीयत्व के जो अन्य आवश्यक अलभिक्षण ैं, उनका सपिंूण सअभाव य ाँहदखाई देता ै। आज ववश्व के राष्ट्रों में भौगोलिक, जातीय, सास्कृिनतक तथा सख्यािबि आहद जो-जो आवश्यक अलभिक्षण ैं वे सभी ह दिंओु िं के समान यहद ककसी अन्य राष्ट्र में ववद्यमान ो तो केवि िीन का ी ननदेश ककया जा सकता ै। परिंतु सस्कृित जैसी पावन तथा पूणत्सव को प ँुँिुनेवािी भाषा का तथा पुण्यवान मातृभूलम का जन्मलसद्ध समान उत्तराचधकार म िोगों को प्राप्त ै इस कारण राष्ट्रीय एकता ननमाणस तथा प्राप्त करने की दृक्ष्ट से आवश्यक अलभिक्षणों का अथवा प्रमुख अिंगों का वविार करने पर ऐसा प्रतीत ोता ै कक म िोग अचधक सौभानयशिाी ैं।

ह दिंू ूबिधंुओ! सिंघहटत ोने ी ेअपर जीववत र सकेंगे

एक बार भूतकाल पर दृष्टिक्षेपे डाशलए तत्पचचात् ्वतमतान का अवलोकन कीष्जए। एशिया की मुसलमानों की सघिंनिा, यूरोप के ववशभन्न राटरों के राजकीय उददेचयों से प्रभाववत सघिं, अफ्रीका तथा अमेररका में चल र े एधथयोवपक आदिोलन आहद को सतकतापूवकत देखनेके पचचात् ् े ह दिंू ूबिंओु! ववचार कीष्जए।

एक बार भूतकिा पर दृक्ष्ट्क्षेप डालिए तत्पश्िात् ्वतमसान का अविोकन कीक्जए। एलशया की मुसिमानों की सघिंटना, यूरोप के ववलभन्न राष्ट्रों के राजकीय उद्देश्यों से प्रभाववत सघिं, अफ्रीका तथा अमेररका में िि र े एचथयोवपक आदिंोिनि आहद को सतकसतापूवकस देखने ेके पश्िात् ् े ह दिंू ूबधिंओ! वविार कीक्जए।

आपका भववतव्य सदा के लिए इस ह दिंसुथान के भववतव्य से ी जुडा ुआ ै क्या ? तब य भी सि ै कक ह दिंसुथान के भववष्ट्य को भिे या बुरे प्रकार से ननमाणस करनेका काम ह दिंओु िंको ी करना ै। य ह दिंओुंकी शक्क्त पर ी ननभरस करता ै। ह दिं,ू मुसिमान, पारसी, ईसाई और य ूदी िोगों में वे प्रथम ह दिंी ैं तथा बाद में अन्य। इस प्रकार की सभी को सक्म्मलित करनेविी एक ववस्तृत राष्ट्रीयत्व की कल्पना ननमाणस तथा अचधक ववस्तृत राष्ट्रीयत्व से उन् ें प्रेम करने का पाि देनेका प्रयास म िोग अपनी सपिूंण सशक्क्त िगाकर कर र े ैं। य आवश्यक भी ै। इस ध्येय की हदशा में प्रगनत करने ेतु ह दिंसुथान ककस सीमा तक सफि ो सकता ै य ज्ञात न ीं ै। परिंतु एक बात सूयप्रसकाश के समान साफ हदखाई देती ै और य केवि ह दिंसुथान के सदिंभ समें ी न ीं अवपतु अखखि ववश्व के लिए भी साफ ै। ककसी भी राष्ट्र की ननलमनसत के लिए ककसी एक पक्ष की आवश्यकता तो र ती ी ै। राष्ट्र का सारा अक्स्तत्व यहद क ीं प्रकट ोता ै तो व राष्ट्र के िोगों में तथा जानत के जीवन से ी प्रकट ोता ै। उन िोगों के सारे ह तसबिंधिं, भूतकिा का सारा इनत ास तथा भववष्ट्य की सारी आशा-आकाक्षिंाएँ ँउस राष्ट्र से तथा उस भूलम से ी जुडी र ती ैं। वे उस राष्ट्र महिंदर के प्रथम और अनिंतम ी न ीं, एकमेव आकार स्तभिं र ते े ैं। तुकसस्थान का ी उदा रण िीक्जए। राज्यिानिंत के पश्िात् ्युवा तुकों को अपनी लिकसभा तथा सैनैनक सघिंटनाओिं में भरती करने ेतु िोगों पर धालमकस या अन्य कोई भी प्रनतबधिं न िगाते े ुए तथा केवि अ सता के आधार पर आमेननयन एव िंईसाई िोगों की ननयुक्क्तयाँ कीं। परिंतु सववयसा के साथ जब तुकसस्थान का युद्ध ुआ तब ईसाइयों ने तथा आमेननयनों ने ी प्रथम इसमें बाधा डािी। तत्पश्िात् ्उनके जो-जो सैन्यदि तुकी सेना में थे, उन् ोंनेसववयसा के िोगों सेअचधक ननकट सबिंधिं बना लिये और वे उनसे ेजा लमिे। अमेररका का उदा रण भी इसी बात का प्रमाण आकार स्तभिं र ते े ैं। प्रस्तुत करता ै। जमनसी के साथ युद्ध प्रारिंभ ोते े ी जमनस मिू के नागररकों ने अमेररका का साथ न ीं हदया तथा अमेररका को इस भीषण दृश्य को देखना पडा। व ाँके नीग्रो िोग अपनेश्वेत बधिंओु िंसे स ानुभूनत न ीं रखते। उनका हृदय अफ्रीका ननवासी नीग्रो लिगों के प्रनत ी अचधक स ानुभूनत हदखाते े ैं, अतः अमेररका का भववष्ट्य उज्ज्वि करने का काम व ाँके मिू घटकों की एनिंग्िो सैक्सन शक्क्त की तथा कतृत्सव पर ननभरस करता ै। य ी ह दिंओु िंके बारे में भी सि ै। क्जनका भूत, भववष्ट्य तथा वतमसान उनकी वपतृभूलम व पुण्यभूलम से ह दिंसुथान की भूलम से ननकट से जुडा ुआ ै, व ी ह दिं िूोग इस भूलम का वास्तववक आकार ैं। वे ह दिं ूराष्ट्र के एकननष्ट् ि वअित तक रक्षा करनेविो सैननक ैं- ऐसा प्रतीत ोता ै।

राटर का सारा अष्स्तत्व यहद क ी िंप्रकि ोता ै तो व राटर के लोगों में तथा जातत के जीवन से ी प्रकि ोता ै। उन लोगों के सारे ह तसबंि, भूतकाल का सारा इतत ास तथा भववटय की सारी अिा-आकाक्षिंाएँ ँउस राटर से तथा उस भूशम सी जुडी र ती ैं। वे उस राटर मिंहदर के प्रथम और अतिंतम ी न ीिं, एकमेव आकार स्तभिं र ते े ैं।

देशद्रो ी गनतववचधयों का किोरतापूवकस ननमूिसन करो

ह दिंी राटरीयत्व की दृष्टि सेभी ह दिंओु! आप अपना ह दिं ूराटरीयत्व अध्क बलिाली तथा समथ तबनाओ। म लोगों के अह दिं ूबिंओु िंको न ीिं, ववचव के ककसी ी को भी जानबूझकर दु:ख देना उधचत न ीिं ै। परिंतु म लोगों की जातत व भूशमका न्याय्य और आवचयक सरिंक्षर् करने ेतु तथा ववशभन्न दिंों में जो 'पॅन इझम्स' व्यथ तमें पनप ष्जस कारर् तुम् ारी र े ैं "

ह दिंी राष्ट्रीयत्व की दृक्ष्ट से भी ह दिंओु ! आप अपना ह दिं ूराष्ट्रीयत्व अचधक बिशिी तथा समथ स बनाओ। म िोगों के अह दिं ूबधिंुओ िंको ी न ीिं, ववश्व के ककसी को भी जानबूझकर दु:ख देना उचित न ीिं ै। परिंतु म िोगों की जानत व भूलमका न्याय्य और आवश्यक सरिंक्षण करने ेतु तथा ववलभन्न देशों में जो 'पॅन इझम्स' व्यथ समें पनप र े ैं, दूसूरे देशों पर ककसी- न-ककसी लमथ्या कारण से आिमण कर र े ैं, उनकी तथा अपनी बधिंुओ िंकी मारे देश की बलि िढ़ाने की जो नििं देशद्रो ी काररवाइयाँ िर ी ैं, उन् ें समिू नष्ट्ट करते ेसमय में ककसी के िोध या खुशी का वविार न ीिंकरना िाह ए। जब तक ह दिंसुथान में र ते े ैं, वे प्रथमतः ह दिंसुथान राष्ट्र के नागररक ैं तथा बाद में अन्य कुछ भी ैं, ऐसा न ीिंक ते,े परिंतु इससे ववपरीत अत्यतिं सकिंुचित ेतु से सरिंक्षक तथा आिामक सघिं बना र े ैं, तब तक, े ह दिं ूबधिंुओ! जानत की एकववध तथा एकात्म समाजदे बनी ुई ै, उन ज्ञान-ततिंुओ िंके जिा के समान समाज-दे में ववद्यमान सूक्ष्म बधिंनों को अचधक बिशिी बनाने का प्रयास कीक्जए। आप िोगों में से जो कोई आत्मघात की भावना के कारण अत्यतिं म त्त्वपूण स र े, ममता के बधिंन तोडने के प्रयास कर र े ैं तथा ह दिं ूनाम का त्याग करने का वविार कर र े ैं, उन् ें जबरदस्त सजा ोगी। उन् ें तत्पश्िात् ्ऐसा भी अनुभव ोगा कक वे अपनी जानत के जीवन से उत्पन्न ोनेवािी जीवतिंता और शक्क्तसामथ्य सको खो िुके ैं। ह दिंुत्व में अतिंभूतस ककए ुए राष्ट्रीयत्व के क्जन अलभिक्षणों पर म िगों ने वविार ककया ै, उनमें से कुछ ी, क्जन िोगों में ववद्यमान ैं, वे स्पेन-पुतगसिा जैसै ेराष्ट्र ववश्व में लस ि- परािम कर सके। अब ये सभी िक्षण ववद्यमान ोनेपर इस ववश्व में ऐसी कौन सी बात ै, क्जसेह दिंओु िंके शक्क्त-सामथ्य से न ीिंककया जा सकता ?

ह दिंतुवकाआदशसतत्त्वज्ञान

तीस करोड की जनसख्यिा, ह दिंसुथान के समान पराक्रम करने ेतु उपयुतत ववस्तृत क्षेत्र, वपतृभूशम तथा पुण्यभूशम भी य ाँ ै। म ान् ्इतत ास का उिराध्कार तथा समान सस्कृितत व समान रतत के बिंन्ों से एकात्मता पाई ुई प्रचडिं जनिष्तत दवारा इस सामग्री के बल पर ववचव को अपनी बात मानने पर बाध्य ककया जा सकता ै। भववटय में ककसी हदन य प्रचडिं िष्तत मानवजातत को ज्ञात ोगी।

तीस करोड की जनसख्यिा, ह दिंसुथान के समान परिाम करने ेतु उपयुक्त ववस्तृत क्षिे, वपतृभूलम तथा पुण्यभूलम भी य ाँ ै। म ान् ्इनत ास का उत्तराचधकार तथा समान सस्कृिनत व समान रक्त के बधिंनों से एकात्मता पाई ुई प्रिडिं जनशक्क्त द्वारा इस सामग्री के बि पर ववश्व को अपनी बात मानने पर बाध्य ककया जा सकता ै। भववष्टय में ककसी हदन य प्रिडिं शक्क्त मानवजानत को ज्ञात ोगी।

इसी के साथ य भी उतना ी सत्य ै कक जब कभी ह दिंओु िंको इस प्रकार का स्थान प्राप्त ोगा और वे जब सपिूंण सववश्व को अपनी बात मान िनेके लिए बाध्य करेंगे, े तब य क ना सीता के शब्दों से अथवा बौद्ध के उपदेश से कुछ लभन्न न िीं ोगा। ह दिूं ूजब एक ह दिूं ू ी न िींबना र ता तब वास्तववक अथ समें उच्ि्अवस्था को प्राप्त ह दिूं ू ी ोता ै। शकिंराचाय सके साथ व क सकता ै कक य सपिूंण सववश्व ी म िोगों की काशी, वाराणसी, मेहेदनी ै अथवा तुकाराम के समान क ता ै—'आम्िा स्वदेश। भुवनिया मध्ये वास।' म िोगों का य स्वदेश कौन सा ै, बधिंओु ! इस ववश्व की, त्रिभुवनों की जो मयादसाएँ ँ ैं, व ी मारे देश की सीमा क्षक्षनतज ैं!

8. सदिंभ सिूी

१. ' रोलमयो आखण जूलियट' शेक्सवपयर के इस नाटक की नानयकों के वाक्यों का कौशल्यपूण सउपयोग कर िखक ने ग्रथिं का प्रारिंभ ◌ी इतना नाट्यपूण सककया ◌ै कक इतनी गभीर ताक्त्वक ििासके ववषय में भी उसकी अलभजात कल्पना ववकास का प्रमाण म िोगों को स ज लमि जाता ◌ै। रोलमयो तथा जूलियट एक-दूसूरे के प्रथम दशनस से ी प्रेम करने िग जाते ◌े ◌ैं, परिंतु इन दो प्रेलेमयों के पररवारों में वशिंानुगत वैर-भाव ◌ोनेसे इन प्रेलमयों को ववश्वास ◌ो जाता ◌ै कक वे एक-दूसूरे से शादी न ििं कर सकेंगे। इसी कारण जूलियट व्याकुि ◌ोकर रोलमयो सेआग्र पूवकस क ती ◌ै कक उसका नाम ◌ी बदि हदया जाए।
Intict..."It is by thy name that is my enemy. It is nor hand, nor foot, nor armorany part Belonging to a man, O, he so some other name! What is in a name? Thatwhich me

callarose by any other name a wouldsmell as sweet!"

२. इस लभक्षुश्रेष्ट्िका नाम था 'फ्रायर िरेंस', क्जसने रोलमयो और जूलियट का गुप्त-वववा कराया था।

The fair Apostle of the Creed. लसद्धातिों की प्रतीक, प्रेवेषत।

३.

इसी पैररस के साथ जूलियट का वववा रिाने की बात जूलूियट के माता-वपता ने सिोी थी।

४.

रोजलिन रोलमयो की पूव सवप्रयतमा थी।

५. मिू वाक्य - Lady, by yonder blessed moon, I swear

६. That tips with silver all these fruit-tree tops का भाषातिंर।

ईसा मसी की माता 'वक्जनस मेरी'।

'अीबाबा और ििीस िोर' क ◌ानी में िोरों का नायक 'खिु जा लसम-लसम' िमिं पढ़कर जादुई गुफा का दरवाजा खोिा करता था

७.

सतिुज।

८.

रावी।

चिनाब।

९. झेम।

१०. 'ववद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगधिंव सककन्नराः।' 'अमरकोश' में इन जानतयों को स्वग-सवग सकी जानतयाँ ◌ँक ◌ा

११.

१२.

१३.

गया

ै, यद्यवप इनत ास के अनुसार ववद्याधर, यक्ष आहद जानतयाँ ँ मारे जैसे ेमनुष्यों की ी थीं और आयों के साथ उनका प्रत्यक्ष सबिंधिं भी र ा था।

सभी ववद्यमान राजाओिंको जीतकर सावभसौम सत्ता प्रस्थावपत करनेवािो परािमी राजश्रेष्ट् ि को

१४.
'ििवनत'स

की उपाचध प्राप्त ोती थी।

१५. पाचथआस देश में र नेवािो अथात्स ्पृथ ु िोग। कुिंती का दूसूरा नाम 'पृथा' भी था। कदाचित् ्व पाचथआस की

राजकन्या थी। पाचथआस देश कैक्स्पयन समुद्र की आननेय हदशा में था। ईसा पूव स१७०-१३९ में प्रथम लमचिडाहटस ने पाचथयसन साम्राज्य की नीविं रखी। 'पाचथआस' देश ववद्यमान खोरासान प्रातिं ै।

१६. अष्टाविि क ोड ऋवष का पुि था। क ोड ऋवष जब अध्ययन कर र े थे, तब माता के गभ से ेउसने अपनेवपता पर टीका-हटप्पणी करते े ुए कुक्त्सत स्वर में उनसे ेपूछा, 'क्या आप अभी तक अध्ययन ी कर र े ैं ?' क्जससे िोचधत ोकर क ोड ऋवष ने अपनेपुि को 'आठ स्थानों पर तुम् ारा शरीर वि ो जाएगा' ऐसा शाप हदया। अष्टाविि का शरीर आठ स्थानों पर वि ो गया। आगे ििकर Luer क ोड ऋवष ने उसे े मधुवविा नदी में स्नान करवाकर उसके शरीर को शाप मुक्त कराया। अकबर के दरबार का

१७. ववदूषूक।

१८. अकबर के दरबार का स्तुनत-पािक।

१९. य काम स्वय िंििखक वव.दा. सावरकर ने -'छ सुन रे पृष्ूट्' (स ा सोनेरी पाने) ग्रथिं में ककया ै। उस ग्रथिं के पररच्छेद िमािंक १५७ से १६० तथा ३५७ से ३५९ और सावरकर खडिं ३, पृष्ूट् ५२ से ५९, नया १२२ से१२४ का अविोकन करें- बाि सावरकर, सपिंादक।

राजपुि लसद्धाथ सगौतम।

२०. कोसि के राजा ववद्युत्गभ सने शाक्य प्रजासत्ताक पर आिमण कर उसे ेपराक्जत ककया। इस ववषय पर 'सन्यस्ि खड्ग' नामक नाटक अवश्य पहढ़ए। समग्र सावरकर खडिं ९१

२१. गौतम बुद्ध का सबिोधन।

शाक्यों की राजधानी ।

२२. स्किंदगुप्त के समय (खि. ४१५-४८०) में वायव्य हदशा से आकर ूणों ने ह दिंसु्थान पर आिमण ककया।

२३.

२४.

ूणों के नायक तोरमान ने गुप्तों को पराक्जत करनेके पश्ाित् ्उज्जनयनी के राज्य पर अचधकार ककया। भववष्ट्य में मिाविो यशोधम सने ूणों को खदेड हदया। अचधक जानकारी के लिए 'स ा सोनेरी पाने', समग्र सावरकर खडिं ३. का अविोकन कीक्जए।

सम्राट् अशोक अथवा अशोक वधनस ने खि. पूव स२७३-२३७ तक राज ककया। िद्रिंगुप्त का पिु त्रबदिंसुार

२५. तथा त्रबदिंसुार के पिुहद ने बौद्ध धम सका प्रसार ब ुत कष्ट्ट उिाकर ककया।

वविम सवंित्सर इन् ीं का स्मारक ै। इस ववषय में ववद्यमान मतभेदों को समझते ुए सावरकर खडिं ३ 'सोनेरी पाने', पृष्ट्ि २२६ से २३६ का अविोकन करें।

२६. द्रििंापीड के पश्ाित् ्कश्मीर के लस िंासन पर आरूढ़ ुआ। िलिताहदत्य ने नतब्बत पर अचधकार ककया। गोबी के मरुभूलम पार की तथा व ींउसका ननधन ुआ।

दूसूरे शतक में पैशिी भाषा में रचित बृ त्कथा नामक ग्रथिं का रिनयता। 'कथा सररत्सागर', य उसी

२७. का अनुवाद ै।

लसखों का धमसस्थािपक ई.स. १४६९ से १४३८। उसके अनुयायी को लशष्ट्य अथवा लसख क ते े ैं।

२८. वैष्ट्णव धम सस्थािपक। जानतभेद के बिंधन इसे ेमान्य न ींथे।

गजनी का सिुतान म म्मद। इसनेई.स. १००१ से १०३० तक भारत पर आिमण ककए। सोमनाथ

२९. ई.स. १०२४ में तोड हदया तथा अकूत सपिंवत्त िूट िी।

३०. अ मदशा अब्दािी (ई.स. १७६१) पानीपत के युद्ध में मरािों का शिुथा।

३१. शा ज ाँ ँका ज्येष्ट्ि पिु। उसके ह दिंतुत्त्वज्ञान के आकषणस के कारण औरिंगजेब ने उसका वध ककया।

महिंदर श्रुनतस्मृनत पुराणोक्त सनातन धम सके अलभमानी ।

मध्य ह दिंसुथान के एक पथिं का नाम।

आय समाजी।

३२.

मद्रास की ओर की एक अस्पृश्ूय जानत ।

३३.

बाबर के वशिं की।

३४.

३५.

३६.

३७.

३८.

३९. देविाय।

४०. अश्व।

हृष्टपुष्ट ।

४१. गजवर ।

४२. सघिं।

४३.

४४. 'छिप्रकाश' िि ा कवव द्वारा रचित छिसिा के कायकसिा का वणनस।

४५.

अबिंर (आमेर) का राजपूत राजा (ई.स. १६६९ से१७४३)। मुगिों का सेनापनत ोकर भी य गुप्त रूप

४६. से बाजीराव के वश में था।

बाजीराव प्रथम तथा छिपनत शा ू म ाराज के गुरु। (खि. १६४९ से १७३८) ये स्वामी सातारा के समीप

४७. घावडशी में वास करते ेथे।

कान् ोजी आग्रिं ेकी पत्नी। तेर वी िंतथा िौद र्विं सदी में 'इनक्क्वक्जशन' नामक खिस्ती धम सशासन

४८. सस्थ्िा ने रोमन कैथोलिक पथिं ववश्वास न करनेवािो िोगों की खोज की तथा उन् ें भयकिंर यातना देनेका

पर

काम ब ुत हदनों तक जारी

रखा। परधमी अपराचधयों को क्जदिंा जिाया जाता।

आध्रिं के िोगों के साम्राज्य की स्थापना करनेविाा सुप्रलसद्ध शककता सशालिवा न ई.स. १३० से १५८

तक इसनेराज ककया। 'रक्षणी ध्वजाच्या ह्याि। शालिवा नाने सिाि। उडववीि शकिीि शकिे ेसमरर

त्या क्षणा ।' सावरकर द्वारा रचित इस ध्वजगीत में इसी शालिवा न को गौरवाक्न्वत ककया गया ै। स्वामी

रामकृष्ण परम िंस ।

४९. ककोट नामक राजवशिं का कश्मीर का एक प्रलसद्ध ह दिंू ूराजा।

इसकी माता का नाम जविाा तथा इसका सत्यकाम था। इसके जन्म के साथ इसके वपताजी का ननधन

५०.

५१.

५२.

ो गया। इसकी माता को अपने मृतृ पनत का गिो आहद ज्ञात न िींथा। इसलिए य अपनी माता के व

स्वय िंके नामों के साथ प िाने ेजानिेगा।

५३. म ◌ादजी लशदिें पाहटि बुवा। इनकी माताजी राजपूत थी।िं सत्यवती अथात्स ◌्मत्स्यगधिंा। इसके शरीर से

५४. सागर की मछलियों की दुगुंधं आती थी। पराशर ऋवष ने दुगुंधं को दूरू करके उसका शरीर सुगचिंधत बना हदया। इस

उसके शरीर की सुवास एक योजन (िार कोस)

तक फैि जाती थी। 'बाग योजनागधिंा त्या वनदेव पराशरी' (सावरकर कृत 'कमिा', समग्र खडिं ७)।

चिाचिागिंदा नामक मखणपुर के राजा की कन्या सेउत्पन्न अजुनस का पिु। इसी ने पाडिंवों के अश्वमेध का

घोडा रोककर अजुनस से युद्ध ककया तथा अजुनस का वध ककया, परिंतु पातिा से सजीिवनी मखण प्राप्त

५५. करके अजुनस को पुनः जीववत ककया। ह डडबिंा सेउत्पन्न भीम का पिु। म ◌ाभारत के सग्रिंाम में पाडिंवों के

पक्ष में युद्ध करते ◌ेसमय इसने परािम ककए। अतिंतः य कण सद्वारा मारा गया। कृष्ण द्वैपायन व्यास को दासी

सेप्राप्त पिु। य परम नीनतमान तथा ननस्पृ ◌ृ था। इनके द्वारा

५६. धृतृराष्ट्र को हदया ◌ुआ उपदेश 'ववदुरुनीनत' के रूप में म ◌ाभारत के उद्योगपव सके नौवें अध्याय में हदया म ◌ान् ◌ुया ◌ै। माडिंव्य ऋवष के समान अरण्य में वपशिा बनकर य सौ वषों तक भटकता र ◌ा। तत्पश्िात् ◌्

उसकी मृतूयु ◌ुई।

वीरशैव लिगिंायत धम सका सस्थिापक (ई.स. ११६०)। इसकी ब न का वववा म ◌ादेव भट्ट नामक तिुगु

५७. ब्राह्मण के पिु से ◌ुआ। ववजय राजा की पत्नी इसकी ब न थी, इसी कारण इसे ◌ेप्रधानपद प्राप्त ◌ुआ

था। बसव पथिं में जानतभेद न ◌िीं ◌ै।

५८.

५९. 'िपिांरिा' वैष्णव मत का अनुयायी। शकिंरािाय सने ववववाद में इसपर ववजय प्राप्त की

६०. कबीर का समकािीन, िमकसार जानत का एक कृष्णभक्त सतिं।

६१. तलमि कवव (खि. १०० से१३० तक)।

६२. ह दिंसुथान के इनत ◌ास कािा में अदिंमान में पूव समें गए ◌ुए भारतीय मिू के ननवालसयों में सुधार करने में असफि ◌ोनेके पश्िात् ◌्स्वय िंवन्य बन गए ◌ोंगेतथा नए रक्तसबिंधिं बनाना असभिंव ◌ो जानेपर उन वन्य िोगों में ◌ी ििुप्त ◌ो गए ◌ोंगे ◌ेअथवा नष्ट ◌ो िुके ◌ोंगे।◌े ('माझी जन्मिैप', समग्र खडिं २) अदिंमान में 'अरा'स नामक एक जानत ◌ै। उन िोगों का िे रा, नाक-नक्श आहद पजिंात्रबयों से लमिता ◌ै।' अरा'स - इस नाम से आय सनाम की प्रतीनत ◌ोती ◌ै। ('राष्ट्र मीमासिंा', ग.दा., सावरकृत)।

६३. बगिंाि कै ढाका नगर में र नेविाा कट्टर ब्राह्मण युवक, अत्यचधक ह दिं ूधमालसभमानी। व ाँके मुसिमान नवाब की कन्या इससे प्रेम करनिेगी। मुसिमान नवाब ने मुसिमान बनाने ेतु इसे े जबरदस्ती कारावास में डिा हदया तथा इसका लशरच्छेद करने की आज्ञा भी दी। परिंतु व कन्या इस युवक सेअत्यचधक प्रेम करती थी। उसके स्थान पर व स्वय िंअपनी जान देनेके लिए तैयार ो गई। इस प्रेम के प्रभाव से उस युवक सेउस कन्या सेववव‍ा करने की बात मान िी गई। परिंतु सनातनी ह दिं ू समाज ने उस कन्या को ह दिं ूबना िनेकी बात अस्वीकार कर दी। तब उसनेजगन्नाथपुरी जाकर ईश्वर को साक्षी रखकर ह दिं ूपद्धनत से ववव‍ा करने का ननशि्य ककया। परिंतु व ाँके महिंदर के सनातनी भक्तों को य भ्ष्टिाार स न करने की शक्त न िींथी। उन् ोंनेउसे ेमारपीट कर व ाँसे भगा हदया। इस कारण ह दिं ूधम समें र ने की उनकी उत्कट इच्छा ोते े ुए भी समाज के द्वारा दूरू ककए जाने के कारण िोचधत ोकर व एक भ्ष्ट व कट्टर मुसिमान बन गया। इसी ने आगे िि‍ेकर जारों महिंदरों को भ्ष्ट ककया तथा अनेक ह दिंओु िंको मुसिमान बनाया। बगिंाि मैं मुसिमानों की सख्ंयाि में वृद्ॅचध करने ेतु य ी 'किाा प ाड' एक म त्त्वपूण सकारण बना।

६४. इंगिनिडैं में यॉकस व िॅकेस्टर वशिं में ुए युद्ध। (खख. १४५५) ध्वजचिह्न गिुाब था, इसलिए इन युद्धों को 'Wars of Roses' क ा जाता ै।

वैद्यशास् ्विवषय का प्रािीन ाििोय।स

६५. ई.स. पाँचविें शतक में लिखेगए एक वैद्यक ववषयक ग्रथिं तथा उसका कता।स २३०० वष सपूव सका प्रलसद्ध खगिो शास्ज्ञि। इसी के आय सलसद्धातिं के अनुसार पृथ्ूवी ी सूय सकी

६६.

६७.

पररिमा

करती ै, य स्पष्ट ोता ै। ६८. ववम सभा का िओवाँ ँपडिंडत रत्न। य एक बडा लसद्धाक्न्त ज्योनतषी था। इसने ज्योनतष ववषय पर तीन ग्रथिों की रिना की ै।

६९. 'बौद्धिरररि' का रिनयता, कवव तथा प्रथम सस्ंकृत नाट्य रिनाकार ।

७०. 'गीत गोववदिं' इस श्रृगिंाररक तथा भक्क्तपरक काव्य का रिनाकार ।

७१. शा ज ाँ ँके अधीनस्थ ख्यातनाम कवव। 'गगिंा ि री' का कता।स इसनेशा ज ाँ की राजकन्या िवगिीं से ववव‍ा ककया था।

फारसी म ाकवव

७२.

७३. फ्ांसि में प्रस्थावपत एक पथिं के अनुयायी। द शतवादी िानिंतकारकों को जॅकोत्रबन ी क ा जाता ै।

७४. Union of three persons (Father, son and Holy Spirit.) in one god hand. 'खिस्त धम सके
देवलमनयाकर नाम'।

७५. पातिा के असुर ववशेष। ये आयों के शिु थे।

दस्यु। आय सववरोधी िोग। आयों की प्रिाीन जानतयाँ।

७६.

आय समाज के सस्थिापक । 'सत्याथ सप्रकाश' के रिनयता।

७७.

म ानुभाव पथिं का सस्थिापक। गोववदिं प्र] का लशष्य। 'ििीारिर' नामक म ानुभावीय ग्रथिं का नायक।

७८. ब्राह्म समाज के सस्थिापक।

'तत्त्वमलस' अद्वैत वेदातिं तत्त्वज्ञान (ब्रह्म) तुम ी ो। ह दिंधूम सको स्वीकार करनेविाी स्वामी ववेकोनदिं की

७९.

लशष्या। मागरेसट इ. नोबि मिू नाम की अग्रिंज

८०. स्त्रीि।

ह दिी स्वराज्य के आदिंोिनि में िोकमान्य नतिक के साथ भाग िेनेविाी अग्रिंज स्त्रीि सन् ्१९१७ में

८१.

किकत्ता में आयोक्जत काग्रिंस अचधवेशन के अध्यक्ष पद का स मान भी इन् ें प्राप्त ुआ था। चथयोसॉफी

८२. उनका वप्रय ववषय था। इस ववषय पर उन् ोंने वाङ्मय ननलमनसत भी की ै। सन् ्१९३३ में अडयार में

८३. इनका ननधन ुआ।

ईसा की जन्मभूलम यरूसिेम को मुसिमानों सेपुनः प्राप्त करने ेतु नयार वें शतक के अतिं में यूरोप के
ईसाइयों ने एक सगिंनि बनाया तथा धमयुसद्ध ककए। इन् ें 'िूसेडस' क ते े ैं।
रोम कैथोलिक व प्रॉटेस्टेट पथिं के ईसाई िोग। आमेननयन ईसाइयों को तुकों ने ब ुत पीडा दी। इस
कारण सन् ्१९१४ में यूरोप के राष्ट्रों से तुकसस्थान ने युद्ध ककया, तब आमेननयन तुकों के ववरोध में
ईसाई राष्ट्रों के साथ ो गए।

८४.

८५.

'ह दिंतुव'-ववनायक दामोदर सावरकर

'हदिंतुव

'ह दिंतुव' 'एक ऐसा शब्द ै, जो सपूिंण समानवजानत के लिए आज भी अपूव सस्फूनत सतथा ६ ैतन्य का स्रोत बना ुआ ै। इस शब्द से सबिंद्ध ववविार, म ान् ्ध्येय, रीनत- ररवाज तथा भावनाएँ ँककतनी ववववध तथा श्रेष्ट ै। 'ह दिंतुव' कोई सामान्य शब्द न ीं ै। य एक परिंपरा ै। एक इनत ास ै। य इनत ास केवि धालमकस अथवा आध्याक्त्मक इनत ास न ीं ै। अनेक बार 'ह दिंतुव' शब्द को उसी के समान ककसी अन्य शब्द के समतुल्य मानकर बडी भिू की जाती ै। वैसेय इनत ास मिा न ीं ै, वरन् ्एक सवसग्रिं ी इनत ास ै। 'ह दिं ूधम'स, य शब्द 'ह दिंतुव' से ी उपजा उसी का एक रूप ै, उसी का एक अिंश ै। 'ह दिंतुव' शब्द में एक राष्ट्र, ह दिंजूानत के अक्स्तत्व तथा परिाम के सक्म्मलित ोनेका बोध ोता ै। इसीलिए 'ह दिंतुव' शब्द का ननक्श्ति आशय ज्ञात करने के लिए प िे म िोगों को य समझना आवश्यक ै कक 'ह दिं' ू ककसेक ते े ैं। इस शब्द ने िाखों िोगों के मानस को ककस प्रकार प्रभाववत ककया ै तथा समाज के उत्तमोत्तम पुरुषों ने, शूर तथा सा सी वीरों ने इसी नाम के लिए अपनी भक्क्तपूण सननष्ट्ा क्यों अवपतस की, इसका र स्य ज्ञात करना भी आवश्यक ै। प्रखर राष्ट्रचिंतिंक एव िंध्येयननष्ट् िािंनिंतधमास वीर सावरकर की िेखेनी से ननःसृत 'ह दिंतुव' को सपूिंणतसा में पररभावषत करती अत्यतिं चिंतिंनपरक एव िंपिनीय पुस्तक।

वव दा सावरकर

जन्म : 28 मई, 1883 को म ाराष्ट्र के नालसक क्जिेके ग्राम भगूर में।

लशक्षा : प्रारिंलभक लशक्षा

गाँव से प्राप्त करने के बाद वष स1905 में नालसक से बी.ए. 19 जून, 1906 को इिंग्निडैं के लिए रवाना। इिंडिया ाउस, ििंदन में र ते ुए अनेक िेख व कववताएँ लिखी।िं 1907 में' 1857 का स्वातत्र्यिं समर' ग्रथिं लिखना शुरू ककया। प्रथम भारतीय नागररक, क्जन पर ेग के अतिंरराष्ट्रीय न्यायािय में मुकदमा ििाया गया। प्रथम िािंनिंतकारी, क्जन् ें त्रब्रहटश सरकार द्वारा दो बार आजन्म कारावास की सजा सुनाई गई। प्रथम साह त्यकार, क्जन् ोंनेिेखनी और कागज सेवचिंति ोनेपर भी अडिंमान जेि की दीवारों पर कीिों, काँटों और य ाँतक कक नाखूनों से ववपिु साह त्य का सृजन ककया और ऐसी स स्रों पक्क्तियों को वषों तक किंस्थ करवाकर अपने स बिंदियों द्वारा देशवालसयों तक प ुँ ुँिाया। प्रथम भारतीय िेखक, क्जनकी पुस्तकें - मुहद्रत व प्रकालशत ोनेसे पूबडेसाइहीत्यकेदरे सीरकोरोंअडिंमान किीं िें क्जतने बडिानिंतकारी थे, उतने रत्नाचगरर की कािा किोरी में र कर 'कमिा', 'गोमातिंक' एव िं'ववर ोच्वास', 'ह दिंतुव', 'ह दिं ूपदपादशा ी', 'उः श्राप', 'उत्तरकिया', 'सन्यिस्त खड्ग' आहद ग्रथिं लिखे। म ाप्रयाण: 26 फरवरी, 1966 को।